व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण आख्या

जनपद—पौड़ी गढ़वाल

वर्ष 1989–90

NIEPA DC
D07828

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

54223
370.113
UTT-V

सर्वेक्षण–मण्डल

(1) मदन सिंह भण्डारी
जिला विद्यालय निरीक्षक,
व्यावसायिक सर्वेक्षण अधिकारी
पौड़ी (गढ़वाल)

(2) एन॰ डी॰ कोटनाला
प्रधानाचार्य
राजकीय इण्टर कालेज, दुगड्डा (पौड़ी)

(3) आई॰ वी॰ बहुगुणा
सहायक अध्यापक
राज॰ उ॰ मा॰ वि॰, मोहन चट्टी
पौड़ी (गढ़वाल)

(4) डी॰ एस॰ रावत
एन॰ डी॰ एस॰ आई॰
कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक
पौड़ी (गढ़वाल)

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-7828
Date 27-10-93

प्राग्वाक्

राष्ट्रीय स्तर पर समय-समय पर गठित विभिन्न आयोगों तथा समितियों ने व्यावसायिक शिक्षा को प्लस दो स्तर पर लागू करने के लिए अपनी अनुशंसायें की हैं। सभी अनुशंसाओं का सार तत्व यह रहा है कि शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाय जिसके फलस्वरूप प्लस दो स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा का शुभारम्भ किया गया। अब व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्र/छात्राओं को मात्र व्यवसाय दिलाने का न होकर उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रेरणा देना तथा व्यवसाय विशेष में न्यूनतम क्षमता विकसित करना है जिससे यदि किन्हीं कारणोंवश उच्च शिक्षा न प्राप्त कर सकें तो वे अपनी व्यावसायिक शिक्षा से अभिप्रेरित होकर स्वरोजगार कर सकें और अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इतना ही नहीं व्यवस्थित और सुनियोजित व्यावसायिक शिक्षा का आयोजन इसलिए भी जरूरी समझा गया जिससे व्यक्तियों में रोजगार पाने की क्षमता बढ़े, कुशल कर्मचारियों की मांग और आपूर्ति का सन्तुलन दूर हो सके।

उपर्युक्त तथ्यों को दृष्टि में रखते हुये प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय विशिष्टताओं के आधार पर प्लस दो स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत विविध शिल्पों तथा ट्रेड्स के शिक्षा की व्यवस्था करना समीचीन होगा। अतः छात्रों को अपनी रुचियों आकांक्षाओं तथा क्षमताओं के अनुसार उपयुक्त शिल्प अथवा ट्रेड का चयन करने हेतु अवसर प्रदान करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के जनपदों में प्रचलित अथवा सम्भावित शिल्पों के संबंध में सर्वेक्षण द्वारा सूचनाओं का संकलन किया गया है। विभिन्न क्षेत्रों में स्थित जनपद के स्थानीय शिल्पों तथा ट्रेड्स के सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं को संकलित कर इस प्रकाशन में प्रस्तुत किया गया है।

आशा है प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के पजनदों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की रुचियों, आकांक्षाओं तथा स्थानीय स्तर पर सुलभ संसाधनों के अनुसार विभिन्न शिल्पों एवं ट्रेड्स के शिक्षण की व्यवस्था करने में यह प्रकाशन सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

लखनऊ दिनांक 21 जुलाई 1992

हरि प्रसाद पाण्डेय
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश
लखनऊ।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	जनपद पौड़ी गढ़वाल एक दृष्टि में	1—6
2.	राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा	7—10
3.	आँकड़े एकत्र करने की विधि	11—12
4.	पौड़ी गढ़वाल-प्रस्तावना	13—15
5.	जनसंख्या और क्षेत्र	16—23
6	कृषि एवं जलवायु	24—34
7.	पशुपालन	35—37
8.	वानिकी	38—39
9.	खनिज	40 —
10.	उद्योग धन्धे	41—54
11.	शिक्षा	55—60
12.	पौड़ी जनपद में माध्यमिक विद्यालयों की सूची	61—68
13:	जनपद में प्राविधिक शिक्षण संस्थान औद्योगिक/ शिक्षण संस्थान/शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान तथा उनमें भर्ती	69—73
14.	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य	74—78
15.	विद्युत व्यवस्था	79—81
16.	परिवहन एवं जन संचार	82—86
17	सामाजिक कल्याण कार्यक्रम	87—91
18.	वित्तीय संस्थान	92—94
19.	रोजगार तथा श्रम	95—97
20.	आँकड़ों का विश्लेषण	98—103
21.	व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण का निष्कर्ष	— 104

उत्तर प्रदेश में जनपद गढ़वाल की स्थिति

जनपद पौड़ी गढ़वाल

1. जनपद पौड़ी गढ़वाल एक दृष्टि में :

जनपद पौड़ी गढ़वाल की स्थापना सन् 1815 में हुई।

पौड़ी को तीन तहसीलों में बांटा गया है : –

(1) पौड़ी

(2) कोटद्वार

(3) लैन्सडाउन

पौड़ी जनपद को दो उप तहसीलों में भी बांटा गया है :—

(1) थलीसैंण

(2) धूमाकोट

पौड़ी जनपद को 15 विकास खण्डों में विभाजित किया गया है :—

(1) पौड़ी
(2) कोट
(3) खिर्सू
(4) पावौ
(5) कल्जीखाल
(6) थलीसैंण
(7) दुगड्डा
(8) यमकेश्वर
(9) ढाँगू (द्वारीखाल)
(10) लैंसडाउन
(11) ऐकेश्वर (चौंदकोट)
(12) पोखड़ा
(13) रिखणीखाल
(14) वीरौंखाल
(15) नैनीडांडा

कुल क्षेत्रफल—5410 वर्ग किमी०

जनसंख्या—नगरीय—62669

ग्रामीण—575208

कुल पुरुष—6378777

कुल स्त्रियां—332821

साक्षरता	साक्षर व्यक्ति			साक्षरता प्रतिशत		
सन्	पुरुष	स्त्री	योग	पुरुष	स्त्री	कुल
1961	96681	15866	112547	43·38	6·12	23·34%
1971	128749	84222	176971	49·32	16·52	32·00%
1981	171630	90285	261915	56·26	27·13	41·06%

2. जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण :

सन्	कृषक	कृषि श्रमिक	पशुपालन जंगल लगाया वृक्षारोपण	खस खोदना	उद्योग पारिवार	उद्योग गैर पारिवार
1	2	3	4	5	6	7
1961	243746	1331	9110	66	5307	2267
1971	195878	3265	4074	70	1649	2081
1981	165037	1891	4027	36	2106	4381

निर्माण	कार्य व्यापार एव वाणिज्य	यातायात संग्रहण एवं संचार	अन्य	कुल कर्मकार	सीमान्त कर्मकार	कुल
8	9	10	11	12	13	14
2701	2379	2136	14893	283936	—	283934
1413	3981	1894	36788	251093	—	251093
9098	अप्राप्त	अप्राप्त	61957	230991	46236	277227

3. प्राविधिक शिक्षण संस्थायें :

(1) पॉलिटेक्निक 02

(2) आई० टी० आई०	07
(3) इंजिनियरिंग	00

4. शिक्षण संस्थायें :

(1) विश्वविद्यालय	01
(2) डिग्री कालेज	05
(3) संस्कृत महाविद्यालय	06
(4) दीक्षा विद्यालय	02
(5) हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट	203
(6) मेडिकल एवं आयुर्वेदिक कालेज	—
(7) जूनियर बेसिक स्कूल	1300
(8) सीनियर बेसिक स्कूल	234

5. सड़कें :

(1) मुख्य जिला सड़कें	117 किमी०
(2) राष्ट्रीय राजमार्ग	—
(3) प्रादेशिक राजमार्ग	310
(4) अन्य जिला एवं ग्रामीण	1463 कि० मी०

6. स्थानीय निकायों के अर्न्तगत :

(1) जिला परिषद	01
(2) महापालिका, नगरपालिका नगर क्षेत्र समिति/केन्द्र	32

7. अन्य विभागों के अर्न्तगत :

(1) सिंचाई	
(2) गन्ना	
(3) वन	323 कि० मी०
(4) डी० जी० वी० आर०	54 कि० मी०

योग = 377

कुल सड़कों की लम्बाई 2300 कि० मी०

8. संचार सेवायें :

(1) डाकघर	42
(2) तारघर	59
(3) टेलीफोन केन्द्र	12

9. विद्युत—1623 ग्रामों में विद्युतीकरण
1614 ग्रामों में विद्युतीकरण नहीं हो पाया

10. स्वास्थ्य सेवायें :

(1) चिकित्सालय	01
(2) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	32
(3) परिवार कल्याण एवं मातृ शिशु केन्द्र	226
(4) अन्य सेवायें एलोपैथिक, औषधालय	96
(अ) आयुर्वेदिक चिकित्सालय	30
(ब) होमोपैथिक चिकित्सालय	06

11. बैंकिंग सेवायें :

(1) राष्ट्रीयकृत बैंक शाखायें	56
(2) सहकारी बैंक शाखायें	17
(3) अलकनन्दा ग्रामीण क्षेत्रीय बैंक	19
(4) भूमि विकास बैंक	01

12. जल आपूर्ति :

(1) नहरें	4259
(2) रहट	—
(3) राजकीय नलकूप	479
(4) पम्पिंग सेट	37
(5) निजी नलकूप	—
(6) पिनट बोरिंग	—

13. भूमि उपयोग :

1) सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र	5440 किमी

(2) वन क्षेत्र	450186 हैक्टियर
(3) परती भूमि	15103
(4) कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लायी गयी भूमि	16503 हैक्टियर
(5) कृषि योग्य बंजर भूमि	36207
(6) चारागाह	41487
(7) उद्योगों वृक्षों का क्षेत्रफल	5211
(8) शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	98819
(9) कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	742607
(10) एक बार से बोया गया क्षेत्रफल	71242
(11) सकल बोया गया क्षेत्रफल	170061
(12) शुद्ध सिंचित क्षेत्रफव	9081
(13) सकल सिंचित क्षेत्रफल	16837

14. **फसलें :**

(1) गेहूँ	51163
(2) धान	33788
(3) दलहन	1607
(4) गन्ना	354
(5) आलू	5007
(6) मुंडवा	53858
(7) तिलहन	272
(8) मक्का	2637
(9) जौ	9268
(10) सांवा	29837
(11) सोयाबीन	54
(12) तम्बाकू	58

15. **पशुपालन**

(1) गाय	174345	
		=682057
(2) भैंस	72644	
(3) भेड़	48820	
(4) सुअर	497	
(5) अन्य	6399	

(6) बकरी	179080
(7) कुक्कुर पालन	39607

16. पशु सम्बन्धी सुविधायें :

(1) पशु चिकित्सालय	32
(2) कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	38
(3) पशु सेवा केन्द्र	704
(4) भेड़ विकास केन्द्र	8
(5) नैसर्गिक अभिजनन केन्द्र	37

17. वन सम्पदा :

(1) कुल वन क्षेत्र	455186 हैक्टेयर
(2) लीसा	278827250 क्वींटल
(3) चीड़	4960909 घन मी०
(4) जड़ी बूटी	1117 क्वींटल
(5) सुरई	6·007
(6) देवदार	17·107
(7) फर	284·382

मानचित्र

जिला पौड़ी गढ़वाल

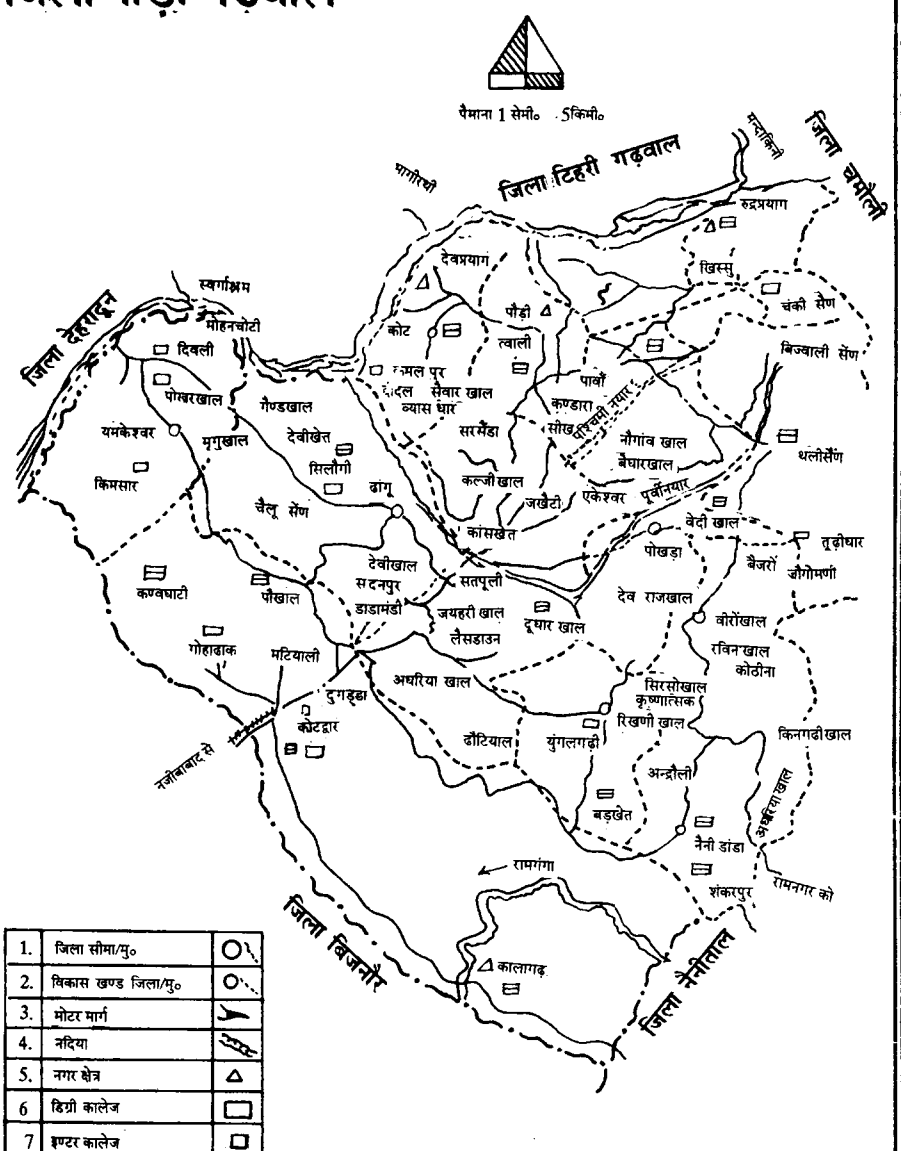

राष्ट्रीय व्यवसायिक शिक्षा

किसी भी देश या जाति का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा के माध्यम से बालक बालिकाओं के मानवीय गुणों के विकास के साथ-साथ जीवन यापन की क्षमता व स्वरोजगार की भावना उत्पन्न की जा सकती है। वर्तमान परिस्थितियों में बेरोजगारी की जटिल समस्या के समाधान हेतु व्यवसायिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता प्रतीत होती है। व्यवसायिक शिक्षा की कल्पना करने के लिये इसके साथ ही ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को स्पष्ट करना भी उपयोगी होगी।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि :

प्राचीनकाल से ही हमारे देश में वर्ग व्यवस्था के अर्न्तगत जातिगत व्यवसायिक शिक्षा का प्रचलन था जिसकी प्राप्ति बालक बालिकाओं ने अपने घर में ही अनौपचारिक रूप से कर लिया करते थे, किन्तु औपचारिक रूप में इसका श्रीगणेश 1854 में बुडान डिस्पैच में हुआ था। इसके पश्चात् 1882 में हण्टर आयोग द्वारा इसे पाठ्यक्रम में रखने का सुझाव दिया गया था। तत्पश्चात् 1937 में बुड एवं एबर रिपोर्ट तथा सन् 1944 में सार्जेण्ट रिपोर्ट के अर्न्तगत व्यवसायिक शिक्षा पर बल दिया गया। किन्तु यह सब फायलों तक ही सीमित रह गया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् व्यवसायिक शिक्षा का व्यवहारिक रूप देने का प्रयास किया गया, फलस्वरूप इसी क्रम में सन् 1948 का राधाकृष्णन आयोग 1952 का मुआफियर आयोग 1964-66 का कोठारी आयोग द्वारा व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में ठोस कार्यवाही का प्रयास किया गया किन्तु व्यवसायिक शिक्षा में कदम इस ओर सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अर्न्तगत रखा गया। जिसके आधार पर कोठारी आयोग की सिफारिसों को स्वीकार किया गया तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को बनाने का कार्य सौंपा गया।

व्यवसायिक शिक्षा की आवश्यकता :

देश के आर्थिक विकास की गति को गतिशीलता बनाने उत्पादन शीलता में वृद्धि करने तकनीकी दृष्टिकोण से सक्षम जनशील का निर्माण करने तथा स्वरोजगार को प्रोत्साहन देने हेतु व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी आवश्यक है इससे छात्र-छात्राओं में स्वरोजगार के प्रति सम्मान बढ़ेगा तथा शारीरिक श्रम के प्रतिनिष्ठा उत्पन्न होगी। आज

के परिपेक्ष में, यह और भी आवश्यक प्रतीत होती है क्योंकि सामान्य शिक्षा शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में अभिवृद्धि कर रही है जिस प्रकार देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को नियोजित करने के लिये परिवार नियोजन आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षित बेरोजगारों की दिन प्रतिदिन संख्या नियंत्रित करने के लिये शिक्षा के क्षेत्र व्यवसायिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है ।

व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य :

इस शिक्षा का उद्देश्य छात्र को नौकरी के लिये तैयार करना न होकर उसे स्वरोजगार हेतु सक्षम बनाकर अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाना है और साथ ही साथ रोजगार सृजन की क्षमता का विकसित करना है । वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा का लक्ष्य छात्र में ऐसे मूल्यों को विकसित करना है, जिसके आधार पर वह धोखाधड़ी से गलत लाभ अर्जन करने की अपेक्षा सही लाभ अर्जन करने की क्षमता रखे तथा व्यवसाय को ध्येय माने । तथा वस्तुओं के निर्माण में लागत को कम करने की दिशा में प्रयत्नशील रहे ।

व्यावसायिक शिक्षा का राष्ट्रीय लक्ष्य :

सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्य के अनुसार वर्ष 1990 तक 10 प्रतिशत तथा 1995 तक 15 प्रतिशत छात्र-छात्राओं को व्यावसायिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना है तथा (2) कक्षा से उत्तीर्ण करने के पश्चात इण्टरमीडिएट स्तर पर) शिक्षा पूर्ण करने पर उन्हें रोजगार की प्रेरणा मिल सके या उन्हें अपनी योग्यता एवं दक्षतानुसार नौकरी के अवसर सुलभ हो सके ।

व्यावसायिक शिक्षा का स्वरूप :

वर्तमान समय में चारों ही तरफ यह अनुभव किया जा रहा है कि जो व्यक्ति अधिक पढ़ लिख गये हैं उनकी श्रम के प्रति निष्ठा घटती जा रही है । तथा छात्र-छात्राओं की पढ़ाई के प्रति अधिक रूचि बढ़ती जा रही है जिसके कारण आज बहुत बड़ी जनशक्ति श्रम के प्रति निराश होती जा रहे है जिसके कारण वे लोग अपने को निराश एवं हताश महसूस कर रही है जिसके कारण यह समस्या राष्ट्र के परिपेक्ष्य में अत्यन्त जटिल होती जा रही है जिससे यह एक राष्ट्रीय स्तर पर चिन्ता का विषय बन गयी है ।

इस विकट समस्या के समाधान के लिये छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा के प्रति ले जाया जा रहा है जिससे छात्र अपने व्यवसाय के प्रति उदासीन न होकर लाभान्वित हो । और अपने पैरों पर खड़े हो सके । इस समस्या के समाधान हेतु उ०प्र० सरकार ने 2 (हाईस्कूल शिक्षा के बाद इण्टरमीडिएट स्तर) पर 1988 से केन्द्र पूर्व पुरोनिधानित योजनान्तर्गत 31 ट्रेडों में व्यावसायिक शिक्षा का श्रीगणेश किया गया ये ट्रेड निम्नलिखित हैं :

(क) साहित्यिक वर्ग (व्यावसायिक शिक्षा के ट्रेड) :

(1) खाद्य संरक्षण
(2) पाक शाला
(3) परिधान रचना एवं सज्जा
(4) धुलाई तथा रंगाई
(5) बैंकिंग तथा कन्फेक्शनरी
(6) टैक्सटाइल डिजाइन
(7) बुनाई तकनीकी
(8) नर्सरी शिक्षा प्रशिक्षण एवं शिशु
(9) पुस्तकालय विज्ञान

(ख) वैज्ञानिक वर्ग (व्यावसायिक शिक्षा ट्रेड) :

(10) बुनियादी स्वास्थ्य कर्मिक
(11) फोटोग्राफी
(12) रेडियो एवं टेलीविजन तकनीकी
(13) आटोमोबाइल्स

(ग) वाणिज्य वर्ग (व्यावसायिक शिक्षा ट्रेड) :

(14) एकाउण्टेसी एवं अंकेक्षण
(15) बैंकिंग
(16) आशुलिपि एवं टंकण
(17) विपणन एवं विक्रय कला
(18) सचिवीय पद्धति
(19) सहकारिता
(20) टंकण
(21) बीमा

(घ) रचानात्मक वर्ग (व्यावसायिक शिक्षा ट्रेड) :

(22) मुद्रण
(23) कुलाल

(ङ) कृषि वर्ग (व्यावसायिक शिक्षा ट्रेड) :

(24) मधुमक्खी पालन
(25) डेरी प्रौद्योगिकी
(26) रेशम कीट पालन

(27) फल संरक्षण प्रौद्योगिकी
(28) बीजोत्पादन प्रौद्योगिकी
(29) फल सुरक्षा प्रौद्योगिकी
(30) पौधशाला
(31) भूमि संरक्षण

उपरोक्त सभी व्यवसायिक शिक्षा ट्रेडों के अर्न्तगत राज्य में 440 विद्यालयों को चुना गया जहां पर कि व्यतसायिक शिक्षा ट्रेड चलाये जायेंगे, परन्तु केन्द्र पुरोविधनित व्यवसायिक शिक्षा के योजनान्तर्गत प्रथम चरण में 200 विद्यालय लिये गये हैं, जिनमें कि वर्तमान समय में 9144 छात्र छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

उपर्युक्त सभी विद्यालयों में ट्रेड आरम्भ करने का आधार स्थानीय आवश्यकताओं और स्थानीय पृष्ठ भूमि को मध्यनजर रखकर ही निर्णय लेना एवं ट्रेडों का चयन किया जाना अनिवार्य हो गया है, जिसके लिये ये जनपदों के प्रथम चरण में स्थानीय सर्वेक्षण कराया जा रहा है यह सर्वेक्षण उस जनपद की तमाम सभी भौगोलिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर प्रकाश डालेगा जिन पर जनपद में प्रारम्भ होने वाले ट्रेडों का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों को स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त हो सके। जनपदीय चयनित विद्यालयों में इस व्यवसायिक सर्वेक्षण के आधार पर ही नये एवं पुराने ट्रेडों को ही प्रशिक्षण देने का प्राविधान है।

आंकड़ें एकत्र करने की विधि

इस व्यावसायिक प्रवेक्षा सर्वेक्षण में विभागीय सहायक सर्वेक्षण अधिकारियों को विभिन्न प्रकार के प्रपत्रों को लेकर दूर-दूर तक ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाना जिससे ग्रामीण क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियों से मिलकर जानकारी प्राप्त की तथा प्रपत्र पूर्ण करावे, पौड़ौ जनपद की भौगोलिक पृष्ठ भूमि अत्यन्त विकट है। यहां पर सर्वेक्षण कार्य करने में काफी श्रम एवं धन का अपव्यय होता है। यह पर्वत प्रदेश होने के कारण अधिकतर भाग पहाड़ी एवं पठारी है। सभी स्थानों पर सड़कों का आभाव सड़कों के आभाव के कारण यहां के विकास की गति को रोक सी लगी हुयी लगती है और इसका विस्तार भी काफी है किसी-किसी स्थान पर जाने के लिये तो कई जनपदों से होकर वापिस अपने जनपद में आना पड़ता है।

आंकड़ों को एकत्रित करने के लिये जनपद के दुर्गम स्थानों से होकर जाना पड़ा जो कि काफी कठिन कार्य था फिर प्रपत्रों को पूर्ण किया गया। नगर के अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठानों के अनुभवी व्यक्तियों से सम्पर्क किया गया तथा नगर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सम्भावी व्यवसायों की जानकारी प्राप्त कर अनुमानों द्वारा विशेष उद्देश्य चुने गये तथा जनपदीय सर्वेक्षण आख्या में उनकी स्पष्ट चर्चा की गयी जनपद में भौगोलिक परिस्थितियों के भिन्नता के कारण तथा क्षेत्र की अधिकता के कारण सर्वे कार्य सहायक सर्वेक्षण अधिकारियों ने यह कार्य किया जिन्होंने तहसील एवं विकास खण्डों को आपस में बांटकर इस सर्वे कार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग दिया तथा सर्वे कार्य को पूर्ण किया तथा सर्वे कार्य की अधिकता तथा जनपद की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण समय काफी अधिक लगा।

सर्वप्रथम सर्वे कार्य का श्रीगणेश जिलाधिकारी पौड़ी से सहयोग प्राप्त कर जनपद स्तर के विभिन्न विभागों के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया। जिलाधिकारी ने सभी विभागों के विभागाध्यक्षों को आदेश कर दिया था कि वे इस सर्वे कार्य में सर्वे अधिकारी को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। जनपद के विभागों द्वारा उनके अधीन समस्त सम्बंन्धित जानकारियां प्राप्त की गयी। तथा विभिन्न शीर्षकों के अर्न्तगत विकसित उद्योगों की सारिणी बनाकर, स्तम्भ चार्ट बनाये गये, जिनको प्रस्ताव शीर्षक के अर्न्तगत दर्शायो गये। सहायक सर्वेक्षण अधिकारी ने स्वयं ही जनपद में स्थिति औद्योगिक इकाइयों से परिचय प्राप्त कर यथासम्भव जानकारियां प्राप्त की और अपने प्रपत्रों को पूर्ण कराया। कभी-कभी तो सहायक सर्वेक्षण अधिकारियों को निराशा भी हाथ लगी एक स्थान की जानकारी लेने के लिये कई बार उस स्थान के चक्कर काटने पड़े जिस स्थान

का सर्वेक्षण करना था। इस स्थिति से रैन्डम सैम्पलिंग करके ज्ञात किया गया कि जनपद में किस उद्योग की स्थिति सन्तोषजनक है और किस उद्योग की स्थिति असन्तोषजनक, इन विभिन्न उद्योगों की सूची से परमोडिव मैबड का प्रयोग कर कुछ विरोध यूनिटों का चुनाव रैन्डम सैम्पलिंग विधि द्वारा किया गया इस प्रकार इन व्यवसायिक सर्वेक्षण को स्टाटिफाइड सर्वेक्षण कहा जा सकता है।

इस सम्पूर्ण सर्वेक्षण कार्य को पूरा करने के लिये निर्धारित प्रपत्रों को आठ भागों में बटा था इन प्रपत्रों में पूछी गयी जानकारियों की पूर्ति करना कठिन था क्योंकि जनपद का क्षेत्र काफी गर्म तथा कष्टमय था फिर भी यथा-सम्भव आठों प्रपत्रों को पूर्ण किया गया।

सर्वेक्षण अधिकारियों ने अलग-अलग प्रपत्रों को ले जाकर प्रथम चक्र में प्रपत्र एक तथा दो भरे उसके पश्चात् अन्य प्रपत्र भरे और प्रपत्र में पूछी गयी वांछित सूचनाओं की भरा तथा वांछित फल प्राप्ति हेतु सम्भव चार्ट आदि बनाकर स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया। सहायक सर्वेक्षण अधिकारियों को सर्वे कार्य सम्पादन तथा प्रपत्रों को पूर्ण करने में अपनी तरफ से कोई प्रश्न आदि करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि जिन भी वांच्छित सूचनाओं की आवश्यकता थी वे सभी प्रपत्र में अंकित थी प्रपत्र में अंकित सूचनाओं को ही सर्वे के समय सहायक सर्वेक्षण अधिकारी द्वारा पूछा गया।

अत: उन्हीं सभी प्रपत्रों के आधार पर स्पष्ट किया गया कि जनपद में किस उद्योग की क्या स्थिति है जिसके आधार पर विद्यालयों में उचित ट्रेड (व्यावसायिक शिक्षा) आवंटित किये जा सके और उन्हें उद्योगों के अलावा जनपद के किस उद्योग करने के लिये कहां से कच्चा माल तथा निर्मित माल इत्यादि का क्या बाजार है। इन्हीं सभी आंकड़ों के लिये सहायक सर्वेक्षण अधिकारियों ने अपनी तरफ से यथासम्भव प्रयत्न किया जिससे यह व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण पूर्ण हो सके तथा जनपद के विद्यालयों में वहां की स्थिति के अनुसार ट्रेडों का चयन किया जाना सुनिश्चित तथा छात्र-छात्राओं को अपने व्यवसाय के प्रति जागरूक बनाया जा सके।

मानचित्र

जिला पौड़ी गढ़वाल

(पैदावार)

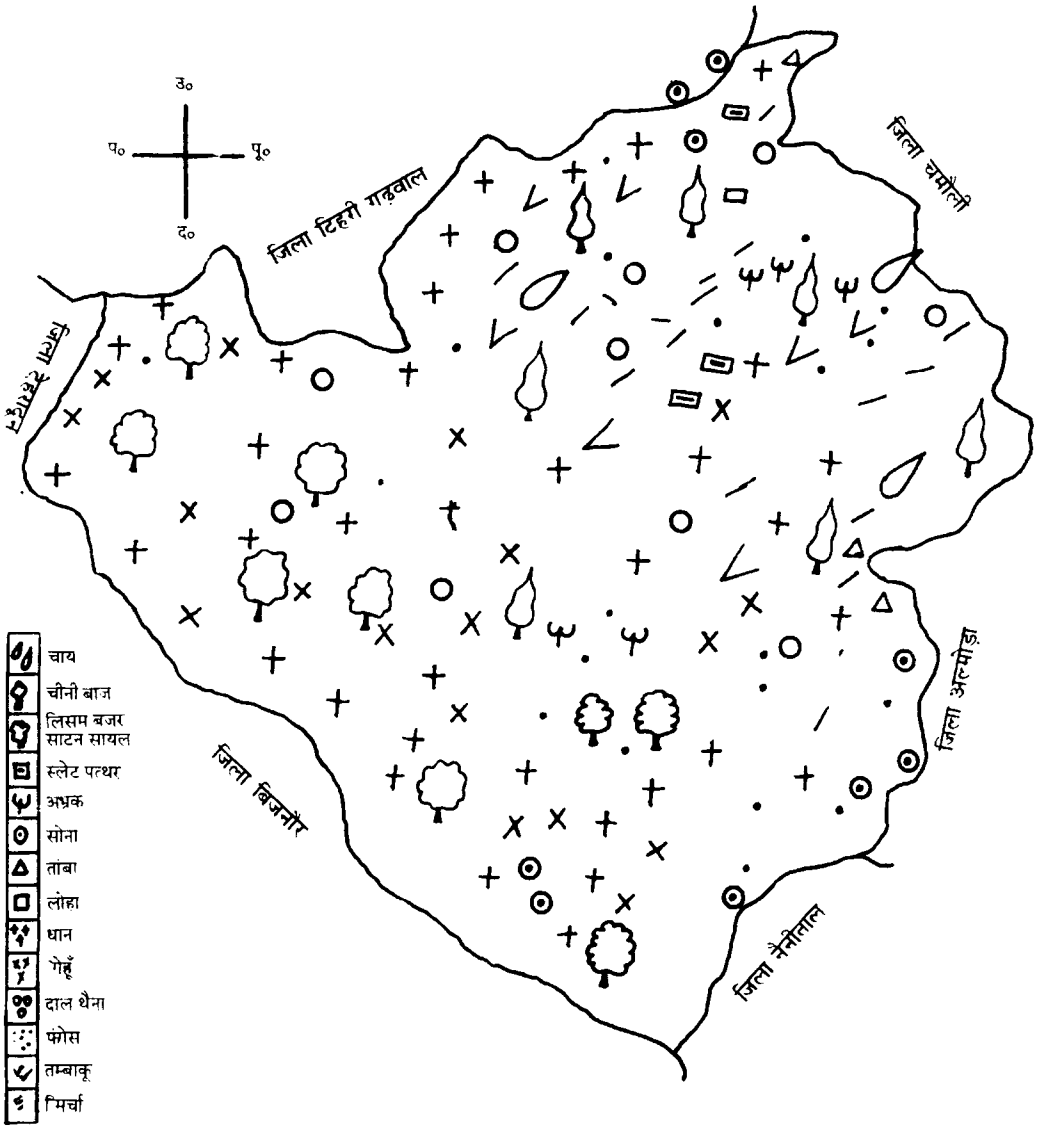

पौड़ी–गढ़वाल

प्रस्तावना

हिमालय पर्वत जिसको प्रदेश का नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का मस्तक होने का गौरव प्राप्त है जिसके आंचल में बसा पौड़ी गढ़वाल प्रदेश में पर्वतीय जनपदों में से एक है।

प्राचीन केदार खण्ड 4 मार्च सन् 1820 को देहरादून, टिहरी, और गढ़वाल तीन भागों में विभक्त हुआ। अलकनन्दा और मन्दाकनी के पश्चिम में प्रदेश पर गढ़वाल नरेश सुर्दशन शाह का अधिकार मान लिया गया और पूर्वी प्रदेश ब्रिटिश गढ़वाल के रूप में सन् 1960 तक जाना जाता था। फरवरी 1960 में इस जिले के उत्तरी भाग चमोली को पृथक जिले में परिणित कर दिया गया।

वर्तमान समय में गढ़वाल मण्डल का एक प्रमुख जनपद है यह गढ़वाल मण्डल के दक्षिण में 29, 20 और 30, 15 उत्तरी अक्षांश तथा 78, 10 और 79, 10 अक्षांश पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित गढ़वाल जनपद का क्षेत्रफल भारत के सर्वेयर जनरल के अनुसार 5440 किमी० है। जिसके उत्तर में चमोली, दक्षिण में जिला बिजनौर एबं नैनीताल और टिहरी गढ़वाल है। पूर्व में जिला अल्मोड़ा तथा पश्चिम में जिला सहारनपुर, देहरादून और टिहरी गढ़वाल है। भौगोलिक दृष्टि से यह जनपद उ० प्र० में आता है।

गढ़वाल के उत्तर में दूधातोली पर्वत तथा मध्य मदातों का डांडा है, जुजुडगढ़, खाटली, गडू, धधरीगढ़, रतनगढ़, लंगूरग, महाबगड़, आदि गढ़ों की भरमार इसी पर्वत श्रेणी पर है। अलकनन्दा इस जिले की सबसे छोटी नदी है जो कि देवप्रयाग से गंगा के नाम से पुकारी जाती है। नवालका, हयूल, मालन, नन्दाल आदि नदियां भी प्रमुख हैं।

जनपद पूर्व से पश्चिम तक 200 किमी० तथा उत्तर से दक्षिण तक 97 किमी० तक विस्तृत है।

भौगोलिक संरचना :

जनपद पौड़ी का अधिकांश भाग पर्वतीय है जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 5440 वर्ग किमी० है। श्रीनगर गढ़वाल में मैदानी भाग अलकनन्दा के कुछ तटवर्ती चारागाह एवं उप षर्वतीय मैदानी भागों को छोड़कर जनपद में समतल भूमि नहीं हैं। जनपद का सम्पूर्ण क्षेत्र विभिन्न पहाड़ों घाटियों द्वारा एक दूसरे से अलग है जिसकी ऊँचाई 1050 मी० से

2550 मी० तक है। भौगोलिक एवं प्राकृतिक संरचना के आधार पर जनपद को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. नयार नदी तथा दूधातोली पर्वतीय श्रेणी के मध्य भाग :

दूधातोली श्रेणी चकनक और बहुधा पत्थरों की बनीं हुई है इसके निकटवर्ती स्थानों पर कठोर एवं चूने के पत्थर आदि पावे जाते हैं।

जनपद अल्मोड़ा के सीमावर्ती क्षेत्रों से गंगा नदी तक का भाग :

यह भाग अलकनन्दा के आस-पास का क्षेत्र है जो गंगा नदी तक फैला है। यह भाग अत्यधिक रेतीले पत्थरों तथा मेखाकार्मिक चट्टानों से निर्मित है क्योंकि यह भाग नदी के समीपवर्ती हैं, जिसके कारण रेत, मिट्टी, कंकड़, पत्थर आदि-आदि अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

3. भाबर तथा इसके सम्बद्ध भाग :

जनपद के दक्षिण उप पर्वतीय भाग जो भाबर के नाम से पुकारा जाता है। यह क्षेत्र दुगड्डा विकास खण्ड में 80 किमी० लम्बी तथा 3 – 2 किमी० चौड़ी पट्टी में फैला हुआ है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग पर्वतीय है तथा यह भाग अधिक उपजाऊ भी है कहीं-कहीं पर समतल मेड़ है।

मोटे तौर पर जनपद को दो सम्भागों में बांटा जा सकता है एक भाग में जिले का उत्तरी भाग आता है जो तहसील पौड़ी एवं लैंसडाउन के अन्तंगत आता है। दूसरे उप सम्भाग में कोटद्वार दुगड्डा विकास खण्ड के भाबर वाला क्षेत्र आता हैं। दोनों ही भागों में काफी भिन्नता पायी जाती है। प्रथम भाग तो पूर्णतः पर्वतीय है। जिसमें 2918 ग्राम तथा 5 नगर आते है। यह समुद्र से 900 मी० से 2250 मी० तक ऊँचाई पर स्थित है। इसका लगभग 35 प्रतिशत भाग बनीं से आच्छादित है। द्वितीय भाग में कोटद्वार तहसील के 306 ग्राम तथा 3 नगर है जो समुद्र तल से 450 मी० से 1200 मी० की ऊँचाई तक हैं। इस क्षेत्र में वर्षा कम होती है।

गढ़वाल के 37 राजा अजेयपाल ने सुव्यवस्था के लिये इस क्षेत्र में परगनों और पट्टियों में बिभक्त किया था। वर्तमान गढ़वाल जिले के अन्तंगत चांदपुर, देवलगढ़, बारहस्यूं, चौंदकोट, मल्ला सलाण, तल्ला सलाण, गंगा सलाण और भाबर परगना है तीन पट्टियों चांदपुर आठ, देवलगढ़, पन्द्रह बारहस्यूं, 8 चौंदकोट, 12 मल्ला सलाण, 8 तल्ला सलाण, 12 गंगा सलाण एवं 5 पट्टियां भाबर की है।

प्रशासनिक ढांचा

जनपद राज्य सरकार की सबसे छोटी इकाई है। जिसके सर्वोच्च अधिकारी जिलाधिकारी है। वे जिला प्रशासन के लिये मुख्य रूप से उत्तरदायी होता है। जिला प्रशासन के

मानचित्र
जिला पौड़ी गढ़वाल
राजनैतिक

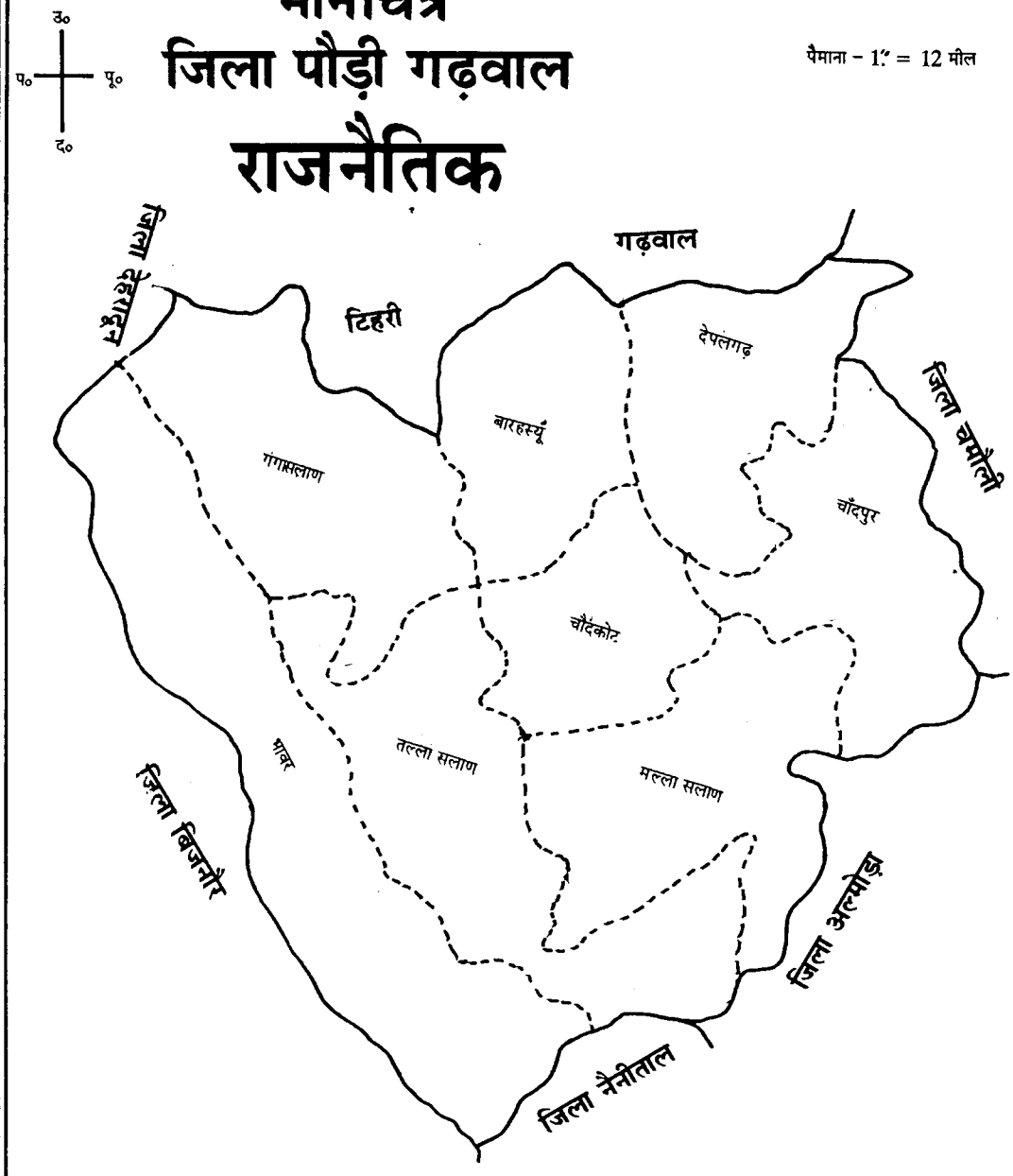

लिये मुख्य रूप से शान्ति व्यवस्था मजिस्ट्रेसी तथा जिले के सर्वांगीण विकास सम्मिलित हैं। पौड़ी जनपद का मुख्यालय पौड़ी नगर है, पौड़ी नगर में ही गढ़वाल मण्डल के पाँचों जनपदों (पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, देहरादून) का मुख्यालय भी है। यहीं पर आयुक्त का कार्यालय स्थित है। आयुक्त का कार्यालय होने के कारण यहीं पर विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा मण्डलीय अधिकारियों के कार्यालय भी स्थित हैं।

प्रशासनिक सुविधा के लिये जनपद को तीन तहसीलों पौड़ी, कोटद्वार, लैंसडाउन तथा दो उप-तहसीलों थलीसैंण, धूमाकोट में विभक्त किया गया है। जनपद के विकास कार्यों के संचालन हेतु पौड़ी जनपद को 15 विकास खण्डों—1. पौड़ी, 2. कोट, 3. खिर्सू, 4. पावौ, 5. कल्जीखाल, 6. थलीसैंण, 7. दुगड्डा, 8. यमकेश्वर, 9. ढांगू (द्वारीखाल), 10. लैंसडाउन (जयहरीखाल), 11. चौंदकोट (ऐकेश्वर), 12. पोखड़ा, 13. रिखणीखाल, 14. वीरौंखाल, 15. नैनीडांडा आदि विभाजित किये गये हैं।

जनपद के विकास कार्यों को सफल बनाने के लिये मुख्य विकास अधिकारी (सी० डी० ओ०) की एक पद सृजित किया गया है। प्रत्येक विकास खण्ड में एक खण्ड विकास अधिकारी का पद सृजित है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में 3573 राजस्व ग्राम में जिनमें 8 वन ग्रामों को सम्मलित करते हुये 3237 आबाद ग्राम हैं। इन ग्रामों को 1214 ग्राम सभाओं, 121 न्याय पंचायतों में वर्गीकृत किया गया है। जनपद में चार नगरपालिका (पौड़ी, कोटद्वार, श्रीनगर, दुगड्डा) एवं छावनी (कैंन्टोमैन्ट) लैंसडाउन है।

———

जनसंख्या और क्षेत्र

किसी भी क्षेत्र की आर्थिकी में वहां की जनसंख्या का विशेष महत्व होता है। प्राकृतिक संसाधानों को कार्यान्वित करने वाला केवल मानव ही है। चेतन अचेतन के संरक्षक के रूप में मनुष्य ही एकमात्र संसाधान है। मनुष्य तो है ही परन्तु एक बुद्धिजीवी होने के कारण स्वयं क्रियाशील है। प्राकृतिक भू-दृश्य में योजनाबद्ध परिवर्तन सांस्कृतिक पर्यावरण मनुष्य द्वारा निर्मित भू-दृष्य होता है। भैगोलिक ईकाई तथा बुद्धि परक होने के कारण अन्य साधन का समायोजन करने की क्षमता केवल मनुष्य में होता है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल के क्षेत्रफल तथा आबाद ग्रामों को हम निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट कर सकते हैं :—

जनपद पौड़ी के ग्राम :

विकास खाण्ड का नाम	राजस्व ग्राम	आबाद ग्राम	क्षेत्रफल वर्ग किमी०	जनसंख्या
1	2	3	4	5
1. पौड़ी	214	179	146	30947
2. कोट	265	213	183	29519
3. खिर्सू	257	229	508	36580
4. पावौ	158	146	436	35762
5. कल्जीखाल	274	238	235	35243
6. थलीसैंण	224	203	652	43657
7. दुगड्डा	294	283	452	65090
8. यमकेश्वर	236	224	644	37351
9. द्वारिखाल	234	225	672	41922
10. लैंसडाउन	236	208	293	32971
11. ऐकेश्वर	269	231	170	34757
12. पोखाड़ा	138	125	138	26478

जनपद की जनसंख्या में जनगणना के अनुसार 1901 से 1981 तक प्रतिदशक जनसंख्या में वृद्धि तथा प्रतिशत अन्तर

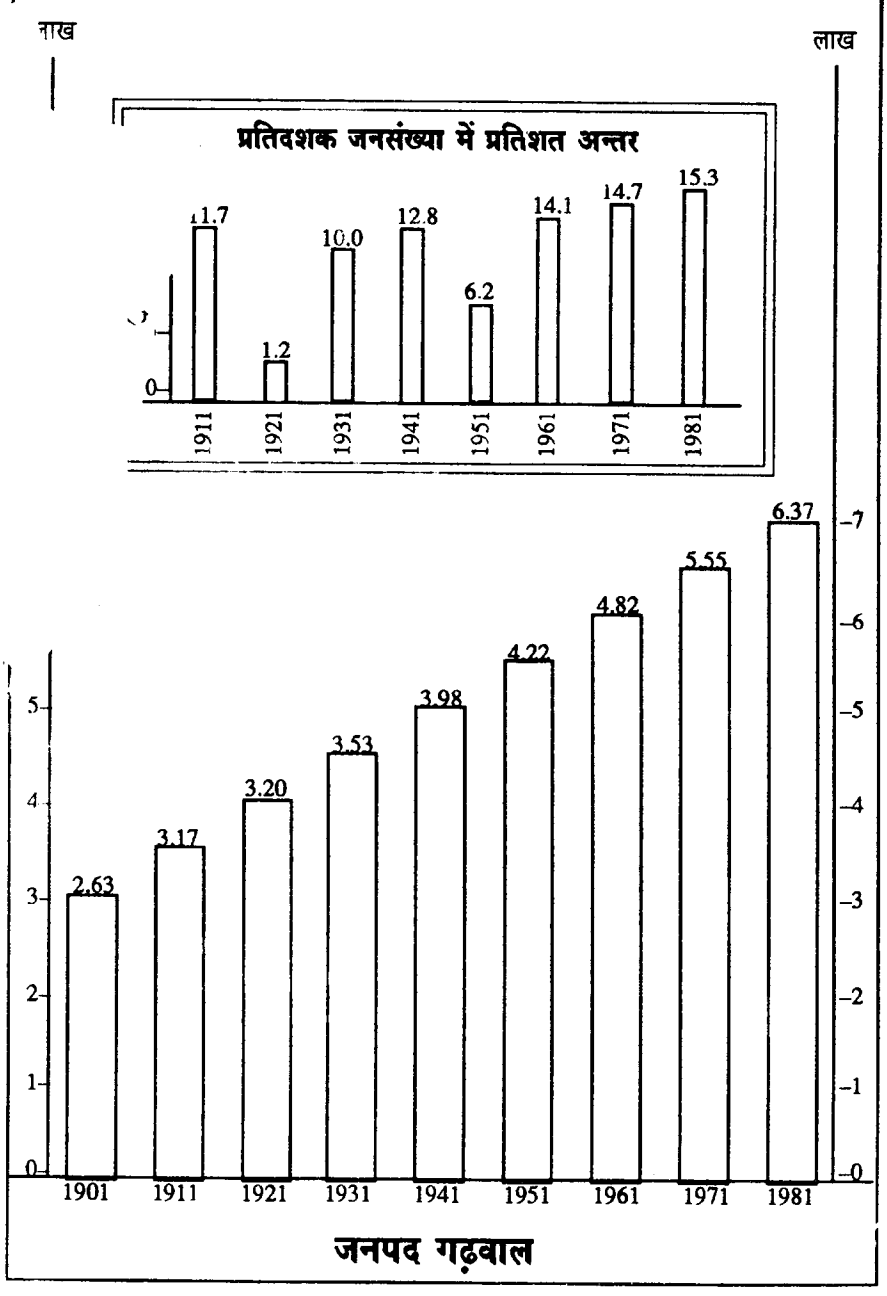

जनपद गढ़वाल

1	2	3	4	5
13. खिणीखाल	190	184	330	31620
14. बीरौंखाल	267	251	244	49963
15. नैनीडांडा	304	290	270	32255
16. वन ग्राम	08	08	—	8093
योग ग्रामीण	3573	3237	5378	2725208
नगरीय	—	—	62	62669
कुल जनपदीय	—	—	5440	637877

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद मे 3573 राजस्व ग्राम हैं जिनमें 8 वन ग्रामों को भी सम्मलित किया गया है। 3237 में आबाद ग्राम हैं। इन ग्रामों को 1214 ग्राम सभाओं में बांटा गया है तथा जनपद में 121 न्याय पंचायत वर्गीकृत किया गया है। जनपद में चार नगरपालिकायें पौड़ी, कोटद्वार, दुगड्डा, श्रीनगर एक छावनी क्षेत्र लैंसडाउन, एक समिति रुद्रप्रयाग। जनपद में ग्रामों की जनसंख्या भी दिखायी गयी हैं। जनपद का क्षेत्रफल विकास खण्डवार दिखाया गया है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 5440 वर्ग किमी है। जिसमें से 7378 किमी० में ग्रामीण क्षेत्र 62 वर्ग किमी० में नगरीय क्षेत्र आता है।

मनुष्यों ने भौगोलिक प्राकृतिक सुविधाओं के आधार पर अपने बचाव स्थान स्वयं चुने हैं। सन् 1981 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 637877 हैं। पौड़ी जनपद में विकास खण्डवार जनसंख्या का वितरण सन् 1981 की जनगणना अनुसार निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

विकास खण्डवार 1981 की जनगणना

विकास खण्ड	पुरुष	स्त्री	योग	प्रतिशत	घनत्व
1	2	3	4	5	6
1. पौड़ी	13983	16964	30947	9	212
2. कोट	12849	16670	29519	4	161
3. खिर्सू	17304	19276	36586	6·5	72

1	2	3	4	5	6
4. पावौ	16396	13366	35762	15	82
5. कलजीखाल	15278	19965	35243	9	150
6. थलीसैंण	21138	22529	43657	21·2	167
7. दुगड्डा	33325	31765	65090	14	142
8. येमकेश्वर	17264	20087	37351	14	158
9. द्वारिखाल	19466	22456	41922	16	62
10. लैंसडाउन	15508	17463	32971	16·6	113
11. ऐकेश्वर	15162	19595	34757	1·0	204
12. पोखड़ा	11918	14560	26478	14 5	192
13. रिखणीखाल	14546	17074	31620	15 6	196
14. वीरौंखाल	22287	17676	49963	5 4	205
15. नैनीडांडा	15907	19348	35255	7·6	131
16. वन ग्राम	5459	2634	8093	45·7	—
योग ग्रामीण	267810	307398	572208	11·0	107
योग नगरीय	37255	25413	62669	79·8	1011
योग जनपद	305066	332811	637877	15·35	117

उपरोक्त सारिणी में पौड़ी जनपद की जनगणना अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या-637877 है जिसमें 305066 पुरुष तथा 332811 स्त्रियां हैं। जिसमें से 575208 कुल जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा 62669 नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।

प्रति दस वर्ष में पौड़ी जनपद की जनसंख्या में वृद्धि :

वर्ष	योग	पुरुष	स्त्री	ग्रामीण	नगरीय	प्रतिशत वृद्धि
1961	482327	222892	259435	454829	27498	14.12
1971	553028	261054	291774	518181	34847	14.65
1981	637877	305066	332811	575208	62669	15.35

उपरोक्त सारिणी में 1971 की जनसंख्या 553028 जिनमें से 261054 पुरुष तथा 291974 स्त्रियां थी। तुलना में इस दशक में 15.35 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि

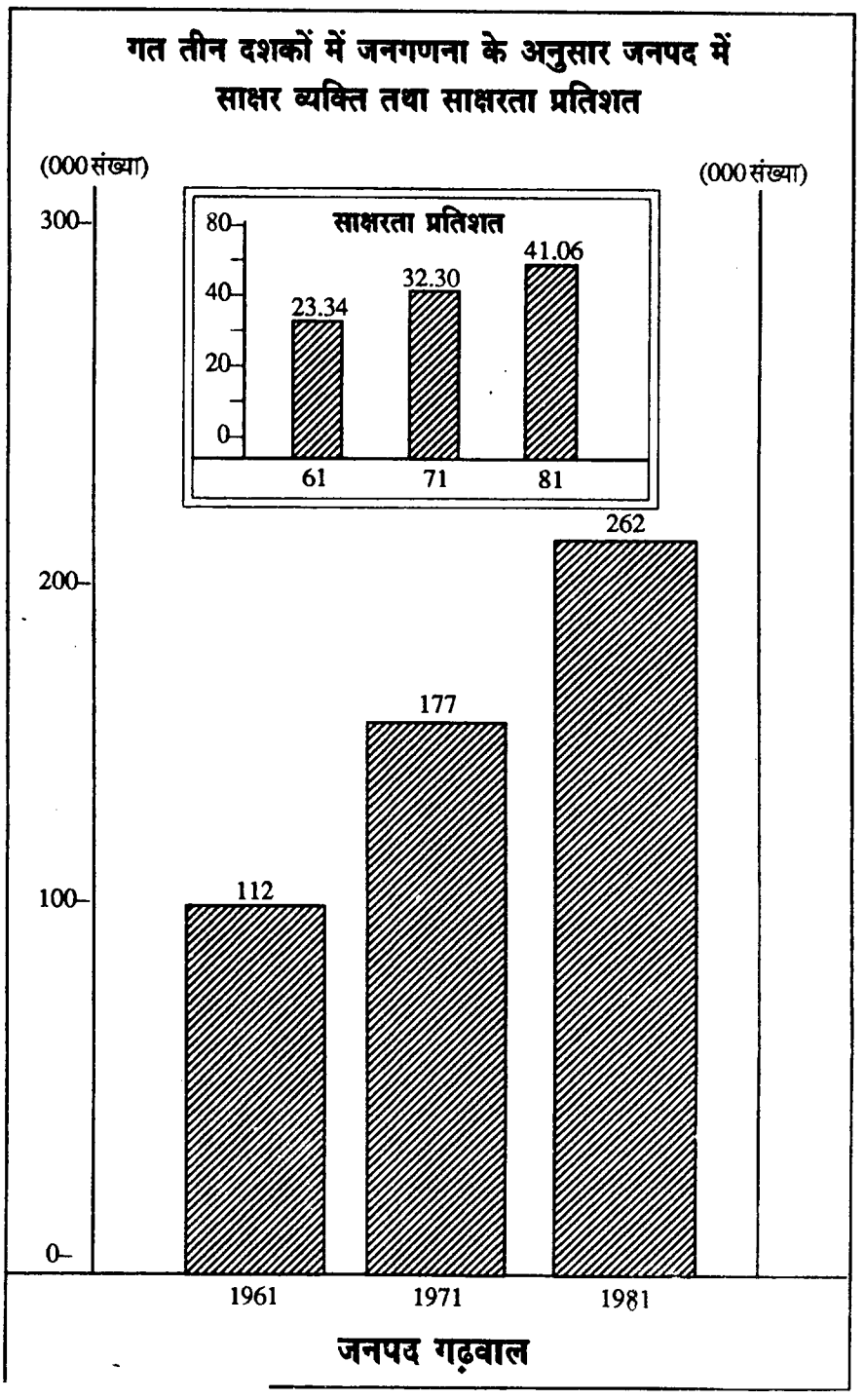

गत तीन दशकों में जनगणना के अनुसार जनपद में साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता प्रतिशत

दर रही। जब यह दर 1961 से 1971 में 14.65 ही थी। 1961 की जनगणना अनुसार जनपद की जनसंख्या 482327 थी जिसमें से 22892 पुरुष तथा 259435 स्त्रियां थीं प्रदेश की तुलना में जनसंख्या वृद्धि दर बहुत ही कम हैं। उ०प्र० की 1971–81 के दशक में प्रतिशत वृद्धि 25.49 प्रतिशत थी।

जनसंख्या की दृष्टि से घनी आबादी नहीं है। वर्ष 1971 की जनसंख्या का घनत्व 103 था जो 1981 में बढ़कर 117 व्यक्ति वर्ग किमी० है जबकि वर्तमान समय में उ०प्र० में घनत्व 377 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर है ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व केवल 107 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० है जबकि नगरीय क्षेत्रों में 910 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलो मीटर रहता है।

आयु स्तर अनुसार जनसंख्या :

जनपद की जनसंख्या का विवरण निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :—

जनपद में आयुवर्गानुसार जनसंख्या 1981

आयु समूह	योग		ग्रामीण		नगरीय	
	पुरुष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
सभी आयु	305066	332811	637877	267810	307398	37256	25413
0–5	45871	42287	88158	42738	38770	3133	3517
5–9	47576	45190	92766	43689	41651	3887	3539
10–14	41292	44146	85438	37057	40983	4235	3163
15–19	29972	34520	64492	25624	31675	4348	2850
20–24	19470	26038	45508	15070	23437	4400	2661
25–29	17537	22411	39948	13740	20355	3597	2056
30–34	15132	18886	34018	11708	17071	3424	1815
35–39	13777	18194	31971	11342	16782	2435	1412
40–44	12956	17311	30267	10798	16086	2158	1225
45–49	13311	15741	28052	11635	14805	1676	936
50–54	13009	13743	26752	11521	13050	1488	693
55–59	9405	9797	19212	8573	9358	832	4439
60 से अधिक	25721	24497	50298	24092	23347	1626	1148
आयु नहीं बतायी गयी	37	45	82	23	28	14	17

दर रही। जब यह दर 1961 से 1971 में 14.65 ही थी। 1961 की जनगणना अनुसार जनपद की जनसंख्या 482327 थी जिसमें से 22892 पुरुष तथा 259435 स्त्रियां थीं प्रदेश की तुलना में जनसंख्या वृद्धि दर बहुत ही कम है। उ०प्र० की 1971–81 के दशक में प्रतिशत वृद्धि 25.49 प्रतिशत थी।

जनसंख्या की दृष्टि से घनी आबादी नहीं है। वर्ष 1971 की जनसंख्या का घनत्व 103 था जो 1981 में बढ़कर 117 व्यक्ति वर्ग किमी० है जबकि वर्तमान समय में उ०प्र० में घनत्व 377 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर है ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व केवल 107 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० है जबकि नगरीय क्षेत्रों में 910 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलो मीटर रहता है।

आयु स्तर अनुसार जनसंख्या :

जनपद की जनसंख्या का विवरण निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :—

जनपद में आयुवर्गानुसार जनसंख्या 1981

आयु समूह	योग			ग्रामीण		नगरीय	
	पुरुष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
सभी आयु	305066	332811	637877	267810	307398	37256	25413
0–5	45871	42287	88158	42738	38770	3133	3517
5–9	47576	45190	92766	43689	41651	3887	3539
10–14	41292	44146	85438	37057	40983	4235	3163
15–19	29972	34520	64492	25624	31675	4348	2850
20–24	19470	26038	45508	15070	23437	4400	2661
25–29	17537	22411	39948	13740	20355	3597	2056
30–34	15132	18886	34018	11708	17071	3424	1815
35–39	13777	18194	31971	11342	16782	2435	1412
40–44	12956	17311	30267	10798	16086	2158	1225
45–49	13311	15741	28052	11635	14805	1676	936
50–54	13009	13743	26752	11521	13050	1488	693
55–59	9405	9797	19212	8573	9358	832	4439
60 से अधिक	25721	24497	50298	24092	23347	1626	1148
आयु नहीं बतायी गयी	37	45	82	23	28	14	17

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण आयु वर्गानुसार ग्रामीक्ष क्षेत्र में अधिक ही है। सारिणी से भी स्पष्ट होता है कि 05,5 से 9, 10 से 14 15 से 19 आयु वर्ग में जनपद की जनसंख्या अधिक है। कहा जा सकता है कि जनपद में बच्चों की अधिक जनसंख्या है। या फिर 60 या 60 से अधिक आयु वर्ग में भी जनसंख्या अधिक है।

जनपद में धर्मानुसार जनसंख्या :

जनपद में धर्मानुसार जनसंख्या को निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है : —

जनपद में प्रमुख धर्मानुसार जनसंख्या 1981

प्रमुख धार्मिक समुदाय	जनसंख्या			
	कुल	ग्रामीण	नगरीय	कुल जनसंख्या प्रतिभा
हिन्दु	621510	563988	57522	57.43
मुस्लिम	13467	9491	3976	2.11
ईसाई	1420	749	671	0.22
सिख	974	725	249	0.15
बौध	123	15	108	0.02
जैन	21	68	143	0.04
अन्य	172	172	—	0.03

उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि जनपद में हिन्दू धर्मों की जनसंख्या सबसे अधिक 57·43 प्रतिशत है। जो कि अन्य धर्म लोगों से सबसे अधिक है। अन्य धर्मों की जनसंख्या जनपद में न के ही बराबर है या हम कह सकते हैं कि जनपद में हिन्दू धर्म के लोग ही निवास करते हैं अन्य धर्मों के लोगों ने यहीं के लोगों तथा गांवों में निवास कर रही जनसंख्या के अनुसार अपने को व्यवस्थित कर लिया है, यहां पर अन्य धर्मों को हिन्दुओं से अलग नहीं किया जा सकता है। सभी जनपद की सांस्कृतिक और आर्थिक, भौतिक क्रिया कलापों में एक साथ है।

ग्रामीण एवं नगरीय गठन :

जनपद की कुल जनसंख्या का लगभग 90·2 प्रतिशत व्यक्ति गांवों में निवास करते हैं जनपद में 62669 नगरीय आबादी है जो मुख्यत: पौड़ी, श्रीनगर एवं कोटद्वार में निवास करती है। दुगड्डा, लैंसडाउन; बाह बाजार एवं कालागढ़ नाम से ही नगरीय क्षेत्र हैं।

लिंग अनुपात :

1981 में जनपद के लिंग अनुपात 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 1091 है जबकि यह अनुपात प्रदेश में 866 है।

साक्षरता :

1981 की जनगणनानुसार जनपद में कुल सक्षारता प्रतिवर्ष 41 प्रतिशत है जबकि यह प्रतिशत तुलना में काफी अच्छा है। निम्नलिखित तालिका द्वारा जनपद की साक्षर एवं साक्षरता प्रतिशत स्पष्ट होता है।

वर्ष	साक्षर व्यक्ति			साक्षरता प्रतिशत		
	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल
1961	96681	15866	112547	43·38	6·12	23·34
1971	128749	48222	176971	49·32	16·52	32·20
1981	171630	90285	261915	56·26	27·13	41·06

उपरोक्त सारणी में स्पष्ट किया गया है कि जनपद में कुल साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता प्रतिशत अत्यधिक है जनपद का प्रदेश में साक्षरता प्रतिशत में तीसरा स्थान है। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि जनपद में साक्षरता प्रतिशत 1961 में 23·34 प्रतिशत रहा तथा 1971 में 32·20 प्रतिशत रहा तथा 1981 में जनगणना में 41·06 रहा। सारिणी से यह भी स्पष्ट होता है कि जनपद में स्त्रियों का साक्षरता प्रतिशत कम है पुरुषों की अपेक्षा, पुरुष साक्षरता प्रतिशत 56·26 है तथा स्त्रियों का साक्षरता प्रतिशत 27·13 है। क्योंकि अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आधारित है तथा गांवों में निवास करती है जिसके कारण महिलाओं में साक्षरता प्रतिशत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता प्रतिशत कम है। नगरीय क्षेत्रों में अधिक जिनको हम कह सकते है कि पौड़ी जनपद का साक्षरता प्रतिशत अधिक है अन्य जनपदों की अपेक्षा।

अनुसूचित जाति तथा जनजाति :

जनपद में अनुसूचित तथा जनजाति का वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार 75998 है जिसमें से 37474 पुरुष तथा 38524 स्त्रियां। इसको पिछले 1961 व 1971 से भी दिखाया जा सकता है।

वर्ष	अनुसूचित जाति/जनजाति		
	कुल	पुरुष	स्त्री
1961	51570	25750	26000
1971	58866	29079	29787
1981	75998	37474	38524

उपरोक्त सारणी में अनुसूचित जाति तथा जनजाति की संख्या उपरोक्त वृद्धि हो रही है। यहां भी जनसंख्या को देखने से पता चल रहा है कि सभी जनगणना में अनुसूचित जाति/जतजाति की संख्या में महिलाओं की अधिकता है।

जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण :

वर्ष	कर्मकार संख्या		पशुपालन जंगल लगाना वृक्षा-रोपण	खान खोदना	पारित	गैर-पारित	निर्माण कार्य	बाकी
	कृषक	कृषि श्रमिक						
1961	243746	1331	9190	66	5307	2267	2701	237
1971	195978	3265	4074	70	1649	2081	1413	398
1981	165037	1891	4027	36	2106	4381	9098	869

वर्ष	कर्मकार संख्या		कुल मुख्य कर्मकार	सीमात कर्मकार	कुल कर्मकार
	यातायात संग्रहण एवं संचार	अन्य			
1961	2136	14893	283936	—	283936
1971	1894	36788	251093	—	251093
1981	3996	61957	230991	46236	277227

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 1981 की जनगणना के अनुसार कुल कर्मकारों की संख्या 230991 है जो कि कुल जबसंख्या का 36·2 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में 210999 मुख्य कर्मकार तथा नगरीय क्षेत्र में 19992 मुख्य कर्मकार हैं इसके अतिरिक्त कर्मकारों में 71·45 कृषक मजदूर 1·74, पशुपालन वृक्षारोपण 0·1, खान

आर्थिक/औद्योगिक वर्गीकरण के अनुसार कुल मुख्य कर्मकारों का प्रतिशत वितरण 1981

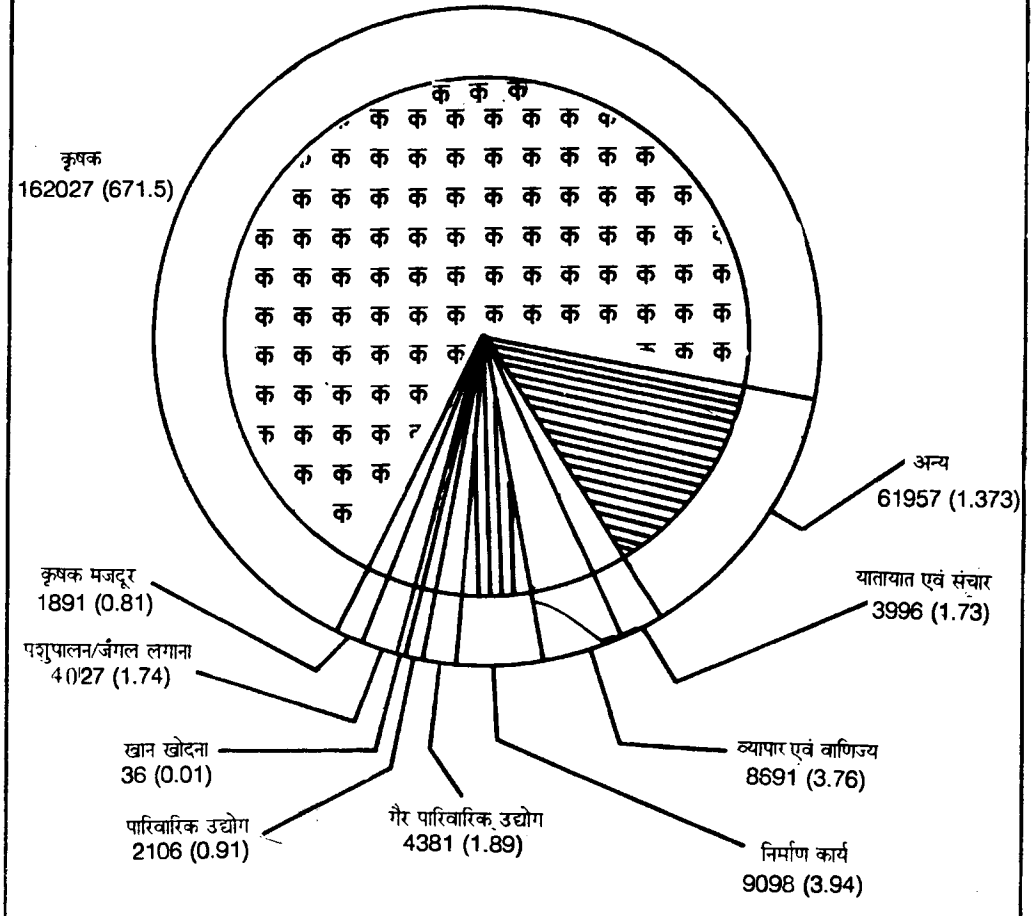

जनपद गढ़वाल

खोदना, 0·91 प्रतिशत, गृह उद्योग 1·84 प्रतिशत, गैर पारिवारिक उद्योग 3·9, निर्माण कार्य 3·76, व्यापार वाणिज्य 1·72, यातायात एवं संचार तथा 13·73 अन्य सेवाओं में कर्मवर हैं जनपद में काम करने वालों व जनपद में काम न करने वालों का अनुपात 36·2 व 63·6 है।

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलायें अधिकतर कृषि कार्यों में संलग्न रहती है अत: काम करने वालों में पुरुष स्त्री अनुपात में अपेक्षाकृत कम अन्तर है कुल जनसंख्या में काम न करने वालों का प्रतिशत 63.8 प्रतिशत है। इसमें अधिकतर वृद्ध एवं कम आयु वर्ग के लोग हैं। वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की स्ख्या 1091 है इसका कारण है कि पुरुष वर्ग काम धन्धों की तलाश में मैदानी भागों में चने जाते है और महिलायें अधिकतर घर में ही रहती हैं।

आवासीय मकान एवं परिवार :

जनपद पौड़ी गढ़वाल की आवासीय मकान एवं परिवार गणना को निम्न तालिका से स्ष्ट किया जा सकता है—

वर्ष	क्षेत्रफल वर्ग	आवासीय मकानों की संख्या	परिवार संख्या
1961	—	100948	—
1971	5440	96018	122920
1981	5440	129056	131308

उपरोक्त तालिका में 1981 की जनगणना के अनुसार जनपद में कुल आवासीय मकानों की संख्या–129056 थी जिनमें 1,15,7571 ग्रामीण क्षेत्र में 13299 नगरीय क्षेत्र में स्थित है तथा कुल परिवारों की संख्या–131308 जिनमें से 117440 ग्रामीण क्षेत्र में 13864 नगरीय क्षेत्र में स्थित हैं।

कृषि एवं जलवायु :

वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारकों में जलवायु का प्रमुख हाथ है इसके आधार पर मानव आदिवास सृजित होते हैं भौगोलिक पर्यावरण में जलवायु का प्रमुख स्थान है। जनपद पौड़ी गढ़वाल की जलवायु शीत प्रधान होने के कारण शीत का प्रकोप कई स्थानों पर अधिक है। पर्वतीय भागों में तेज हवायें चलती हैं किन्तु दुगड्डा विकास खण्ड के भाबर एवं घाटियों में समशीतल जलवायु पायी जाती है। जनपद में अन्तरिक्ष विज्ञान विभाग का कोई केन्द्र नहीं है इस कारण तापमान का विश्वसनीय विवरण उपलब्ध नहीं है, सर्दियों में अधिक ठण्ड, पर्वतीय भागों में बर्फ भी पड़ती है। तापमान शून्य से भी नीचे आ जाता है परन्तु ग्रीष्म काल में पर्वतीय भागों में तो गर्मी अधिक नहीं पड़ती है परन्तु इसके विपरीत घाटियों तथा भाबर के तराई वाले भागों में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। गढ़वाल की जलवायु अपनी विवधता के लिये प्रसिद्ध है। मौसम का अनावश्यक परिवर्तन होना यहाँ की स्थानीय बातों पर निर्भर करता है।

तापमान :

गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में 300 से 100 मीटर तक भी उष्ण या उपोष्ण औसत तापमान 19 900 से 1800 मीटर तक गर्म ज्ञातोष्न औसत तापक्रम 14 2400 से 3000 मीटर तक शीत जलवायु औसत तापक्रम 4.5 तथा 3000 मीटर से अधिक ऊँचाई तथा उपरी भाग में हिमानी औसत तापक्रम 4.5 से 0 से भी कम तापक्रम जलवायु पायी जाती है। ऐसा वैज्ञानिकों का विचार है कि ये शब्द डा० के० एन सिंह डा० डी० सिंह के हैं।

वर्षा :

वर्षा मुख्यतः मानसूनों के द्वारा होती है। जाड़ों में चक्रवातों द्वारा जो कि कश्मीर की सीमान से होकर भारत में प्रवेश करते हैं जनपद में 88-89 में औसत वर्षा 1366 मि० मी० हुई है।

मिट्टी :

कृषि क्षेत्र की कृषि मिट्टी के प्रकार पर आधारित हैं। मिट्टी कृषि का आवश्यक कारक है, उपयोग की दृष्टि से मिट्टियों का मनुष्य जीवन में प्रमुख स्थान है, मनुष्य की पहली आवश्यकता भूमि से प्राप्त होती है यही कारण है कि भूमि मनुष्य की सर्वाधिक

जनपद गढ़वाल

भूमि उपयोगिता

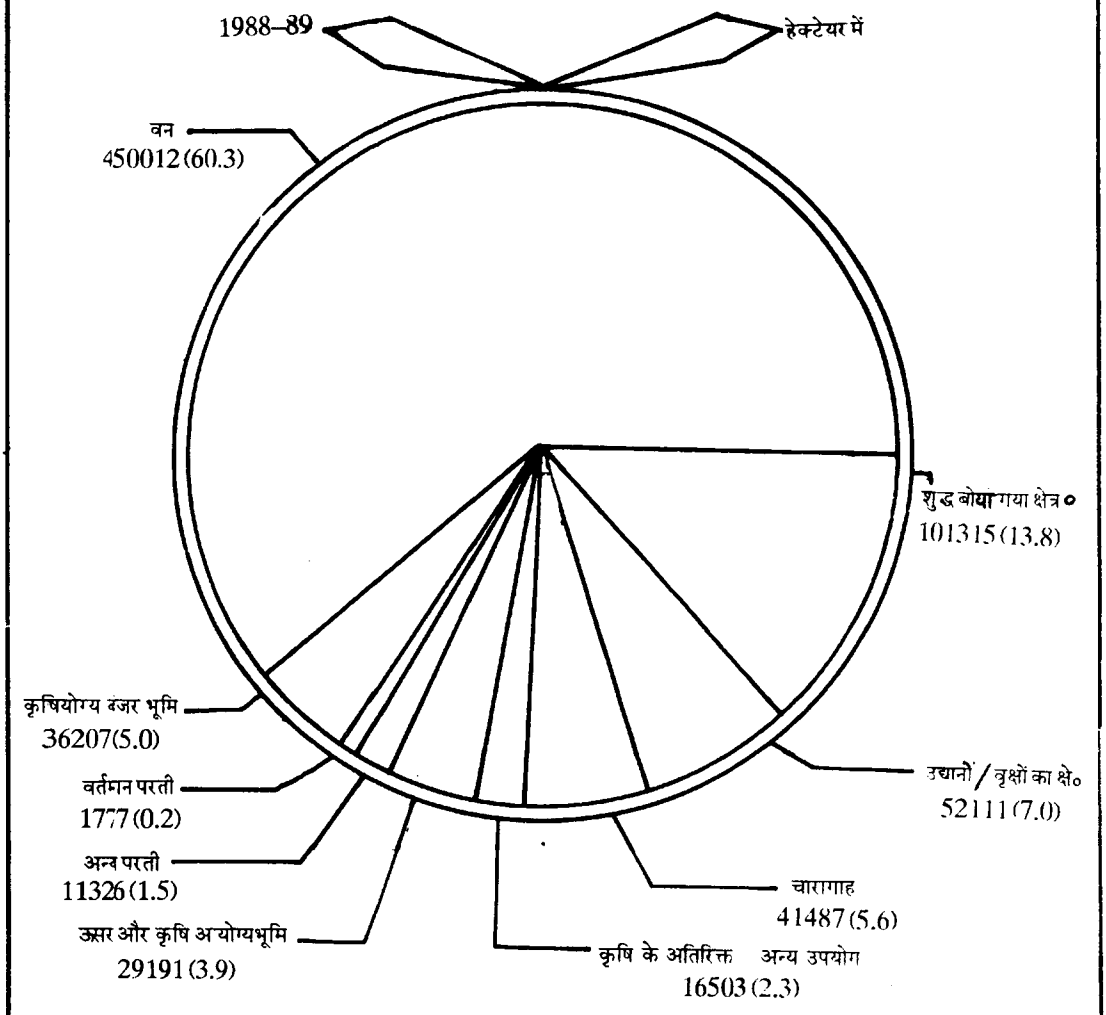

कोष्टक में कुल प्रति वेदित क्षेत्रफल से प्रतिशत अंकित किया गया है।

मूल्यवान सम्पत्ति है जनपद के मैदानी क्षेत्र भाबर की मिट्टी उपजाऊ है तथा पर्वतीय क्षेत्र में घाटियों की भूमि भी उपजाऊ है, किन्तु ऊँची ढालानों पर मिट्टी कम उपजाऊ है। अधिकतर क्षेत्र की मिट्टी पथरीली तथा कुछ क्षेत्रों में चिकनी मिट्टी भी पायी जाती है इसके अतिरिक्त रेतीली, लाल एवं काली मिट्टी के क्षेत्र भी जनपद में पाये जाते हैं।

भूमि उपयोग :

किसी भी स्थान एवं क्षेत्र के विकास में संसाधनों का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं संसाधन समाज में परिस्थितियां व आवश्यकताओं के आधार पर विकसित होते हैं इनका क्रमिक विकास क्षेत्र की मानवीय आवश्यकताओं के ऊपर निर्भर रहता है। कहा गया है कि संसाधन बनते नहीं बल्कि बनाये जाते हैं मानव ने भौगोलिक संसाधनों के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति निरन्तर सामजीकरण के आधार पर किया है। विशेषकर आज के वैज्ञानिक युग के तकनीकी का पूर्ण विकास होने के साथ साथ संसाधन भी उतने ही अधिक उपयोगी हो गये हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग निरन्तर वैज्ञानिक रूप से होने लगा है। क्षेत्रीय संसाधनों से स्थानीय लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति सरलता से करते हैं जिसके अर्न्तगत प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन सभी आ जाते हैं।

जनपद में कृषि प्रधान होने के कारण यहाँ के लोगों का कृषि जीवन यापन का प्रमुख साधन प्रतीत होता है, निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

क्र०सं०	मद	इका० कृषि वर्ष 85–86 की स्थिति
1.	कुल बन भूमि	455186 हेक्टियर
2.	कृषि योग्य बंजर भूमि	36207 ,,
8,	परती भूमि	15103 ,,
4.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लायी गयी भूमि	16503 ,,
5.	चारागाह	41487 ,,
6.	उधान वृक्षों का क्षेत्रफल	5111 ,,
7.	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	98819 ,,
8.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	742607 ,,
9.	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	71242 ,,
10.	सकल बोया गया क्षेत्रफल	170061 ,,
11.	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल	9081 ,,
12.	सकल सिंचित क्षेत्रफल	16837 ,,

उपरोक्त सारणी के अनुसार गढ़वाल जनपद में 155186 हैक्टियर भूमि बनों के अन्तर्गत आती है। जबकि जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 742607 हैक्टियर हैं, स्पष्ट है कि कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 61 प्रतिशत भाग में बन हैं बनों के इस क्षेत्र की अर्थ-व्यवस्था से गहरा सम्बन्ध है। बन एक प्रमुख प्राकृतिक सम्पदा है जो यह यहाँ पर जल की सुलभ उपलब्धता भूमि की सुपक्षा व संरक्षण एवं पर्यावरण की सुरक्षा तथा एक लोजिकल सन्तुलन के लिये आवश्यक है। बनों के कुल क्षेत्रफल में बन विभाग के प्रबन्ध के अर्न्तगत 366212 हैक्टियर क्षेत्र लाया जा चुका है शेष भूमि में या तो सामान्य छोटे-छोटे पेड़ अथवा बंजर व अनुपयोगी झाड़ियों हैं इनको सघन बनीकरण करना बनों का संरक्षण होना परमआवश्यक है।

प्रतिवर्ष इस ओर ध्यान दिया जा रहा है तथा अधिक से अधिक संरक्षित बन क्षेत्र बनाया जा रहा है बनों का सीधा लाभ स्थानीय लोगों की नहीं मिलता है केवल मवेशियों के चारे के लिए घास, पत्तियाँ एवं ईधन के लिये लकड़ी लोगों को प्राप्त होती है, इसके अतिरिक्त विभागीय मानकों से प्रतिवर्ष बनों से उपयोगी कार्यो हेतु लकड़ी, इमारती लकड़ी तथा चीड़ के पेड़ में से लीला प्राप्त किया जाता है, किन्तु बनों के प्रतिवर्ष दोहन से भविष्य के लिये बढ़ते हुये बन आश्रित उद्योगों की पूर्ति तथा ईधन के लिये प्रतिवर्ष उपयोगी बनों वृक्षों का रोपण बहुत किया जा रहा है। अतः उपलब्ध बंजर बन खण्डों में वृक्षारोपक्ष का कार्य आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिये बृहद वृक्षारोपण का कार्य सामाजिक बानिकी तथा विभागीय कार्यक्रमों में वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है वर्ष 1988-89 में वृक्षारोपण कार्यक्रमों के अर्न्तगत 10406 हैक्टियर भूमि में 207 लाख पौधे रोपित किये गये।

उक्त विश्लेषण से मालूम होता है कि कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का मात्र 13.3 प्रतिशत भाग ही कृषि कार्यो से प्रयुक्त होता है तथा कुल शुद्ध बोये गये क्षेत्र का मान 9.2 प्रतिशत भाग शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल के अर्न्तगत है तथा सकल बोये गये क्षेत्र का मात्र 9.9 प्रतिशत भाग सकल सिंचित क्षेत्रफल के अर्न्तगत है जो सामान्य सें बहुत शून्य है यही कारण है कि यहाँ पर कृषक खेती वाड़ी के प्रति बहुत उदासीन है तथा जीविकोकार्जन के अन्य साधनों की खोज में रत है। शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 72 प्रतिशत क्षेत्रफल एक सें अधिकबार बोये गये क्षेत्रफल के अर्न्तगत आता है किन्तु वर्षा के ऊपर बुआई निर्भर होने के कारण यह क्षेत्र न्यूनाधिक घटता बढ़ता रहता है।

भूमि जोत :

वर्ष 1981 की कृषि गणना के आधार पर जनपद की क्रियात्मक जोती की संख्या-89012 है और इसके अर्न्तगत 118885 हैक्टियर क्षेत्र अच्छादित है। इसमें 79.5 प्रतिशत जो 2 हैक्टियर से भी कम है, के अर्न्तगत 38.3 प्रतिशत क्षेत्रफल आच्छादित है। 2 से 5 हैक्टियर की बीच 16.7 जोते हैं जिनके अर्न्तगत कुल क्षेत्र का 40.4 प्रतिशत

जनपद में कृषि के अन्तर्गत मुख्य फसलों का क्षेत्रफल

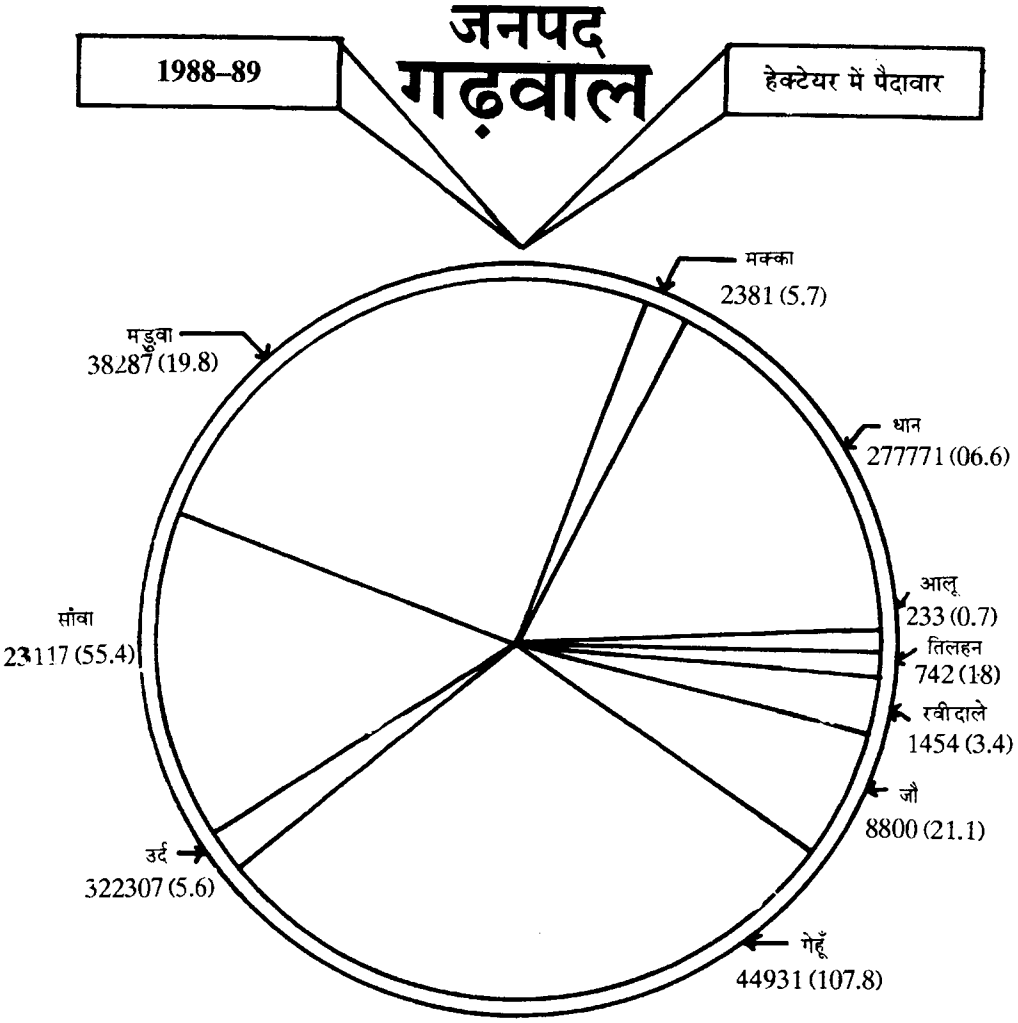

कोष्टक के अन्तर्गत मुख्य फसलों के कुल क्षेत्रफल से प्रतिशत दर्शाया गया है

क्षेत्रफल आच्छादित है। 5 हैक्टियर से अधिक के अन्तंगत जोतों 3.8 प्रतिशत भाग है। जिसमें कुल क्षेत्र का 21.3 प्रतिशत क्षेत्र अच्छादित है स्पष्ट है कि यहाँ पर लोगों के पास सबसे अधिक 1.0 हैक्टियर से कम की जोतें हैं इनकी संख्या—50470 है जोतों का औसत आकार 1 33 हैं तथा लघु व सीमान्त जोतों का कुल जोतों सें प्रतिशत 79.51 है।

फसल चक्र एवं सघनता :

जनपद सें रबी की प्रमुख फसलें गेहूँ और जौ हैं तथा धान, मक्का, मडुवा, सोया, खरीफ की प्रमुख फसलें है। खेत अधिकतर छोटे-छोटे तथा ढालदार हैं कुछ घाटी क्षेत्र में ही समतल खेत हैं।

जनपद में विकास खण्डवार मुख्य फसलों के अन्तंगत क्षेत्रफल (हैक्टियर में)

वर्ष/विकास खण्ड	धान		मक्का		मडुवा	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1	2	3	4	5	6	7
1987	30040	7542	2647	79	49598	10
1987–88	25143	6410	2148	47	35839	08
1988–89	27771	7565	2381	73	38287	05

वर्ष	सावां		खरीफ धान्य		धान्य उर्द	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1986–87	24659	07	106944	7638	2307	14
1987–88	21753	08	84883	6473	2307	14
1988–89	23117	07	91556	7651	23071	14

वर्ष	खरीफ खाद्यान्न		रबी गेहूँ		जौ	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1986–87	109251	7652	45081	7762	8425	249
1989–88	87190	6487	41336	6926	8616	179
1988–89	93863	7665	85931	7690	8800	123

वर्ष	योग रबी धान्य		रवि दालें			
			चना		मटर	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1986--87	53506	8011	164	91	23	02
1987--88	49952	7107	164	91	23	02
1988--89	53731	7863	164	91	23	02

वर्ष	अरहर		मसूर		योग रबी खाद्यान्न	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1986--87	589	—	688	38	54970	8182
87--88	859	—	688	38	51416	7230
88--89	589	—	688	38	55195	7994

वर्ष	कुल खाद्यान्न		तिलहन		लाही/सरसों	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
1986--87	164221	15794	365	125	384	84
87--88	138606	13725	365	125	384	84
88--89	149058	15659	365	125	384	84

वर्ष	तिलहल		सोयाबीन		गन्ना		आलू		तम्बाकू	
	कुल	सिं०	कुल	सिं०	कु०	सिं०	कु०	सिं०	कुघु	सिं०
86--87	749	209	39	—	07	07	258	65	37	06
87--88	749	209	39	—	07	07	258	65	37	06
88--89	749	209	39	—	07	07	258	65	37	06

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1986--87 में रबी फसलों का क्षेत्रफल 82.1 प्रतिशत गेहूँ के अन्तर्गत एवं खरीफ में 27.5 प्रतिशत धान तथा 68.1 क्षेत्र मडुवा के अन्तर्गत बोया जाता है।

जनपद में कुल खरीफ की फसलों का क्षेत्रफल 114403 हैक्टियर तथा रबी की

फसलों का कुल क्षेत्रफल 55658 हे० है। सिंचित क्षेत्रफल खरीफ, रबी, जायद का कुल योग 16837 है। जो कि प्रदेश में बहुत ही कम है।

जनपद में दालों का क्षेत्रफल बहुत ही कम है। मुख्य रूप से 2307 हे० है। उर्द में 688 हे० मटर में 589, अरहर 164, चना 23 हे०, मटर, धान गेहूँ तथा मक्का फसलों में अधिक उपज देने वाली प्रजातियाँ के अर्न्तगत लाया जा रहा है। कृषि उत्पादन के बढ़ाने के उद्देश्य से धान एवं गेहूँ के अधिक उपज देने वाले बीजों की बुवाई तथा सोयाबीन, तिलहन एवं दलहन का विस्तार कार्यक्रम चलाया जा रहा है तिलहन 365 हे० क्षेत्र में, सरसों 384 हे० में, दलहन 749 हे० क्षेत्र में, सोयाबीन 37 है० क्षेत्र में, गन्ना 07 हे० में, आलू 258 हे० क्षेत्रफल, तथा तम्बाकू 37 हे० क्षेत्रफल में बोया तथा उगाया जाता है।

जनपद में कुल बोये गये क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत ही सिंचित या सिंचाई योग्य क्षेत्रफल आता है शेष बोयी भूमि मौसम पर निर्भर करती है। इसके साथ ही जोतों का दूर-दूर बिखराव तथा छोटे-छोटे साथ-साथ पर्वतीय भाग होने के कारण भी फसलों के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है कुल खेती के क्षेत्रफल वाले भाग का 25 से 30 प्रतिशत भाग अधिक ऊँचाई वाला क्षेत्र है जहाँ कि अत्यधिक ठण्ड होने के कारण बीजों के अंकुरण तथा उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जनपद के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार मुख्य फसलों का उत्पादन निम्न प्रकार है—

क्र० सं०	फसलों का नाम	उत्पादन 86-87 मि० टन	उत्पादन 87-88 मि० टन	उत्पादन 88-89 मि० टन
1.	धान	33788	16022	29697
2.	मक्का	2637	1388	2122
3.	मडुवा	53858	22083	41431
4.	गेहूँ	51163	34721	49820
5.	संबा	29837	15825	26339
6.	जौ	9268	6299	8419
7.	दालें	1607	1678	1977
8.	तिलहन	272	286	369
9.	सोयाबीन	54	40	51
10.	गन्ना	354	362	352
11	आलू	5007	4998	4747
12.	तम्बाकू	57	111	145

उपरोक्त मुख्य फसलों के उत्पादन में कहीं निरन्तर कमी तथा कहीं कुल फसलों के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि ही रही है जनपद में सिंचित क्षेत्र कम होने के कारण कृषक को अधिकांशत: मौसम पर ही निर्भर रहना पड़ता है मौसम की अनिश्चिता के कारण यहाँ का कृषक खेती पर अपनी निर्भरता कम कर रहा है तथा वर्तमान समय में उन्नत कृषि कार्य-क्रम की भी कमी होती जा रही है ।

क्र०सं०	फसल का नाम	1986-87	1987-88	1988-89
1.	चावल	11.25	6.37	10.69
2.	मक्का	9.96	6.46	8.91
3.	मडुवा	10.86	6.16	10.82
4.	संबा	10.10	7.27	11.39
5.	गेहूँ	11.35	8.40	11.09
6.	जौ	11.00	7.31	9.37
7.	उरद	2.41	2.75	3.46
8.	मसूर	6.04	6.69	7.64
9.	चना	8.79	17.80	12.29
10.	मटर	9.57	11.08	12.23
11.	अरहर	7.97	7.30	8.03
12.	लाही/सरसों	6.22	6.68	8.66
13.	तिल	0.91	0.83	1.03
14.	सोयाबीन	13.82	10.34	13.14
15.	गन्ना	505.09	516.66	502.60
16.	तम्बाकू	15.41	30.00	39.00
17.	आलू	194.08	193.73	183.98

उपरोक्त सारिणी से सपष्ट होता है कि अधिकांश फसलों का प्रति कुन्तल, प्रति हे० बहुत ही कम है जनपद में 86-87 में औसत उपज प्रति कुन्तल प्रति हे० अधिक है । अन्य वर्षो में निरन्तर घटती रही है और कहीं-कहीं थोड़ी ही वृद्धि हो पा रही है । यहाँ फसलों का उत्पादन के प्रति यहाँ के लोग आशावादी नहीं रह गये हैं क्योंकि मौसम पर ही निर्भर रहना पड़ता है ।

सिंचाई के साधन :

जनपद के सिंचाई के साधनों एवं श्रोतों की कमी है । जिसके कारण जनपद में अधिकांश भूमि में सिंचाई नहीं हो पा रही है । सिंचाई के आभाव में मौसम पर निर्भर

रहना पड़ता है। निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है कि जनपद में सिंचाई के साधनों की कितनी संख्या और किन श्रोतों से सिंचाई की जा सकती है।

सिंचाई के साधन

वर्ष	नहरों की ल० किमी०	राजकीय नलकूप	लघु सिंचाई भूस्तरीय श्रोतों पर लगे पम्प सेट	हौज	कुल किमी०
1986-87	624	07	37	4273	830
87-88	783	07	37	4425	902
88-89	828	07	37	4607	953

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि जनपद में सिंचाई के साधनों की अत्यधिक कमी है। सिंचाई के साधनों की कमी, सिंचित क्षेत्र की कमीं यहाँ के उत्पादन पर बिपरीत प्रभाव डालते हैं।

कृषि यंत्र एवं उपकरण :

जनपद में कृषि यंत्रों एवं उपकरणों को निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

जनपद में कृषि यंत्र एवं उपकरण

वर्ष	हल लोहे का	लकड़ी का	उन्नत फलटी-वेटर	उन्नत मशीन थ्रेसिंग	स्प्रेयर	उन्नत खुदाई यंत्र	ट्रैक्टर
1978	70587	3470	117	02	02	18	04
1982	79115	4647	953	07	16	03	10
1988	67166	2595	353	42	12	05	16

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि जनपद में उन्नत कृषि यंत्रों की कमी है। हल लकड़ी का वही पुराना साधन है जनपद में लोहे के हल भी बहुत कम हैं जनपद में छोटे-छोटे सीढ़ीदार खेत होने के कारण ट्रैक्टर का प्रयोग भी नहीं किया जा सकता है।

एकमात्र दुगड्डा विकास खण्ड में मैदानी क्षेत्र होने के कारण तथा जोतों का आकार थोड़ा बड़ा होने के कारण ट्रैक्टर का प्रयोग किया जाता है। जिससे हल तथा खुदाई का कार्य किया जाता है। जनपद में कृषि यंत्रों का अत्यधिक आभाव है जिससे कृषि के उत्पादन क्षमता को नहीं बढ़ाया जा सकता।

उर्वरकों का वितरण :

जनपद में कुल उर्वरकों का वितरण भी बहुत कम है अपेक्षा मैदानी भागों के जनपद में उर्वरकों का वितरण विभिन्न वर्षा में निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

जनपद में उर्वरक विवरण मि० टन में

वर्ष	नाइट्रोजन	फासफोरस	पोटास	कुल
1986-87	378	206	22	606
1987-88	277	173	29	479
1988-89	357	219	62	638

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में प्रति हैक्टियर में कमी होने के कारण कम मात्रा में उर्वरक वितरण होना है। इस प्रकार कुल वितरित उर्वरकों में 49·7 प्रतिशत नाइट्रोजन, 40·4 प्रतिशत फासफोरस एवं पोटास, 9·9 प्रतिशत था प्रति हैक्टियर शुद्ध बोये क्षेत्रफल पर उर्वरक का उपभोग 6·13 किलो ग्राम रहा। जनपद में 16 मुख्य उर्वरक डिपो तथा 76 छोटे-छोटे बिक्री केन्द्र स्थापित हैं।

अन्य सूचनाएँ :

जनपद में कृषि से सम्बन्धित मुख्य सुविधाएँ एवं सूचनाएँ निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :—

वर्ष	बीज उर्वरक संख्या	गोदाम भंडार क्षमता मि० टन	ग्रामीण गोदाम संख्या	ग्रामीण गोदाम क्ष० मि०	कीट नाशक डिपो संख्या	कीट नाशक डिपो क्ष० मि०	गोबर गैस संयंत्र संख्या
1987-88	76	2415	68	5150	15	293	330
1988-89	76	2415	68	5150	15	293	405
1989-90	81	2415	68	5150	15	293	498

उपरोक्त तालिका से जनपद में अन्य कृषि सुविधाएँ दिखलायी गयी हैं जनपद में वर्तमान समय में 81 बीज गोदाम जिनकी क्षमता 2415 मि० टन ग्रामीण गोदाम 68 क्षमता 5150 मि० टन कीट नाशक गोदाम 15 क्षमता 293 मि० टन तथा गोबर गैस संयंत्र 498 हैं। जनपद में शीत गोदाम एक भी नहीं है। कृषि सेवा केन्द्र भी नहीं हैं। जहाँ की कृषकों को कृषि सम्बन्धी सूचनाओं का ज्ञान प्राप्त हो सकता था।

जनपद में खाद्यान्न भंडारों की संख्या एवं क्षमता को निम्नलिखित तालिका से दर्शाया जा सकता है।

जनपद में खाद्यान्न भण्डारों की प्रगति

मद	1987-88		1988-89		1989-90	
	सं०	क्ष० मि० टन	सं०	क्ष० मि० टन	सं०	क्ष० मि० टन
भारतीय खाद्य निगम	08	3760	01	2407	01	2407
बेयर हाउसिंग कार०	01	200	01	240	01	240
राज्य सरकार	22	4412	30	7171	30	7171
सहकारिता	—	—	01	300	01	300
अन्य	—	—	—	—	01	160

जनपद में कृषि उत्पादन आवश्यकता से कम मात्रा में होता है। खाद्यान्न के मामले में जनपद बाहर से आयातित खाद्यान्नों पर निर्भर रहता है। अतः उत्पादन को संगृहीत करने की समस्या नहीं है। इस प्रकार विपणन की समस्या भी कृषि के क्षेत्र में नहीं है। जनपद का काटेदार दुगड्डा विकास खण्ड ही बाजार या मण्डी क्षेत्र है। खाद्यान्नों की पूर्ति हेतु बाहरी जिलों से खाद्यान्नों का आयात व्यापारिक वर्ग करते हैं। जिनके अपने निजी गोदाम हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में मुख्यतः खाद्यान्नों का आयात, जिला आपूर्ति विभाग के माध्यम से होता है। जिनका काम अधिकतर किराये के लिये गये गोदाम से होता है। जिले में खपत एवं आपूर्ति विभाग के 22 गोदाम हैं। जिनकी संरक्षण क्षमता 4412 मि० टन है। 3 क्रय विक्रय सहकारी समितियाँ भी हैं। भारतीय खाद्य निगम के गोदाम 2407 मि० टन के है। वेयर हाउसिंग कारपोरेशन के एक गोदाम जिसकी संरक्षण क्षमता 240 मि० टन है। अन्य विभाग (आवश्यक वस्तु निगम पी० सी० एफ० आदि के 01 संग्रहण क्षमता 160 मि० टन है। जनपद में कृषि उत्पादन सहकारी समिति भी कार्यरत है।

कृषि रक्षा :

वर्ष 1988–89 में 11126 कुन्तल बीजों को रोग रहित कर बोया गया। तथा 20949 हे० भूमि में पौधों की सुरक्षा की गयी। जनपद में 16 स्प्रेयर्स भी वितरित किये गये।

भूमि संरक्षण कार्यक्रम :

वर्तमान समय में यह कार्य जनपद में भूमि संरक्षण विभाग एवं वन विभाग द्वारा चलाया जा रहा है। यह इकाइयां स्वतन्त्र डाल के समेट के आधार पर वर्नीक्रण, उद्यानीकरण चारागाह विकास दीवालबन्दी, भूमि समतलीकरण के आधार पर कई प्रकार के भूमि संरक्षण विभाग द्वारा बर्ष 88--89 में 1815 हैक्टियर भूमि में सर्वेक्षण एवं नियोजन कार्य किया गया है। 17.60 हे० विकास नाली निर्माण एवं 68 पक्की संरचनायें की गयी।

उद्यान एवं सब्जी उत्पादन :

कृषि की अपेक्षा क्षेत्रफल एवं सब्जी उत्पादन के लिये अधिक उपयोगी है। मैदानी एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अलग-अलग जलवायु होने के कारण सब्जी उत्पादन यहां पर साल भर चल सकता है। मटर, गोभी, घाटी क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में होती है तथा गर्मियों में ऊँचाई वाले भागों में उगायी जाती है जिसका अधिकतर बाजार मूल्य उस मौसम में प्राप्त किया जा सकता है किन्तु सिंचित क्षेत्र कम होने से कार्यक्रम को अधिक तीव्रता से नहीं अपनाया जा सकता है। वर्तमान में उन्नत काश्तकार पानी के छोटे-छोटे श्रोतों हौजों नालियों से जोड़कर इस कार्यक्रम को बढ़ावा दे रहें है। फिर भी पहाड़ के छोटे-छोटे नगरों व कस्बों में सब्जी की आपूर्ति अधिकतर मैदानी भागों से हो रही है। यदि इस कार्यक्रम को बढ़ावा देने के प्रयत्न यदि ठोस ढंग से किया जाय और प्रचार प्रसार हेतु अच्छे प्रदर्शन किये जांय तो यह कार्य यहां पर बहुत उन्नति कर सकता है और कृषि की अपेक्षा अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। इसी प्रकार उद्यान विकास के अन्तर्गत अधिक से अधिक क्षेत्र का आच्छादन कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। साथ ही भूक्षरण की समस्या कुछ हद तक समाप्त हो सकती है। वर्ष 1988--89 में 6.60 हजार हेक्टियर क्षेत्र को शाक भाजी के अन्तर्गत लाया गया जिसमें 18.20 हे० मी० टन उत्पादन हुआ तथा फलोउत्पादन में 20.85 हजार हेक्टियर क्षेत्रफल के अन्तर्गत 37.57 हे० मी० टन उत्पादन किया गया। इस प्रकार शाक भाजी के अन्तर्गत प्रति हेक्टियर उत्पादन 3.0 मि० टन तथा फलोत्पादन के अन्तर्गत प्रति हेक्टियर उत्पादन 1.8 मि० टन रहा।

पशुपालन

जनपद में पशुपालन का अत्यधिक विकास नहीं है। जनपद में पशुधन एवं कुक्कुट आदि पक्षियों की संख्या को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

जनपद में पशुधन एवं कुक्कुट आदि पक्षियों की संख्या पशुगणना

वर्ष	गोजातीय देशी				गोजातीय क्रासवीड दोगली			
	3 वर्ष से अधिक नर	3 वर्ष से अधिक मादा	बछड़े एवं मादा	कुल	3 वर्ष आयु के नर	3 वर्ष से अधिक के मादा	बछड़ा एवं बछियाँ	कुल
1978	115131	46183	43191	304505	—	—	—	—
1982	110746	142053	11306	375105	2699	1702	1679	608
1988	98262	127209	99929	325400	1309	1280	913	350

महिला जातीय

वर्ष	गोजातीय	3 वर्ष से अधिक नर	3 वर्ष से अधिक मादा	पडवाँ और पडवी	कुल	देव	मेड क्रामवीड
1978	304505	1875	43824	5363	1062	42914	—
1982	381185	1504	45513	24201	71218	44845	3983
1988	328902	3371	34171	20885	58427	31260	2360

वर्ष	कुल भेड़	कुल बकरा, एवं बकरियाँ	कुल घोड़े	सुअर देशी		सुअर कुल	कुल अन्य सुअर पशु	कुल
1978	42914	189076	724	50	—	150	113047	701470
1982	48820	179080	693	357	140	497	556	682057
1988	33620	152980	931	1497	184	1681	6399	582940

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D—7828
DOC, No .....
Date 27-10-93

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि जनषद में पशुगण पर हर वर्ष उत्तरोत्तर वृद्धि नहीं हो पा रही है। यहां तक उनकी संख्याओं में उत्तरोत्तर ह्रास हो पा रहा है।

जनपद में 1988 की पशु गणना के अनुसार गोजातीय देशी 732500 गोजातीय क्रासवीड (दोगली) 3502 महिला जातियां 58427 देशी 31260 भेड़ क्रासवीड 7360 भेड़ 33620 बकरा बकरियां 152980 घोड़े 931 सुअर देशी 1497 सुअर क्रासवीड 1681 सुअर 6399 कुल 582940 है।

जनपद में 1978 व 1982 में क्रमशः कुल पशु 701470 तथा 682057 है।

वर्ष	कुल मुर्गे मुर्गियाँ एवं चूजे	अन्य कुक्कट	कुल कुक्कुट
1978	30273	10289	40562
1982	39607	—	39607
1988	36267	73	36340

जनपद में पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवाएँ :

जनपद में पशु चिकित्तसालय एवं अन्य सेवाओं को निम्नलिखित सारिणी में देखा जा सकता है।

जनपद में पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवाएँ

वर्ष	पशु चिकि०	पशुधन विकास क्षेत्र	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र/उप्र०	पशु प्रजननी	भेड़ वि० क्षेत्र	सुअर वि० क्षेत्र	पिगरों युनिट	फोल्ट्री युनिट
1986–87	26	62	10	—	07	—	43	747
1987–88	32	68	32	—	07	—	43	747
1988–89	32	68	34	—	08	—	43	902

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में कुल 32 पशु चिकित्सालय पशु-धन विकास केन्द्रों की संख्या–68 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र/उपकेन्द्र 34 भेड़ विकास केन्द्र 08 गिगरों यूनिट संख्या–38 पोल्ट्री यूनिट संख्या–6।4 है।

इन सभी केन्द्रों में वर्ष 1988–89 में 1, 05768 पशुओं की चिकित्सा की गयी तथा रोगों से रोकथाम की गयी 60439 विविध रोगों के टीके लगाये 1797 पशु कृत्रिम रूप से तथा 3128 पशु नैसर्गिक रूप से गर्भित किये गये।

इसके अतिरिक्त जनपद में सीमान्त एवं लघु कृषकों की आय में बृद्धि करना तथा उन्हें सहायक धन्धों एवं रोजगार के अवसर प्रदान करना भी है पशुपालन कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों में है। वर्ष 1988–89 में लघु एवं सीमान्त कृषकों को एकीकृत ग्राम्य विकास योजना में 1184 दुधारू पशुओं का वितरण किया गया, 13 कुक्कुट इकाइयों की स्थापना की गयी इसी प्रकार 2713 परिवारों को उक्त योजना से लाभान्वित किया गया।

दुग्ध सम्पूर्ति की दृष्टि से जनपद की स्थिति अत्यन्त अविकसित एवं चिन्ताजनक हैं। 17 दुग्ध सहकारी समितियों का जिले में गठन किया गया जिनकी सदस्यता 1000 है। वर्ष 1988–89 में इन समितियों द्वारा 1.20 लाख लीटर दुग्ध की सम्पूर्ति की गयी तथा 1640 हजार रुपये मूल्य का उत्पाद किया गया। अभी इस क्षेत्र में यथेष्ठ उपलब्धि हेतु काफी प्रयास की आवश्यकता है ग्रामीण क्षेत्र में यातायात की सुविधा से तथा ग्रामों में उन्नत नसल के पशुओं की कमी एवं हरे चारे की कमी है। जिससे दुग्ध सम्पूर्ति अभी तक अविकसित दशा में है। पशुपालन विभाग एवं दुग्ध विकास के सुदृढ़ प्रयासों से ही इस कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है।

वानिकी

जनपद पौड़ी गढ़वाल में 455186 हे० भूमि वनों के अन्तर्गत आती है जबकि जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 742607 हे० है इससे स्पष्ट होता है कि कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 61 प्रतिशत भाग में वन है।

वन यहाँ की प्रमुख प्राकृतिक सम्पदा है। वनों का इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था से गहरा सम्बन्ध है। वनों के द्वारा ही यहाँ की जल सुलभता, भूमि की सुरक्षा पर्यावरण सन्तुलन इत्यादि से गहरा सम्बन्ध है। वनों के क्षेत्रफल में वन विभाग के प्रबन्ध के अन्तर्गत 366212 हे० क्षेत्रफल लाया जा रहा है। शेष भूमि में सामान्य छोटे-छोटे पेड़ अथवा बन्जर व अनुपयोगी झाड़ियाँ हैं। इनकी सघन वनीकरण करना व वनों का संरक्षण होना परमावश्यक है।

वनों का सीधा लाभ स्थानीय लोगों को नहीं मिल पाता है केवल मवेशियों को चारे के लिए घास पत्ती एवं ईधन के लिए लकड़ी आदि ही मिल पाती है। इसके अतिरिक्त विभागीय मानकों से प्रतिवर्ष वनों में उपयोगी कार्यों हेतु लकड़ी इमारती लकड़ी तथा चीड़ के पेड़ों से लीसा प्राप्त किया जाता है—

वनों से वर्ष 88–89 एवं 89–90 में उत्पाद गढ़वाल वन प्रभाग को प्राप्त हुआ—

	1988–89	1989–90
1. लीसा	3058.43	2788–27.25 कुन्तल
2. चीड़	6086.3077 घन मी०	4960909 घन० मी०
3. जड़ी बूटी	1017 कुन्तल	1117 कुन्तल
4. देवदार		17.1177
5. फर		284382
6. सुरई		6.005

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वन प्रभाग विभाग को वनों से उपरोक्त उत्पाद प्राप्त हुए। वनों के प्रतिवर्ष दोहन से भविष्य के लिए बढ़ते हरे वन आश्रित उद्योगों की पूर्ति तथा ईधन के लिए उपयोगी वनों वृक्षों का रोपण बहुत किया जा रहा है इसके लिए बृहद वृक्षारोपण सामाजिक वानिकी तथा विभागीय कार्यक्रमों में वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। 88--89 में वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत 10406 हेक्टियर भूमि में 207 लाख पौधे रोपित किये गये।

जनपद पूर्णतया पर्वतीय होने के कारण मत्स्य पालन का कोई कार्यक्रम नहीं है।

खनिज

कतिपय जनपद के पुराने अभिलेखों से विदित है कि जनपदमें चूना, पत्थर, लोहा, तांबा, सीसा तथा सोना पाये जाने की सम्भावना है किन्तु जनपद में कोई खनिज नहीं पाया जाता है। दूधातोली पर्वत के दक्षिण भाग में चाँदी, जस्ता और सीसा विद्यमान है। यातायात एवं आवश्यक सर्वेक्षण के आभाव में यहाँ पर कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है, परन्तु सम्भावना की जा रही है कि भविष्य में यातायात की सुविधा हो जाती है तो सर्वेक्षण कार्य में प्रगति ला कर खनिजों की खोज की जा सकती हैं। वर्तमान समय में भूगर्भ शास्त्री इस जनपद में जहाँ यातायात की सुविधा उपलब्ध है वहाँ पर अपने सर्वेक्षण कार्य कर रहे हैं क्योंकि यहाँ पर अत्यन्त दुर्गम स्थान हैं, जहाँ पर जाना बड़ा मुश्किल एवं असम्भव सा है, जहाँ पर खनिजों के भण्डार होने के प्रमाण हैं।

उद्योग धन्धे

औद्योगिक क्षेत्र एवं औद्योगिक आस्थान, उद्योगों की महत्ता को देखते हुए सरकार ने इस जनपद में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने की व्यवस्था की है। उद्योगों में क्रान्ति की सम्भावनाओं को देखते हुए उ० प्र० सरकार राज्य औद्योगिक विकास निगम के प्रत्येक जनपद मे उद्योगों को विकसित करने की पहल की है। उसी के परिप्रेक्ष में पौड़ी जनपद में भी औद्योगिक आस्थानों की स्थापना की जा रही है। नये उद्यमों को जोखिम भरे उद्योगों के स्थान पर लगाने के प्रयास किये जा रहे हैं। तथा अनुकूल परिस्थितियाँ व सुविधाएँ उपलब्ध करायी जा रही हैं। जनपद में औद्योगिक आसंस्थानों में बचे हुए भूखण्ड शीघ्र ही उद्यमियों को आबंटित हो जायेंगे। इसके लिए सरकार की ओर से प्रयास जारी है।

साथ ही सरकार प्रत्येक विकास खण्ड में एक मिनी औद्योगिक आस्थानों की स्थापना की योजना बना रही है। जिससे वहाँ के ग्रामों के निवासियों को रोजगार उपलब्ध कराया जा सके तथा उनका विकास किया जा सके। इसके लिए सरकार प्रत्येक विकास खण्ड में अच्छी परिवहन व संचार व्यवस्था उपलब्ध करवा रही है।

आद्यौगिक आस्थानों का विवरण

क्र० सं०	औद्योगिक आस्थानों का नाम	सैड	प्लाटों की संख्या
1—	सिताबपुर कोटद्वार गढ़वाल (07 एकड़)	8	26
2—	श्रीकोट गंगानाली श्रीनगर गढ़वाल		इसमें 11 एकड़ भूमि उपलब्ध है जिसमें से 4,29 एकड़ भूमि पर्वतीय विकास विभाग को मिनी सचिवालय हेतु कब्जा दिया जा चुका है। शेष भूखण्ड का विकास कार्य यू० पी० एस० आई० डी० सी० द्वारा प्रारम्भ किया जा चुका है।

उ० प्र० सरकार द्वारा किये जा रहे विकसित औद्योगिक क्षेत्र

क्र० सं०	औद्योगिक क्षेत्र का क्षेत्रफल	शेडों की संख्या	प्लाट संख्या
1—बलभद्रपुर कोटद्वार 27 एकड़		20 शेड	84
2—जसोधरपुर कोटद्वार 78 एकड़			80 प्रतिशत आबंटित निगम द्वारा इसका विकास कार्य किया जा रहा है।

मिनी औद्योगिक आस्थानों की प्रगति

क्र. सं.	वर्ष	स्थल	प्रगति
1.	1985-86	1. लैन्सडाउन 2. जयहरीखाल	निजी भूमि का चयन हो चुका है तथा शीघ्र अधिग्रहण प्राप्त होने की सम्भावना है।
2.	1986-87	1. दुगड्डा-1 2 ऐकेश्वर 3. पौड़ी	भूमि चयन का कार्य प्रगति पर है। भूमि विकास हेतु यू.पी.एस.आई.डी.सी. को हस्तान्तारित की जा चुकी है।
3.	1987-88	1. खिर्सू 2. द्वारिखाल	राजस्व विभाग की धारा—17 (4) का प्रकाशन हो चुका तथा अग्रिम कार्यवाही की जा रही है।
4.	1988-89	1. कल्जीखाल 2. पोखड़ा 3. पौड़ी।	भूमि चयन के सम्बन्ध में राजस्व विभाग के माध्यम से कार्यवाही चल रही है।

वृहत एवं मध्यम उद्योग :

जनपद में बड़े तथा मध्यम स्तरीय कई उद्योग स्थापित हो रहे हैं जो कि कृषि, वस्त्र, वन, पशुधन, खनिज, एवं रसायन पर आधारित हैं। जिससे यहां के अधिक से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो सके।

जनपद सें वर्तमान में स्थिति वृहत एवं मध्यम उद्योगों के नाम, स्थान, उत्पादन पूंजी, विनियोजन, एवं रोजगार सृजन कच्चे माल की आवश्यकता वित्तीय संस्थान आदि का विस्तृत विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

बृहत एवं मध्यम उद्योग

क्र.सं.	उद्योगों का नाम	स्थान	उत्पादित वस्तु	वार्षिक क्षमता लाख रुपये	पूंजी	विनियोजन	रोजगार	कच्चे माल की
1	2	3		4	5	6		7
1.	मै. भारत इलैक्ट्रोनिक लि. बलभद्रपुर कोटद्वार वृहत (उद्योग)	पी.सी.एम. आर.आर. बी.ई.एल.टी.		1951.5	2000.00	482		जनपद में माल स्थानीय श्रोतों से न उपलब्ध होने के कारण इकाइयों को माल जनपद के बाहर से मंगाना पड़ता है।
2.	मै. पलशडोर फैक्ट्री कोटद्वार गढ़वाल मध्यम उद्योग	पलशडोर	पैकिंग केसेज	250.00	200.00	200		
3.	मै. इण्डिका केमिकल इण्डस्ट्रीज प्रा. लि. कोटद्वार	परलाइट	फिल्टराईज्ड एक्सपेडैन्ड प्रोडक्ट्स	150.00	125.00	20		
4.	मै. स्वास्तिक पेलीरेप प्रा.लि. कैण्डी रोड	वोवन सेक्स	पेचरिक टेप	120.00	125.00	15		

जनपद में चार ही बृहत एवं मध्यम स्तरीय औद्योगिक इकाइयां ही कार्यरत हैं। इनमें मात्र 712 लोगों को ही रोजगार मिल पाया है। जनपद में कच्चे माल की उपलब्धता न होने के कारण कोई भी उद्योग विकसित नहीं हो पा रहा है। कच्चा माल बाहर से ही आयात करना पड़ता है जिससे उत्पादन की लागत बढ़ जाती है।

जनपद में स्थापित होने वाले बृहत एवं मध्यम उद्योगों में 16 उद्योग लगाये जायेंगे और जिनमें 172,48,000 रुपये की पूंजी लगायी जायेगी और 370 व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा इनमें से केवल एक ही इकाई जनपद में स्थापित हुई है। शेष उद्यमियों ने अभी तक उद्योग स्थापित नहीं किये हैं।

कार्यान्वयन के अन्तर्गत वृहत एवं मध्यम स्तरीय इकाईयां :

दीर्घ एवं मध्यम उद्योग को लगातार उत्पादन बढ़ाने एवं बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिये उद्योग विभाग महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है, सरकार द्वारा भी अर्द्ध संरचनात्मक उद्योगों को विकिसित करने के लिये प्राथमिकता दी जा रही है ।

पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण जनपद में विभिन्न स्तरों पर कार्यान्वयन के अन्तर्गत वृहत एवं मध्यम स्तरीय इकाइयों का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है—

क्र.सं.	उद्योगों का नाम	पूंजी विनियोजन लाख रुपये में	रोजगार	कार्य का विवरण
1	2	3	4	5
1.	मै. दुर्गाटेक्सटाइल कोटद्वार	25.0	25	टैक्सटाइल सिंथेटिक
2.	मै. मोहन वायर इण्डस्ट्रीज कोटद्वार	4.20	10	वायर ड्राइंग
3.	मै. एन.एस. इलैक्ट्रोनिक्स कोटद्वार	4.80	10	केबिनेट फोर कोलक्स
4.	मै. रूचिका इण्टरप्राइजेज ,,	10.70	15	नाइलोन काटन सौ
5.	मै. कोटद्वार केमिकल्स ,,	2.0	16	सलफर रोल
6.	मै. अपहित लैबोरेट्रीज ,,	9.0	10	कान्टेक्ट लैंस
7.	मै. जूपिटर इण्डस्ट्रीज ,,	10.00	15	नौनफियरस वायर ड्राइविंग एवं पी.बी.सी केबिल
8.	मै. ए.बी.एम. इण्डस्ट्रीज ,,	34.00	34	यूटेसिल सर्किल एण्ड सीट्स
9.	मै. गढ़वाल मेंटल इण्डस्ट्रीज ,,	25.00	24	ब्रास ट्यूब
10.	मै. राहुल आइस फैक्ट्री ,,	5.00	25	आइस एण्ड आइसक्रीम
11.	मै. हिलस्टेट फूड इण्ड. केसरपुर पौड़ी	5.20	20	कनफेक्सनरी
12.	मै. गढ़वाल मेटल इण्ड. कोटद्वार	7.60	24	ब्रास टियूब
13.	मै. कोटद्वार ऑयल एक्सट्रेंशन ,,	18.35	18	एसेन्सियल आयल
14.	मै. भागीरथी प्लाईवुड प्रा.लि. ,,	34.00	70	प्लाइवुड
15.	मै. सिंह वायर इण्ड. कोटद्वार	6.70	10	पी.बी.सी. वायर

16.	मै. रानीगंज केमिकल्स प्रा.लि. ,,	32.00	70	सोडियम डाईक्रोमा एण्ड सोडियम सल्फेट
17.	मै. शिवालिक सीमेन्ट प्रा.लि. कोट-	30.00	25	सीजन्ट विल्डरपोटी
18.	मै. पूरन इण्ड. कोटद्वार	2.93	11	सत्ता मैनुयुफैक्चरिंग
19.	मै. पारस प्रोडक्टस कोटद्वार	14.15	10	सोयाबीन
20.	मै. हिल अभियांत्रिक कोटद्वार	2.70	49	टी.बी. कलम्बाइंड

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश औद्योगिक इकाइयां दुगड्डा विकास खण्ड व कोटद्वार में स्थित है क्योंकि कोटद्वार मैदानी भाग हैं यातायात का केन्द्र है. उद्योगों के लिये यहां पर कच्चा माल इत्यादि सुविधा से प्राप्त होता है कोटद्वार तक रेलवे लाइन है जहां पर कच्चा माल रेलवे द्वारा सुविधा से मंगाया जा सकता है ।

लघु स्तरीय उद्योग

जनपद पौड़ी गढ़वाल में पहले उद्योगों के नाम पर सिर्फ कृषकों द्वारा हस्तकला में निर्मित वस्तुयें बनायी जाती थी इनमें मुख्यत: बढ़ईगिरी आदि की बस्तुयें बनायी जाती थी लेकिन वर्तमान समय में परिस्थितियां बदल चुकी हैं सरकार लघु उद्योगों को स्थापित करने के लिये उद्यमियों को हर सम्भव सहायता प्रदान कर रही है । जनपद पौड़ी गढ़वाल में अब तक बहुत सारे उद्योग स्थापित हो चुके हैं लघु उद्योगों के क्षेत्र में जनपद में पिछले वर्षों की अपेक्षाकृत उद्योग प्रगति पर है । इन उद्योगों से यहां की क्षेत्रीय जनता को रोजगार प्राप्त हो रहा है ।

इस समय जनपद में 1227 लघु उद्योग स्थापित हो गये हैं जिनमें लगभग 52700 व्यक्तियों को रोजगार तथा 5 करोड़ रुपये का पूंजी विनियोजन हुआ है वर्गवार इकाइयों का विश्लेषण निम्नवत् है ।

वर्गवार

क्र.सं.	उद्योगों का नाम	संख्या	प्रमुख उद्योग
1.	2	3	4
1.	कृषि पर आधारित	110	राइस मिल, दाल मिल, कृषि यंत्र, तेल, तम्बाकू, गता उद्योग,
2.	वन आधारित	150	आरा मिल, लकड़ी का फर्नीचर, बांस रस्सी सुतली, भवन, सामग्री पेन्सिल स्टेशनरी ।

1	2	3	4
3.	खानिज पर आधारित	20	सीमेन्ट, जाली, चूना उद्योग
4.	पशु पर आधारित	50	चर्म कला उद्योग, कलात्मक वस्तुएँ, अटैची, सूटकेस उद्योग ।
5.	मैकेनिकल पर आधारित	150	बस बाड़ी मेकर, टिन, कन्टेनर्स, कृषि यन्त्र डीजल, इंजन, लोहे की कील, बिण्डोगेट, ग्रिल स्टील, फर्नीचर, आलमारी, बक्शे, कुर्सी, रिपिट, नट बोल्ट इत्यादि ।
6.	इलेक्टिकल/इलेक्ट्रानिक्स पर आधारित	50	रेडियो रिपेयरिंग, मोटर वाइंडिंग, टी० वी० रिपयरिंग, एन्टीना, बैटरी, इत्यादि ।
7.	रसायन पर आधारित	50	आयुर्वेदिक दवाइयाँ, चूर्ण अगरबत्ती, धूप रोशनायी, साबुन, फिनाइल, सुगन्धित तेल, सौन्दर्य प्रशाधन, डिटरजेन्ट पाउडर, टरपिन टाइन, वार्निस, पेन्ट इत्यादि ।
8.	टैक्सटाइल पर आधारित	50	हथकरघा, ऊनी शाल, कालीन, मफलर, सिले सिलाये वस्त्र, बेड शीट, जुराफ, स्वेटर इत्यादि ।
9.	खाद्य पर आधारित	236	पापड़, बड़ी, कन्फैक्सनरी, डबलरोटी, लेमन, मिर्च मसाला, उद्योग अचार, मुरब्बा आलू, चिप्स, बेकरी, आटा चक्की इत्यादि ।
10.	प्लास्टिक/रबड़ पर आधारित उद्योग	20	पी० बी० सी० सूच, फुटवियर, इकाई चप्पल, पालिथिन बैग, शीटस टायर, रिट्रिडिंग, सुतली, प्लास्टिक केन इत्यादि ।
11.	विविध		साइकिल रिपेयरिंग, आटोमोबाइल्स, वर्कशाप, फाउटेन पेन, स्टेशनरी, प्रिंटिंग प्रेस इत्यादि ।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में कुल 1227 लघु औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत हैं । ये प्रमुखतया कोटद्वार विकास खण्ड दुगड्डा में स्थित हैं इसमें लगभग 5276 व्यक्ति रोजगार में लगे हुए हैं ।

लघु उद्योगों की प्रगति :

जनपद में लघुस्तरीय उद्योगों की प्रगति विकास खण्डवार निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है—

विकास खण्डवार उद्योगों की प्रगति

क्र० सं०	विकास खण्ड	1. 4. 85	85--86	86--87	87--88	88--89	89--90
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	दुगड्डा	104	28	47	58	60	64
2.	यमकेश्वर	11	01	01	02	03	04
3.	जयहरीखाल	41	19	05	06	10	12
4.	द्वारिखाल	12	01	11	10	10	08
5.	रिखणीखाल	16	15	11	12	10	10
6.	कल्जीखाल	10	02	03	05	08	09
7.	ऐकेश्वर	23	11	04	07	10	09
8.	पोखड़ा	06	09	09	10	10	11
9.	पावौ	10	03	03	02	08	02
10.	पौड़ी	39	09	08	07	10	11
11.	थलीसैंण	18	03	03	04	05	04
12.	नैनीडांडा	19	03	08	09	09	06
13.	वीरौंखाल	21	12	07	06	12	13
14.	खिर्सू	23	11	20	15	09	05
15.	कोट	08	01	03	08	03	07
योग कुल इकाइयाँ		361	128	143	161	177	180
रोजगार सृजन		2049	360	456	494	850	895

उपरोक्त तालिका से भी स्पष्ट होता है कि लघुस्तरीय उपयोग अधिकांशत: दुगड्डा विकास खण्ड में स्थापित हैं। और सबसे कम यमकेश्वर बिकास खण्ड में स्थित हैं। लघु औद्योगिक इकाइयों की स्थापना विकास में वित्त पोषण का कार्य उ० प्र० वित्त निगम, राष्ट्रीयकृत बैंक, एवं सरकारी विभाग आदि कर रहे हैं। कच्चा माल स्थानीय रूप से जनपद में सुलभ न होने के कारण इकाइयों द्वारा कच्चा माल जनपद से बाहर खुले बाजार एवं हिन्दुस्तान स्टील ऑथारिटी इण्डिया आयात एवं अन्य श्रोतों से विभागों के माध्यम से अथवा सीधे प्राप्त की जा रही है।

हैण्डलूम सैक्टर :

इस जनपद में हैण्डलूम को अभी उल्लेखनीय विकास नहीं हुआ है। कुछ विकास

खण्डों में हथकरघा बुनकरों द्वारा कुछ इकाइयाँ चलायी जा रही है, उ० प्र० हथकरघा विकास निगम जनपद में विकास के लिए प्रयत्नशील है। जिनमें बुनकरों को सूती धागा आदि उपलब्ध कराया जाता है। तथा वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। इस जनपद में गढ़वाल मण्डल अनुसूचित जनजाति विकास निगम भी हैण्डलूम को बढ़ावा देने में अग्रसर है।

खादी एवं ग्रामोद्योग :

खादी ग्रामोद्योग आयोग/खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा उद्योगों की स्थापना हेतु व्यक्तिगत तथा औद्योगिक सहकारी समितियों को सस्ती दर पर ऋण की आर्थिक सुविधा उपलब्ध करवायी जाती हैं। उद्योगों के विषय में प्रशिक्षण सुविधा भी दी जाती है सहकारी समितियों के सचिव को सहकारी प्रशिक्षण संस्थान कानपुर तथा इन्दिरा गांधी सहकारी प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ द्वारा प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

निम्नलिखित तालिका से जनपद गढ़वाल में खादी ग्राम उद्योग द्वारा निम्न इकाइयाँ स्थापित की गयी हैं।

खादी एवं ग्रामोद्योग की इकाइयाँ

क्र० सं०	उद्योग का नाम	व्यक्तिगत	संस्था	समिति
1.	अनाज दाल प्रशोधन	98	10	—
2.	ग्रामीण तेलधानी	01	01	—
3.	तेल एवं साबुन	—	02	—
4	चमं उद्योग	129	—	—
5.	मौन पालन	27	—	12
6.	ग्राम कुम्हारी उद्योग	21	—	—
7.	लौह कष्ट कला	190	05	05
8.	रेशा उद्योग	35	—	—
9.	लीसा उद्योग	—	—	01
10.	एल्मूनियम बर्तन	01	—	—
11.	बांश बेत उद्योग	245	01	—
12.	फल प्रशोधन	11	—	—
13.	जड़ी बूटी संग्रह	—	01	—
14.	ग्राम शिल्प	—	01	01
15.	सेवा उद्योग	14	—	—
16.	अगरबत्ती	02	—	—
17.	इलैक्ट्रोनिक	01	—	—

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि खादी एवं ग्रामोद्योग की जनपद में लगभग 800 इकाइयाँ कार्यरत है तथा इनमें लगभग 1700 व्यक्ति रोजगार में लगे हुए हैं इन उद्योगों का विकास ग्रामीण क्षेत्र में अधिक है। नगरीय क्षेत्र में कम।

हस्तकला उद्योग :

जनपद में हस्तकला उद्योग भी थोड़ी बहुत मात्रा में विकसित है। निम्न तालिका से हस्तकला उद्योग की प्रगति को दिखाया जा सकता है—

हस्तकला उद्योग

क्र, सं.	उद्योगों का नाम	1988-89	1989-90
1.	वढ़ईगिरी	50	08
2.	लकड़ी की कलाकृतियाँ	20	08
3.	छपायी	15	04
4.	सिलाई कढ़ाई	15	05
6.	अन्य	50	05
योग—		150	30

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में हस्तकला उद्योग की लगभग 150 इकाइयाँ भी स्थापित हैं इस उद्योग को भी विकसित किया जा सकता हैं। इसके लिये जनपद में इच्छुक व्यक्तियों को प्रशिक्षण देकर इस उद्योग की बढ़ाया जा सकता है।

एकीकृत ग्राम्य विकास योजना एवं ट्राइसेम योजना प्रगति :

क्र. सं.	योजना का नाम	वर्ष 1988-89	उपलब्धि
1.	आई. आर. डी. उद्योग	900	1190
2.	सेवा एवं व्यवसाय	1350	1414
3.	ट्राइसेम प्रशिक्षण	600	701
4.	स्थापित इकाइयाँ	180	135

उपरोक्त तालिका से जनपद की एकीकृत ग्राम्य विकास योजना एवं ट्राइसेम योजना की प्रगति लक्ष्य के विपरीत अधिक ही है।

शिक्षित बेरोजगार युवकों को स्वत: रोजगार योजना :

इस योजना के अन्तर्गत भी काफी बेरोजगार व्यक्ति इस जनपद में लाभान्वित हुए हैं। इस योजना से बेरोजगार हाईस्कूल पास युवाओं को रोजगार करने के लिये उद्योग, सेवा, व्यवसाय 25000/-, 15000/-, 35000/- तक का ऋण जिला उद्योग केन्द्र द्वारा बैंकों के माध्यम से उपलब्ध किया जाता है जिस पर 25 प्रतिशत अनुदान भी दिया जाता है। लिये गये ऋण पर 10 प्रतिशत ब्याज लगाकर आसान मासिक किश्तों में बैंकों को ऋण वापिस करना पड़ता है इस योजना में उपलब्ध कराये गये ऋण का विवरण निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

क्र. सं0	रोजगार हेतु ऋण	83-84	84-85	85-86	86-87	87-88	88-89
1.	स्थापित उद्योग (लाभान्वित व्यक्ति सं०)	116	74	139	141	78	173
2.	पूंजी ऋण लाख रुपये	17	4.95	28.31	24.09	19.36	33.29

नगरीय क्षेत्र के दुर्बल वर्ग के व्यक्तियों को आर्थिक सहायता देने की योजना :

सरकार द्वारा संचालित नगरीय क्षेत्र के दुर्बल वर्ग के व्यक्तियों को आर्थिक सहायता देने की योजना के अन्तर्गत वर्ष 1984-85 में 195 व्यक्तियों को इस योजना से लाभान्वित किया गया जिस पर 8.87 लाख रुपये का ऋण उपलब्ध कराया गया वर्ष 1985-86 में इस योजना के अन्तर्गत 199 व्यक्तियों को लाभान्वित किया गया जिस पर 9.436 लाख रुपये का ऋण दिया गया। वर्तमान समय में यह योजना बैंकों द्वारा चलायी जा रही है।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम :

औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिये शासन द्वारा विभिन्न संस्थाओं के माध्यम सें उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्यमियों को उद्योग स्थापना सें प्रोत्साहित करना एवं नयी तकनीकी बताकर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। नयी तकनीकी बताकर उन्हें प्रशिक्षत किया जाता है। जिससे शिक्षित बेरोजगार नवयुवक इस प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित होकर औद्योगिक करण में सहायक सिद्ध हो रही हैं इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 88-89 तथा 89-90 तक प्रगति निम्नानुसार है :—

क्र. सं.	वार्षिक लक्ष्य कुल प्रगति जनपद	वर्ष	6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम		15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम				
			लक्ष्य	उपलब्ध	परीक्षि. प्रशि.	लक्ष्य	उपलब्ध	प्रशिक्षण परीक्षिर्थी	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 पौड़ी	1988-89	192	192	03	03	153	01	01	39
2.	1989-90	290	108	05	02	108	01	—	—

जनपद में नीचे दी गयी राज्यस्तरीय संस्थायें औद्योगिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

1. उ०प्र० राज्य औद्योगिक विकास निगम,
2. उ०प्र० का प्रादेशिक इण्डस्ट्रीयल एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कारपोरेशन,
3. उ०प्र० वित्त निगम,
4. जनपद पौड़ी में यू०पी०एफ०सी० द्वारा औद्योगिक इकाइयों को स्वीकृत ऋण का विवरण।

क्र० सं०	वर्ष	इकाइयों की संख्या	धनराशि लाभ
1.	1985-86	10	31.135
2.	1986-87	23	55.032
3.	1987-88	03	3.320
4.	1988-89	12	29.000
5.	1989-90	04	19.500

5. उ०प्र० राज्य हथकरघा निगम,
6. उ०प्र० निर्यात निगम,
7. उ०प्र० टैक्सटाइल निगम,
8. उ०प्र० लघु उद्योग निगम,
9. उ०प्र० इलैक्ट्रोनिक्स निगम,
10. उद्योग निदेशालय,

11. उ०प्र० औद्योगिक परामर्श निगम,

12. उ०प्र० राज्य लैदर विकास मार्किटिंग निगम,

13. जिला उद्योग केन्द्र की नये उद्योग को बढ़ाने की योजना ।

उपरोक्त सभी संस्थायें औद्योगिक विकास में सहायक हैं जनपद में सभी कार्यरत इकाइयों को औद्योगिक विकास निगमों द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है ये सभी निगम औद्योगिक इकाइयों को सुलभ ऋण उपलब्ध कराना तथा परामर्श देना सभी कार्य करते हैं ।

संसाधन :

जनपद में विशेष कच्चा माल जिससे बड़ा उद्योग स्थापित हो सके उपलब्ध नहीं है केवल लकड़ी एवं खनिज पदार्थ ही यहाँ पर उपलब्ध हैं । किन्तु उनके दोहन/कटान पर प्रतिबन्ध होने के कारण उसकी उपलब्धता सम्भव नहीं है औद्योगिक इकाइयों को कच्चा माल उपलब्ध कराने हेतु उ०प्र० लघु उद्योग कारपोरेशन जिला उद्योग केन्द्र राष्ट्रीयकृत बैंकों के माध्यम से एवं खादी एवं ग्राम उद्योग बोर्ड द्वारा यह सुविधा प्रदान की जाती है । इसके अतिरिक्त कच्चा माल उद्योग निदेशालय उ०प्र० कानपुर द्वारा भी उपलब्ध कराया जाता है जैसे कोयला, सीमेन्ट एवं मोम का आबंटन भी मुख्यालय द्वारा किया जाता है । औद्योगिक इकाइयों को उत्पादित तैय्यार माल की बिक्री हेतु सहायता प्रदान की जाती है । तथा उत्पादित वस्तुओं का रेट कनट्रेक्ट कराने में सुविधा प्रदान की जाती है । पंजीकृत सामान पर प्रदेश के लघु उद्योग के माध्यम से बड़े उद्योगों के समक्ष 15 प्रतिशत वरीयता दी जाती है । पर्वतीय क्षेत्र में रोजगार दिलाने हेतु निदेशालय द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पादन एवं प्रशिक्षण केन्द्रों में कालीन बुनाई, शाल बुनाई, पापड़ी काष्ट कला एवं मूर्तियों आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को छात्र वृति भी दी जाती है तथा बाद में स्वंय अपना उद्योग स्थापित करने के लिये विभाग की ओर से उचित मार्ग दर्शन एवं आर्थिक सुविधा भी प्रदान की जाती है ।

क्र० सं	विकास खण्ड का नाम	संसाधन पर आधारित उद्योग	मांग पर आधारित उद्योग	कुशलता पर आधारित उद्योग
1	2	3	4	5
1	—दुगड्डा	राईस मिल, आयल सोयाबीन का तेल आदि	स्टी फर्नीचर इमारती सामान	प्रेशर कुकर, रेडियो, वी. टी. आदि की रेपे.

1 2	3	4	5
2—यमकेश्वर	बांश बेंत, दोना पत्ता, टोकरी, स्टोन क्रेसर	पैकिंग बाक्स मरम्मत आदि	पावर लूम टी० वी० हौजरी आदि ।
3—जहरीखाल	वन पर आधारित जड़ी बूटी पर आधारित	लैदर, सोल,चमड़े का सामान	इकाइयों का उत्पादन
4—द्वारिखाल	फ्रूटप्रेजरवेशन जड़ी बूटी आदि ।	खिलौना, रेडियो टी० वी० सामान	इंक, टूथपेस्ट, मंजन, सम्बन्धी
5—रिखणीखाल	वन की लकड़ी एवं जड़ी बूटी पर आधारित	स्टील फैब्रीरिकेशन रेडियो, टी० वी० रिपे.	रिपेरिंग
6—नैनीडांडा	दोनों पत्ता, स्टोन क्रेसर आदि ।	लैदर सूज, स्टील बाक्स फैब्रीकेशन	बॉक्स
7—वीरौंखाल	कार्ड बोर्ड, स्टोन क्रेसर, जड़ी-बूटी आदि ।	रेडिमेट गार्मेन्टस	रेडिमेड गार्मेन्टस हौजरी
8—पोखड़ा	सीमेन्ट ब्रिक्स, सीमेन्ट आदि	पॉवर लूम कृषि यन्त्र संयन्त्र	हौजरी उद्योग
9—कल्जीखाल	जड़ी.बूटी पर आधारित	पावर लूम कृषि यन्त्र	हौजरी, रेडिमेट गार्मेन्टस
10—ऐकेश्बर	जड़ी-बूटी पर आधारित	हिटर, पिनकुसन, टी.वी. सैट्स मरम्मत	कृषि यन्त्र, रेडियो गार्मेन्टस
11—पौड़ी	हौजरी, रेडिमेड गार्मेन्ट	पत्तल, रेडिमेड गार्वमेन्ट आदि ।	कृषि यंत्र, टी० वी० रेडियो, रिपेरिंग,

1 2	3	4	5
12—पावौ	वनस्पति जड़ी-बूटी पर आधारित	कृषि यंत्र, पिनकुशन आदि	स्टेबलाइजर, डिटर-जेन्ट पाउडर आदि ।
13—थलीसैंण	फूड प्रजेवेशन, वनस्पति एवं जड़ी बूटी	कृषि यंत्र, रेडियो, टी० वी० गार्मेन्टस	रेडियो,टी० वी० रिपेरिंग
14—खिर्सू	स्टोन क्रेसर, वनस्पति, जड़ी बूटियों पर आधा-रित	—	लकड़ी के समान दोनापत्ता बनाना
15—कोट	स्टोन क्रेसर, वनस्पति जड़ी बूटी	नट बोल्ट, स्टील फर्नी-वालस हीटर पोलीथीन बैग इत्यादि ।	चमड़े का सामान, पैंकिंग बाक्सेज,

शिक्षा

महाभारत में केदारनाथ खण्ड के चार विद्या केन्द्रों का वर्णन है उनमें से कर्णवा-आश्रम, भरतद्वाज आश्रम, बद्रीकाश्रम, एवं शुक्राश्रम, लगभग सभी युगों के प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि उत्तराखण्ड की तपोभूमि में सिद्धों सन्तों को सिद्धि मिली है यहाँ के सिद्ध पीठ शक्ति पीठ, अध्यात्म विद्या के केन्द्र थे। किन्तु आज या तो उनका अस्तित्व ही समाप्त हो गया है अथवा विस्मृत हो गये हैं। शोधकर्ताओं ने इस क्षेत्र के लगभग 121 गुरूकुलों का उल्लेख किया है।

सन् 1964 ई० तक जनपद में चमोली सहित 43 लोअर तथा प्राइमरी स्कूल थे। सन् 1871 में तीन मीडिल स्कूल थे और सन् 1910 तक 106 प्राइमरी स्कूल, 159 मीडिल स्कूल 37 अपर प्राइमरी स्कूल तथा दो हाईस्कूल थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति तक अंग्रेजों द्वारा जनपद में 525 प्राइमरी स्कूल 16 मीडिल स्कूल स्थापित किये जा चुके थे।

जनपद में स्वतंत्रता के बाद से आज तक शिक्षा में प्रगति :

जनपद पौड़ी गढ़वाल के शैक्षिक संस्थाओं की प्रगति निम्नलिखित तालिकाओं से स्पष्ट की जा सकती है :

क्र०सं०	विद्यालय	वर्तमान गढ़वाल धन चमोली केवल वर्तमान गढ़वाल में				
		1949	1959	1969	1979	1989
1.	जू० बेसिक स्कूल	610	750	926	1096	1322
2.	सि० बे० स्कूल	36	65	104	128	236
3.	हा० स्कूल, इण्टर कालेज	05	20	53	113	185
4.	महाविद्यालय	—	—	01	05	05
5.	विश्वविद्यालय	—	—	—	01	01
6.	संस्कृत विद्यालय	—	—	—	—	06
7.	दीक्षा विद्यालय	—	—	—	02	02

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आज तक जनपद में राज्य सरकार द्वारा शिक्षा प्रसार अत्यन्त तीव्र गति से किया गया विशेषकर सातवीं दशक में आज जनपद के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में भी माध्यमिक स्तर की शिक्षा सुविधा उपलब्ध है। विभाग एवं सरकार का यह एक सराहनीय कदम है।

जनपद में विकास खण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाऐं

क्र. सं.	वर्ष	जू. बे. स्कूल		सि. बे. स्कूल		हा. इण्टर		महाविद्यालय	विश्वविद्यालय
		कुल		कुल	बालिका	कुल	बालिका		
1	2	3		4	5	6	7	8	9
1.	1987-88	1285		231	71	182	11	04	01
2.	1988-89	1322		236	71	185	11	04	01
3.	1989-90	1363		241	71	203	12	04	01

विकास खण्डवार शिक्षण संस्थाएँ 1989-90

1. पौड़ी	66	15	04	08	01	—	—
2. कोट	82	14	05	10	—	—	—
3. खिर्सू	108	20	08	16	01	—	—
4. पावौ	86	13	01	11	—	—	—
5. कल्जीखाल	92	12	06	11	—	—	—
6. थलीसैंण	103	16	02	14	01	—	—
7. दुगड्डा	97	22	10	11	01	—	—
8. यमकेश्वर	95	19	06	11	—	—	—
9. द्वारीखाल	100	22	04	13	—	—	—
10. लैंसडाउन	71	14	03	12	—	01	—
11. ऐकेश्वर	78	12	01	14	—	—	—
12. पोखड़ा	59	08	04	10	—	01	—
13. रिखणीखाल	73	14	04	10	—	—	—

जिला पौड़ी गढ़वाल

जनपद में शैक्षिक संस्थाओं और कुल छात्रों की संख्या

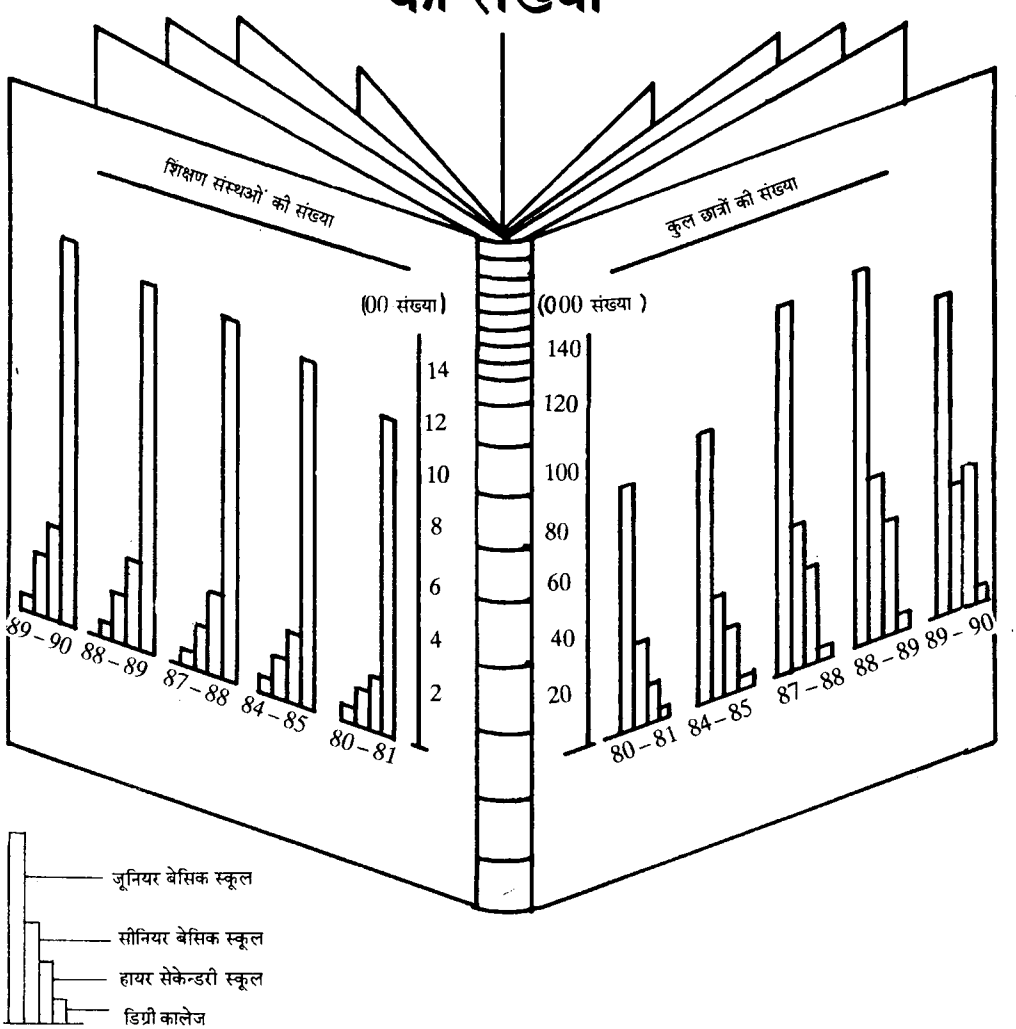

1	2	3	4	5	6	7	8	9
14. वीरौंखाल		118	14	03	22	01	01	—
15. नैनीडांडा		87	14	06	12	—	—	—
योग ग्रामीण		1315	229	67	185	05	03	—
नगरीय		48	12	04	18	07	05	01
योग जनपदीय		1363	241	71	203	12	05	01

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जूनियर बेसिक स्कूल 97 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में तथा मात्र 3 प्रतिशत नगरीय क्षेत्रों में स्थित हैं। सीनियर बेसिक स्कूल 99.07 ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 03 प्रतिशत नगरीय क्षेत्र में हैं माध्यमिक विद्यालयों में यह अनुपात शहरी क्षेत्रों में 10.20 प्रतिशत तथा 89.80 प्रतिशत क्षेत्रों (ग्रामीण) में स्थित है विश्वविद्यालय शहरी क्षेत्र में 75 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं।

छात्र संख्या :

जनपद में शिक्षण संस्थाओं में स्तरवार छात्र छात्राओं की कुल संख्या निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :

वर्ष/विकास खण्ड	कक्षा 1 से 5				कक्षा 6 से 8			
	छात्र		छात्रायें		छात्र		छात्रायें	
	कुल	अनु. जाति	कुल	अनु. जाति	कुल	अनु.जा.	कुल	अनु.
87-88	95001	11389	45:9	4506	36024	8634	16363	1983
88-89	89859	11881	45801	5244	40056	9928	19231	2450
89-90	58711	13022	54115	5454	15111	4608	12300	1882

विकास खण्ड वार मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थाओं में स्तरवार विद्यार्थी

1989—90

1. पौड़ी	2306	932	2397	352	885	162	927	132
2. कोट	2241	853	2211	322	756	183	589	164
3. खिर्सू	3525	632	3641	377	932	232	923	184
4. पावौ	3159	731	2646	282	831	317	535	47
5. कल्जीखाल	3677	1012	3666	338	768	265	789	82
6. थलीसैंण	3881	963	2547	412	863	282	412	52
7. दुगड्डा	6739	1032	6556	472	1632	532	1653	136
8. यमकेश्वर	4103	917	3058	317	1217	467	783	112
9. दांगू	4477	718	4332	218	1262	436	1050	207
10. लैंसडाउन	3557	732	3455	272	842	213	451	82
11. ऐकेश्वर	3483	852	3612	217	738	217	732	74
12. पोखड़ा	3132	663	3022	217	645	242	682	68
13. रिखणीखाल	3076	656	3449	376	968	277	636	97
14. बीरौंखाल	2878	876	2788	312	532	152	457	87
15. नैनीडांडा	3617	436	3464	378	987	312	736	81
योग ग्रामीण	54851	12005	50844	4922	13859	4290	11391	1655
नगरीय	3860	1007	3271	532	318	318	900	227
					1252			
जनपदीय	58711	13022	54115	15454	15111	12300	12300	1882

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जूनियर बेसिक स्कूल में, 58711 छात्र तथा 54115 छात्रायें हैं सीनियर बेसिक स्कूल में 15111 छात्र तथा 12300 छात्रायें अध्ययन रत हैं जूनियर बेसिक स्कूल में 1549 कुल अनुसूचित जनजाति के भी अध्ययनरत हैं सीनियर बेसिक स्कूल में भी 6490 छात्र छात्रायें अनुसूचित जाति जनजाति के हैं।

निम्न तालिका में कक्षा 9 से 12 तक के छात्र छात्राओं की संख्या तथा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं की संख्या स्पष्ट की जा सकती है।

वर्ष/विकासखण्ड	कक्षा—9 से 12						डिग्री कक्षा में	
	छात्र		छात्राएँ		छात्र		छात्राऐं	
	कुल	अनु. जा	कुल	अनु. जाति	कुल	अनु.जाति	कुल	अनु.जाति
87-88	26441	2244	10351	733	2215	157	1286	45
88-89	29139	2352	11391	813	2399	170	1386	54
89-90	32094	3219	15910	1185	3005	241	1873	93

विकास खण्डवार 1989-90 की छात्र संख्या कक्षा–9 से 12 तक महाविद्यालय तक

निम्न तालिका में कक्षा 9 से 12 तक तथा महाविद्यालय की छात्र संख्या को दर्शाया जा सकता है :—

पौड़ी	862	227	464	52	—	—	—	—
कोट	2160	203	663	42	—	—	—	—
खिर्सू	1651	308	398	36	—	—	—	—
पावौ	1052	122	549	45	—	—	—	—
कल्जीखाल	916	158	429	52	—	—	—	—
थलीसैंण	1293	112	413	12	—	—	—	—
दुगड्डा	2798	315	1052	12	—	—	—	—
यमकेश्वर	1480	129	803	26	—	—	—	—
द्वारीखाल	1187	78	449	15	—	—	—	—
लैंसडाउन	1408	131	435	31	206	17	82	03
ऐकेश्वर	1682	137	632	26	—	—	—	—
पोखड़ा	1028	182	376	32	31	02	07	—
रिखणीख	1870	158	652	21	—	—	—	—
बीरौंखाल	1720	138	507	28	16	15	01	01
नैनीडाँडा	1672	84	428	24	—	—	—	—
ग्रामीण	22787	2482	8280	554	253	24	90	04
नगरीय	9307	737	7630	630	275	017	1782	89
योग	32094	3219	115910	1185	3005	241	1873	93

उपरोक्त तालिका में माध्यमिक स्तर पर छात्र संख्या को दर्शाया गया है, तालिका से स्पष्ट होता हैं कि 9 से 10 की कुल छात्र संख्या-48004 है जिसमें से 4344 अनु० जाति के छात्र-छात्राये हैं इसी प्रकार 4878 छात्र-छात्रायें डिग्री स्तर में अध्ययन करते हैं जिसमें से 334 छात्र-छात्रायें अनु० जाति एवं जनजाति के छात्र-छात्रायें हैं।

मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक :

जनपद पौड़ी गढ़वाल में सभी शिक्षण संस्थाओं शिक्षकों को आवश्यकतानुसार कमी है फिर भी निम्न तालिका द्वारा स्तरवार शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों को दिखाया जा सकता है—

जनपद में विकास खण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक :

वर्ष विकास खण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल		सीनियर बेसिक स्कूल		हाई स्कूल	इन्टर कालेज
	कुल	स्त्रियाँ	कुल	स्त्रियों	कुल	कुल
1987-88	2782	762	899	180	2580	268
1988-89	3093	1106	1000	251	2710	289
1989-90	3162	1561	1073	399	4013	427

वर्ष विकास खन्ड	महाविद्यालय		विश्वविद्यालय	
	कुल	स्त्रियाँ	कुल	स्त्रियाँ
1987-88	84	13	132	18
1988-89	94	16	135	20
1989-90	109	29	142	26

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि जनपद में जूनियर बेसिक स्कूल में कुल 3162 शिक्षक कार्यरत हैं जिनमें से 1561 महिलायें 1601 पुरुष इसी प्रकार सीनियर बेसिक स्कूल में 107 शिक्षक कार्यरत हैं जिनमें से 674 पुरुष तथा 399 स्त्रियाँ कार्यरत हैं इसी प्रकार माध्यमिक विद्यालयों में कुल 4013 अध्यापक कार्यरत हैं जिनमें से 3786 पुरुष तथा 227 महिलायें महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में कुल 251 शिक्षक हैं जिनमें से 196 पुरुष तथा 55 स्त्रियाँ कार्यरत हैं। विद्यालय की संख्या के अनुसार जनपद में जूनियर बेसिक स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक शिक्षकों की कमी है।

———

पौड़ी जनपद में माध्यमिक विद्यालयों की सूची

1. विकास खण्ड पौड़ी :

(1) राजकीय इण्टर कालेज पौड़ी नगर,
(2) राजकीय इण्टर कालेज कालेश्वर,
(3) राजकीय इण्टर कालेज कण्डारा,
(4) राजकीय कन्या इण्टर कालेज पौड़ी नगर,
(5) राजकीय उच्चतर मा० वि० क्थार्क,
(6) राजकीय उच्चतर मा० वि० ओजली,
(7) राजकीय उच्चतर मा० वि० चरधार,
(8) राजकीय कन्या उच्चतर मा० वि० पैडूल,
(9) बी० ए० बी० इ० कालेज पौड़ी,
(10) मैसमोर इण्टर कालेज पौड़ी,
(11) जनता इण्टर कालेज ल्वाली,
(12) जनता इण्टर कालेज परसुण्डाखाल,

2. विकास खण्ड खिर्सू :

(1) राजकीय इण्टर कालेज खिर्सू,
(2) राजकीय इण्टर कालेज खेड़ाखाल,
(3) राजकीय इण्टर कालेज श्रीनगर गढ़वाल,
(4) राजकीय इण्टर कालेज सुमाड़ी,
(5) राजकीय इण्टर कालेज देवलगढ़,
(6) राजकीय कन्या इण्टर कालेज श्री नगर गढ़वाल,
(7) राजकीय उ० मा० विद्यालय बाड़ा (बणस्यूँ)
(8) राजकीय उ० म० विद्यालय पितृधार,
(9) राजकीय उ० मा० विद्यालय बरसूड़ी,
(10) राजकीय उ० मा० विद्यालय कठूली,
(11) राजकीय उ० मा० विद्यालय खण्डाह
(12) राजकीय उ० मा० विद्यालय नवाखाल,
(13) राजकीय कन्या उ० मा० वि० सुमाड़ी,

(14) जनता इण्टर कालेज भटसेरा,
(15) जनता इण्टर कालेज ढामकेश्वर,
(16) जनता उ० मा० विद्यालय जामाणखाल,

3. विकास खण्ड कोट :

(1) राजकीय इण्टर कालेज कोट,
(2) राजकीय इण्टर कालेज सबधरखाल,
(3) राजकीय इण्टर कालेज देहलचौंरी,
(4) राजकीय इण्टर कालेज देवप्रयाग
(5) राजकीय इण्टर कालेज दोन्दल,
(6) राजकीय इण्टर कालेज कमलपुर,
(7) राजकीय इण्टर कालेज जामालाखाल,
(8) राजकीय उ० मा० विद्यालय बसन्तुपुर
(9) राजकीय उ० मा० विद्यालय बहेड़ाखाल,
(10) जनता इण्टर कालेज नाहसैंण
(11) जनता इण्टर कालेज घिण्डवाड़ा,

4. विकास खण्ड पावौ :

(1) राजकीय इण्टर कालेज सांकरसैंण,
(2) राजकीय इण्टर कालेज पावौ,
(3) राजकीय इण्टर कालेज चोलूसैंण,
(4) राजकीय इण्टर कालेज चम्पेश्वर,
(5) राजकीय उ० मा० विद्यालय कालौं,
(6) राजकीय उ० मा० विद्यालय चोपड़ियूँ,
(7) राजकीय उ० मा० विद्यालय विडोली
(8) राजकीय उ० मा० विद्यालय जगतेश्वर,
(9) राजकीय उ० मा० विद्यालय ग्वालखोड़ा,
(10) जनता इण्टर कालेज सीकू (खातस्यूँ)
(11) जनता इण्टर कालेज पोखरीखेत,
(12) रा० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गड़िगांव,

5. कल्जीखाल विकास खण्ड कल्जीखाल :

(1) राजकीय इण्टर कालेज कल्जीखाल,
(2) राजकीय इण्टर कालेज कांसखेत,
(3) राजकीय इण्टर कालेज मवाधार,

(4) राजकीय इण्टर कालेज विलखेत,
(5) राजकीय उ०मा०वि० मुण्डनेश्वर,
(6) राजकीय उ०मा०वि० पुरियांडांग,
(7) राजकीय उ०मा०वि० दिउसी
(8) राजकीय उ०मा०वि० बडखोल
(9) राजकीय उ०मा०वि० खाकनीखेत
(10) जनता इण्टर कालेज जखेटी,
(11) जनता उ०मा० विद्यालय रमाडांग,
(12) जनता उ०मा० विद्यालय डांगीधार,
(13) जनता उ०मा० विद्यालय कोटागढ़,

6. विकास खण्ड थलीसैंण :

(1) राजकीय इण्टर कालेज थलीसैंण,
(2) राजकीय इण्टर कालेज तरपालीसैंण,
(3) राजकीय इण्टर कालेज चाकीसैंण,
(4) राजकीय इण्टर कालेज पैठाणी,
(5) राजकीय इण्टर कालेज बूँगीधार,
(6) राजकीय इण्टर कालेज गुलयारी,
(7) राजकीय उ०मा० विद्यालय गँगाऊँ,
(8) राजकीय उ०मा० विद्यालय हिंवालीधार,
(9) राजकीय उ०मा० विद्यालय मौजखाल,
(10) राजकीय उ०मा० विद्यालय मासौं,
(11) राजकीय कन्या उ०मा० विद्यालय, पोखरी,
(12) जनता इन्टर कालेज उफरैंखाल,
(13) उ० मा० विद्यालय उफरैंखाल,
(14) उ० मा० वि० धाधणखोत,

7. विकास खण्ड दुगड्डा :

(1) रा० इ० कालेज दुगड्डा
(2) रा० इ० कालेज कोटद्वार (सुखारो)
(3) रा० इ० कालेज मटियाली
(4) रा० इ० कालेज कण्डवाधरी,
(5) रा० इ० कालेज कुम्भीचौड़,
(6) रा० इ० कालेज वल्ती,
(7) रा० इ० कालेज सेन्धीखाल,

(8) रा० उ० मा० वि० जयदेवपुर सिगड्डी,
(9) रा० उ० मा० वि० भाण्डई,
(10) रा० कन्या इ० का० कोटद्वार,
(11) रा० कन्या उ० मा० वि० कलालघाटी,
(12) रा० कन्या इन्टर कालेज दुगड्डा,
(13) जनता इण्टर कालेज कालागढ़,
(14) जनता इण्टर कालेज मोटाढाक,
(15) जनता इण्टर कालेज दिउला पौखाल,
(16) उ० मा० वि० खोखरी (अजपर)
(17) आर्य कन्या इण्टर कालेज, कोटद्वार

8. विकास खण्ड यमकेश्वर :

(1) रा० इ० कालेज भृगुखाल,
(2) रा० इ० कालेज दिउली,
(3) रा० इ० कालेज गैण्डखाल,
(4) रा० उ० मा० वि० महादेव चट्टी,
(5) रा० उ० मा० वि० मोहन चट्टी,
(6) रा० कन्या उ० मा० वि० थलनदी,
(7) जनता इ० का० पोखरखाल,
(8) जनता इ० का० यमकेश्वर,
(9) जनता इ० का० चमकोट खाल,
(10) जनता इ० का० किमसार,
(11) उ० मा० विद्यालय बुद्धोली,

९. विकास खण्ड द्वारिखाल (ढांगू) :

(1) रा० इ० का० देवीखेत,
(2) रा० इ० का० चेलूसैंण,
(3) रा० इ० का० सिलोगी,
(4) रा० उ० मा० वि० द्वारीखाल,
(5) रा० उ० मा० वि० कुन्तणी,
(6) रा० उ० मा० वि० अमोला,
(7) रा० उ० मा० वि० कीतिखाल,
(8) रा० उ० मा० वि० किनसूर,
(9) जनता इण्टर कालेज देवीखाल भयांसू,

(10) जनता इण्टर कालेज सतपुली,
(11) उ० मा० विद्यालय काण्डाखाल,
(12) उ० मा० विद्यालय गड़कोट (भाण्डलू)

10. विकास खण्ड लैंसडाउन :

(1) रा० इ० कालेज जयहरीखाल (लैंसडाउन)
(2) रा० इ० कालेज सिद्धपुर,
(3) रा० इ० कालेज काडाखाल कौडिया,
(4) रा० इ० कालेज कमलखेत (बन्टूश)
(5) रा० इ० कालेज खौरासैण,
(6) रा० इ० कालेज अधारियाखाल,
(7) रा० उ० मा० विद्यालय थल्दा,
(8) रा० उ० मा० घेरुवा,
(9) राजकीय कन्या इण्टर कालेज लैंसडाउन,
(10) जनता इण्टर कालेज दुधारखाल,
(11) जनता इण्टर कालेज दुधारखाल,
(12) उ० मा० विद्यालय धौलखेत खाल,
(13) कैन्ट बोर्ड उ० का० विद्यालय लैन्सडाउन,

11. विकास खण्ड ऐकेश्वर :

(1) राजकीय इण्टर कालेज ऐकेश्वर,
(2) राजकीय इण्टर कालेज चैगोंतखाल,
(3) राजकीय इण्टर कालेज रीठाखाल,
(4) राजकीय इण्टर कालेज मैटाकुण्ड,
(5) रा० उ० मा० विद्यालय श्री कोटखाल,
(6) रा० उ० मा० विद्यालय मासौं,
(7) रा० कन्या उ० मा० वि० ऐकेश्वर,
(8) जनता इण्टर का० संगला कोटी (कमलपुर)
(9) जनता इण्टर का० सुरखेत,
(10) जनता इण्टर का० इन्द्रापुरी,
(11) जनता इण्टर का० सकिन्डा,
(12) उ० मा० वि० मौदाड़ी,
(13) उ० मा० वि० मवाणीधार,
(14) उ० मा० वि० सुराईडांग,

12. विकास खण्ड पोखड़ा :

(1) राजकीय इन्टर कालेज पोखड़ा,

(2) राजकीय इन्टर कालेज दमदेवल,

(3) रा० उ० मा० वि० सकनोलीखाल,

(4) रा० उ० मा० वि० जमखाल (वीरगांव)

(5) जनता इन्टर कालेज देवराजखाल,

(6) जनता इन्टर कुरियाखाल,

(7) जनता इन्टर कालेज चौबट्टालाल.

(8) जनता इन्टर कालेज कुणजखाल.

(9) जनता इन्टर कालेज तिलखोली,

(10) उ० मा० विद्यालय कोलाखाल,

(11) उ० मा० विद्यालय लियाखाल,

13. विकास खण्ड रिखणीखाल :

(1) रा० इन्टर कालेज रिखणीखाल,

(2) रा० इन्टर कालेज सिद्धखाल (चुरानी)

(3) रा० इन्टर कालेज बड़खेत,

(4) रा० इन्टर कालेज बूंगलगढ़ी,

(5) रा० उ० मा० विद्यालय डाबरी,

(6) रा० उ० मा० विद्यालय कर्तिया,

(7) रा० उ० मा० विद्यालय द्वारी पैनो,

(8) रा० उ० मा० विद्यालय कुलानीखाल,

(9) जनता इन्टर कालेज किल्वोखाल,

(10) जनता इन्टर कालेज टकोलीखाल,

(11) उ० मा० विद्यालय कंचनखेत (उनेरी)

14. विकास खण्ड वीरौंखाल :

(1) राजकीय इन्टर कालेज वीरौंखाल,

(2) राजकीय इन्टर कालेज बैजरौं,

(3) राजकीय इन्टर कालेज वेदीखाल,

(4) राजकीय इन्टर कालेज ढौण्ड,

(5) राजकीय इन्टर कालेज स्यूसी,

(6) रा० उ० मा० विद्यालय वाड़ाडांडा,

(7) रा० उ० मा० विद्यालय घोडियानखाल,

(8) रा० उ० मा० विद्यालय सैन्धार,

(9) रा० उ० मा० विद्यालय फरसाड़ी

(10) रा०उ०मा० विद्यालय भगवती तल्ला,

(11) रा०उ०मा० विद्यालय जसपुर,

(12) रा०उ०मा० विद्यालय भमरईखाल,

(13) रा०उ०मा० विद्यालय सुन्दरनगर,

(14) रा०कन्या इ०कालेज बीरौंखाल,

(15) जनता इन्टर कालेज ग्वीनखाल,

(16) जनता इन्टर कालेज ललीतपुर (खाटली)

(17) जनता इन्टर कालेज जोगीमठी,

(18) जनता इन्टर कालेज कोठिला,

(19) जनता इन्टर कालेज सिमड़ी,

(20) जनता इन्टर कालेज पाली खाटली,

(21) उ०मा०वि० चौखाल,

15. **विकास खण्ड नैनीडांडा :**

(1) राजकीय इन्टर कालेज धूमाकोट,

(2) राजकीय इन्टर कालेज खिरैरिखाल,

(3) राजकीय इन्टर कालेज शंकरपुर,

(4) रा०उ०मा०वि० कोचियार,

(5) रा०उ०मा०वि० खाल्यूंखेत,

(6) जनता इन्टर कालेज नैनीडांडा,

(7) जनता इन्टर कालेज अन्द्रौली,

(8) जनता इन्टर कालेज ज्यूदाल्यूं,

(9) जनता इन्टर कालेज किनगोड़ीखाल,

(10) जनता इन्टर कालेज हल्दूखाल,

(11) जनता इन्टर कालेज अदालीखाल,

(12) उ०मा०विद्यालय खांदरासी,

(13) उ०मा०विद्यालय कालिकाखाल,

रा०क०उ०मा०वि०	—	07
राजकीय इन्टर कालेज	—	68
रा०उ०मा० विद्यालय	—	54
रा०कन्या इ०कालेज	—	06
जनता इ०कालेज	—	47
जनता उ०मा० विद्यालय	—	20
जनता कन्या इ०कालेज	—	01
कुल योग		203

जनपद में प्राविधिक शिक्षण/संस्थान, औद्योगिक शिक्षण/ संस्थान शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान तथा उनमें भर्ती

जनपद में प्राविधिक शिक्षण संस्थान औद्योगिक शिक्षण संस्थान प्रशिक्षण शिक्षण संस्था आदि को निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

1. प्राविधिक शिक्षण संस्थान

प्राविधिक शिक्षण संस्थान	87-88	1988-89	1989-90
1. संस्था	01	01	02
2. सीटों की संख्या	106	165	240
3. भर्ती	106	189	249

जनपद में प्राविधिक शिक्षण संस्थाओं की संख्या वर्तमान समय में दो हैं—

(1) प्राविधिक शिक्षण संस्थान श्रीनगर/खिर्सू

(2) प्राविधिक शिक्षण संस्थान थलनदी

इन दोनों प्राविधिक शिक्षण संस्थाओं में सिविल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रीकल्स इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग, आटोमोबाइल इंजीनियरिंग एवं फार्मेसी आदि में डिप्लोमा सार्टिफिकेट प्रदान किये जाते हैं। वर्तमान समय में इनमें 249 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

2. औद्योगिक शिक्षण संस्थान

	1987-88	1988-89	1989-90
1. संख्या	06	06	07
2. सीटों की संख्या	1381	1398	1420
3. भर्ती	1165	1213	1287

जनपद में वर्तमान समय में सात औद्योगिक शिक्षण संस्थायें कार्यरत हैं जिनमें प्रमाण पत्र दिये जाते हैं ये औद्योगिक शिक्षण संस्थायें निम्न हैं :

1. औद्योगिक शिक्षण संस्थान श्रीनगर,
2. औद्योगिक शिक्षण संस्थान रुद्र प्रयाग,
3. औद्योगिक शिक्षण संस्थान (महिला) श्रीनगर,
4. औद्योगिक शिक्षण संस्था सल्ड महादेव,
5. औद्योगिक शिक्षण संस्था थलीसैंण,
6. औद्योगिक शिक्षण संस्था दुगड्डा,
7. औद्योगिक शिक्षण संस्था पोखड़ा ।

उपरोक्त औद्योगिक शिक्षण संस्थानों में विभिन्न ट्रेडों (पाठयक्रमों) में प्रमाण पत्र दिये जाते हैं ये पाठ्यक्रम हैं—आशुलिपिक हिन्दी, आशुलिपिक अंग्रेजी, ड्राफ्ट्स मैन सिविल डाफ्ट्स मैन मैकनिकल, सर्वेयर, फिटर, टर्नर, मशीनिष्ट, इलैक्ट्रीकल्स, वायरमैन, मोटर मैकेनिक, टूरिज्म गाइड, रेडियो, टी० वी०, प्लम्बर, वैल्डर, कटाई-सिलाई, डिडाल मैकेनिक, इलैक्ट्रोनिक्स, कटिंग एवं टेलरिंग. इम्ब्राइडरी, चीटिंग, कारपेन्टर, हैण्डवीविंग आफ काटन फैन्सी एन्ड क० फैब्रीक्स, इनविंकिंग आफ ऊलन फैब्रिन्स इत्यादि ट्रेडों में प्रमाण पत्र दिये जाते हैं वर्तमान समय में सातों औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं में 1287 छात्र तथा छात्रायें अध्ययन कर रहे हैं ।

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान

	1987–88	1988–89	1989–90
संख्या	04	04	04
सीटों की संख्या	395	405	405
भर्ती पुरुष	200	214	148
स्त्री	180	196	242

वर्तमान समय में जनपद में चार शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान चल रहे, दो शिक्षण प्रशिक्षण डिग्री स्तर के हैं जिनका संचालन विश्वविद्यालय द्वारा होता है तथा दो का संचालन बेसिक शिक्षा अधिकारी के द्वारा, ये प्रशिक्षण संस्था निम्न हैं :

1. बी. एड. शिक्षण प्रशिक्षण संस्था श्रीनगर,
2. बी. एड. शिक्षण प्रशिक्षण संस्था कोटद्वार,
3. बी. टी. सी. शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान पौड़ी (दीक्षा विद्यालय पौड़ी)

4. बी. टी. सी. शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान पौड़ी (दीक्षा विद्यालय जयहरीखाल)

उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के वर्तमान समय में 148 पुरुष तथा 242 महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

जनपद में इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा बालवाड़ी आंगन वाड़ी युवक संगठन एवं महिला मण्डल भी कार्य कर रहे हैं इन सभी की निम्न तालिका से प्रगति दिखायी जा सकती है।

जनपद समाज शिक्षा, महिला एवं बाल कल्याण कार्यक्रमों की प्रगति :

क्र. सं. मद	1988	1989	1990
1 2	3	4	5
1. प्रौढ साक्षरता केन्द्रों की संख्या	300	300	300
2. अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की संख्या	1032	1032	1141
3. बालवाडी/आंगनवाड़ी केन्द्रों को संख्या	112	112	112
4. युवक संगठनों की संख्या	2716	2871	2977
5. महिला मन्डल की संक्या	342	687	836

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत चयनित विकास खन्डों को 300 प्रौढ शिक्षा केन्द्र खोले जाते हैं। जिनमें लगभग 9000 प्रौढों को शिक्षा दी जाती हैं, पौड़ी जनपद में औनौपचारिक शिक्षा 12 विकास खन्डों में चल रहे हैं ओनौपचारिक शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिये उ० प्र० सरकार ने प्रत्येक विकास खन्ड में एक परियोजना अधिकारी का पद सृजित किया है जनपद में इस समय 1141 ओनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त बालवाड़ी/आंगन वाडी कार्यक्रमों को शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में कार्यरत हैं। जनपद में 164 बालवाड़ी/आंगनवाड़ी केन्द्र चल रहे हैं तथा 837 महिला मण्डल हैं जो सभी शिक्षा के उन्नयन एवं विकास में सहयोग कर रहे हैं ये सभी केन्द्र जनपद के ग्रामीण अंचलों में कार्य कर रहे हैं, जो कि ग्रामों के सार्वागीण विकास में सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

व्यावासायिक शिक्षा :

जनपद में वर्तमान समय में 10 विद्यालयों में व्यावासयिक शिक्षा के विभिन्न ट्रेड

चल रहे हैं, जिनमें से छः केन्द्र 88–89 में दिये गये जिनको दो लाख रुपये वर्क सेड बनाने के लिये दिये गये। तथा साथ ही उपकरण इत्यादि के लिये भी धन स्वीकृत किया गया। उन्होंने उसे व्यय भी कर दिये ये केन्द्र हैं 1. रा० इ० का० कोटद्वार, 2. रा० इ० का० देव प्रयाग, 3. रा० इ० का० लैंसडाउन, 4. रा० इ० का० श्रीनगर, 5. रा० इ० का० वेदीखाल, 6. रा० कन्या इन्टर कालेज पौड़ी शेष चार केन्द्र 1. रा० इ० का० कन्डवधारी 2. रा० इ० का० रिखणीखाल, 3. रा० कन्या इ० का० श्रीनगर, 4. रा० इ० का० कोटद्वार जिनमें अभी तक वर्ग सेड बनाने के लिये भी धन स्वीकृत हो गये हैं उपकरण आदि पर धन स्वीकृत न होने के कारण अभी कक्षायें प्रारम्भ नहीं हो पायी हैं ट्रेड्स भी स्वीकृत हो गये हैं।

जनपद में कार्यरत व्यवसायिक शिक्षा के कार्यरत केन्द्र तथा उनकी प्रगति निम्न प्रकार हैं :

केन्द्र पुरोनियमित व्यावसायिक शिक्षा की प्रगति

वर्ष 1988–90 स्वीकृत

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	वर्ग रोड निर्माण की स्थिति	ट्रेड का नाम	स्वीकृत अनुदान	उपभोग की गयी	क्षेत्रवार संख्या छात्र कक्षा–11	12
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	रा०इ०का० श्रीनगर	निर्मित दो लाख	1. एकाउन्टेन्सी	53000.00	53000.00	27	20
			2. फोटोग्राफी	66000.00	66000.00	07	08
			3. रेडियो टी. वी.	60000.00	60000.00	22	16
2.	रा०इ०का० देव प्रयाग	निर्मित	1. बुनाई तकनीकी	18000.00	78000.00	05	—
			2. आटोमो-बाइल	63000.00	63000.00	03	01
			3. रेडियो टी.वी.	60000.00	60000.00	06	02
3.	रा०इ०का० लैंसडाउन	निर्मित	1. नर्सरी शि. प्र. एवं शिशु प्र.	92000.00	92000.00	08	—
			2. बहु. स्वा. क्रमी पुरुष	25000.00	25000.00	—	—
			3. टंकण	84000.00	84000.00	09	09

1	2	3	4	5	6	7	8
4. रा०इ०का० कोटद्वारा निर्मित			1. आशु./ टंकण	63000.00	62930.00	58	63
			2. बैंकिंग	53000.00	44114.00	02	09
			3. फोटोग्राफी	66000.00	57582.62	27	09
5. रा०इ०का० वेदीखाल निर्मित			1. बहु. स्वा.	25000.00	25000.00	08	11
			2. बुनाई तकनी.	78000.00	78000.00	08	—
			3. आटोमो-बाइल	63000.00	63000.00	08	07
			4. बैंकिंग एण्ड	22000.00	22000.00	15	10
6. रा०क०इ०का० पौड़ी निर्मित			1. बुनाई तक.	78000.00	78000.00	27	25
			2. परिधान रचना	77800.00	77800.00	73	02
			3. फोटोग्राफी	66000.00	66000.00	07	04

1990–91 स्वीकृत विद्यालय की संख्या

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	ट्रेड का नाम		
1.	रा०इ०का० कण्डवघाटी	निर्माण कार्य	पुस्तकालय	59000.00
			टंकण	92000.00
2.	रा०इ०का० रिखणीखाल	निर्माण कार्य	फोटोग्राफ	73,000
			आटोमोबाइल	69,000
3.	रा० कन्या इ०का० श्रीनगर	निर्माण कार्य	बुनाई तकनीकी	86000.00
			पुस्तकालय	59000.00
4.	रा०क०इ०का० कोटद्वार	निर्माण कार्य	नर्सरी शि. प्र.	1,01000.00
			रेडियो टेलीविजन	66000.00

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

जनपद में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था इतनी ठीक नहीं है जितना की होना चाहिए था। यहाँ पर चिकत्सालय एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या तो काफी है परन्तु उन चिकित्सालय एवं औषधालयों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में डाक्टरों की कमी तथा औषधियों की कमी है जिससे स्वास्थ्य व्यवस्था ठीक नहीं कही जा सकती है। फिर भी जनपद में विकास खण्डवार एलौपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक चिकित्सा का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

जनपद में विकास खण्डवार एलौपैथिक चिकित्सा सेवा

वर्ष	विकास खण्ड	चिकित्सालय एवं औषधालय	प्राथमिक स्वा. केन्द्र	समस्त में उपलब्ध सेवाएँ	समस्त के कर्मचारी डाक्टर	मेडिकल कर्मचारी	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8
1987-88		95	30	872	110	638	318
1988-89		95	32	882	105	640	318
1989-90		96	32	1108	166	645	322
विकास खण्डवार एलौपैथिक चिकित्सा सेवा 1989-90 :							
1.	पौड़ी	03	02	22	02	42	09
2.	कोट	04	02	24	07	43	12
3.	खिर्सू	06	02	32	07	31	22
4.	पावौ	05	02	28	04	23	19
5.	कल्जीखाल	05	02	28	04	33	10
6.	थलीसैंण	04	02	24	07	33	12
7.	दुगड्डा	07	03	40	07	74	19
8.	यमकेश्वर	09	02	58	08	29	15

1	2	3	4	5	6	7	8
9.	द्वारिखाल	07	03	46	13	32	24
10.	लैंसडाउन	04	02	24	11	30	12
11.	ऐकेश्वर	04	02	28	03	29	13
12.	पोखड़ा	04	01	20	04	26	10
13.	रिखणीखाल	05	02	28	09	25	14
14.	वीरौंखाल	09	02	46	16	39	20
15.	नैनीडांडा	06	02	32	10	18	19
योग ग्रामीण		82	31	480	114	517	224
योग नगरीय		14	01	628	52	128	98
कुल योग		96	32	1108	166	645	322

जनपद में 89-90 तक 96 चिकित्सालय 32 प्रा० स्वा० केन्द्र तथा इन चिकित्सालयों में 1108 शय्याएँ उपलब्ध हैं तथा इन चिकित्सालयों में 166 डाक्टर तथा 967 अन्य मेडिकल तथा अन्य कर्मचारी कार्यरत हैं। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण आज भी अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र में चिकित्सीय सेवाऐं उपलब्ध नहीं हैं। शहरी क्षेत्र में अधिकतर प्राइवेट चिकित्सालय की सेवाऐं भी उपलब्ध हैं।

ऐलोपैथिक चिकित्सालय के अतिरिक्त पौड़ी जनपद में आयुर्वेदिक चिकित्सालय तथा होमोपैथिक चिकित्सालय एवं तीन विशेष क्षय संक्रामक एवं कुष्ठ रोग निवारण चिकित्सालय भी हैं। आयुर्वेदिक एवं होमोपैथिक चिकित्सालय की विकास खण्डवार स्थिति निम्न तालिका से स्पष्ट की जा सकती हैं।

जनपद में विकास खण्डवार आयुर्वेदिक एवं होमोपैथिक चिकित्सीय सेवा

वर्ष	विकास खण्ड	आयुर्वेदिक सेवा			होमोपैथिक सेवा		संक्रामक	
		आयुर्वेदिक चिकि.	उपलब्ध शय्याएँ	डाक्टर	हो. औ. चिकि.	उपलब्ध शय्याऐं	डा. एवं कुष्ठ	रोग
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1987-88		38	134	28	06	24	03	03
1988-89		39	134	17	06	24	03	03
1989-90		39	134	21	06	24	03	03
विकास खण्डवार 1989-90								
1. पौड़ी		03	12	03	01	04	01	—

1 2	3	4	5	6	7	8	9
2, कोट	02	08	02	01	04	—	—
3. खिर्सू	03	12	03	—	—	—	—
4. पावौ	04	06	02	01	04	—	—
5. कल्जीखाल	02	08	—	—	—	—	—
6. थलीसैंण	04	16	—	01	04	—	—
7. दुगड्डा	01	04	01	—	—	—	—
8. यमकेश्वर	04	12	03	—	—	—	—
9. द्वारिखाल	02	08	01	—	—	—	—
10. लैंसडाउन	01	04	01	—	—	—	—
11. पोखड़ा	02	04	—	—	—	—	—
12. ऐकेश्वर	02	08	01	—	—	—	—
13. रिखणी खाल	04	16	01	—	—	—	—
14. वीरौंखाल	02	08	—	—	—	—	—
15. नैनीडांडा	01	04	01	—	—	—	—
योग ग्रामीण	37	130	19	04	16	01	—
योग नगरीय	02	04	02	02	08	02	03
योग जनपद	39.	134	21	06	24	03	03

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में मात्र 39 औषाधालय एवं चिकित्सालय उपलब्ध हैं उन चिकित्सालयों में 134 शय्याऐं तथा मात्र 21 डाक्टर उपलब्ध हैं शेष पद रिक्त चल रहे हैं। जबकि यहां पर जड़ी बूटियों की खोज कर इस उद्योग को भी विकसित किया जा सकता है। जड़ी बूटियों से आयुर्वेदिक दवाइयां बनायी जा सकती हैं क्योंकि जनपद पर्वतीय एवं पहाड़ी होने के कारण जड़ी बूटियों का भण्डार ही कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त जनपद में छः होमोपैथिकि चिकित्सालय तथा चिकित्सालयों में 24 शय्याऐं तथा मात्र तीन डाक्टर ही उपलब्ध हैं। जिससे इस सेवा का लाभ जनपद की अधिकांश जनसंख्या को नहीं मिल पाता है। होमोपैथिक एवं आयुर्वेदिक सेवाऐं जनपद में प्राइवेट चिकित्सालय भी बहुत कम मात्रा में हैं। जिससे इन सेवाओं का लाभ लोगों को बहुत कम मात्रा में मिल पाता है क्योंकि ये राजकीय स्तर पर भी बहुत कम हैं जनपद का विस्तार बहुत अधिक है।

इसके अतिरिक्त जनपद में परिवार एवं मातृ शिशु केन्द्र भी कार्यरत हैं। परिवार कल्याण कार्यक्रम की सुविधायें सभी नगरीय क्षेत्र के चिकित्सालयों एवं प्रा० स्वा० केन्द्र पर उपलब्ध है। निम्न तालिका से जनपद में कार्यरत परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र की स्थिति स्पष्ट की जा सकती है—

जनपद में विकास खण्डवार परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र/उपकेन्द्र

वर्ष विकास खण्ड	परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र	परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण उप-केन्द्र
1 2	3	4
1987–88	26	208
1988–89	26	220
1989–90	26	224
विकास खण्डवार 1989–90		
1. पौड़ी	01	14
2. कोट	01	13
3. खिर्सू	02	15
4. पावौ	01	15
5. कल्जीखाल	02	15
6. थलीसैंण	02	14
7. दुगड्डा	02	17
8. यमकेश्वर	01	13
9. द्वारिखाल	02	14
10. लैंसडाउन	02	14
11. ऐकेश्वर	02	14
12. पोखड़ा	01	14

1 2	3	4
13. रिखणीखाल	01	16
14. वीरौंखाल	02	15
15. नैनीडांडा	02	14
योग ग्रामीण	24	217
योग नगरीय	02	07
योग जनपद	26	224

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में ग्रामीण क्षेत्रों में 217 उप केन्द्रों के माध्यम से परिवार कल्याण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जनपद में 26 मातृ शिशु कल्याण केन्द्र तथा 224 उप केन्द्रों के माध्यम से परिवार कल्याण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

विद्युत व्यवस्था

विद्युत शक्ति अर्थ व्यवस्था का एक साधन है कृषि उद्योग प्रबन्ध संचार सिंचाई, तथा अन्य सभी क्रिया कलापों में इसकी आपूर्ति आवश्यक है। 31.3.90 तक 1623 ग्रामों में विद्युत सुविधायें उपलब्ध हैं। 1072 हरिजन बस्तियों को भी विद्युतीकृत किया गया। वर्तमान समय में जनपद में लगभग 43000 उपभोक्ता हैं। जनपद में विकास खण्डवार विद्युतीकरण ग्राम एवं हरिजन बस्तियों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

जनपद में विकास खण्डवार विद्युतीकृत ग्राम एवं हरिजन बस्तियां

वर्ष/विकासखण्ड	विद्युतीकृत ग्राम केन्द्रीय विद्युत प्रा. की परि० के	जिनमें एल. टी. मेन्स विछाकर वि. किया गया।	हरिजन बस्ती में विद्युतीकरण	निजो नलकूप पम्प सेटों का विवरण
1 2	3	4	5	6
1987–88	1520	1519	938	19
1988–89	1623	1622	1010	19
1989–90	1734	1705	1072	19
विकास खण्डवार 1989–90				
1. पौड़ी	179	177	112	03
2. कोट	104	102	57	02
3. खिर्सू	179	174	114	—
4. पावौ	96	95	79	—
5. कल्जीखाल	136	133	95	—
6. थलीसैंण	37	34	33	—
7. दुगड्डा	154	151	37	07
8. यमकेश्वर	89	89	68	—
9. द्वारिखाल	155	152	89	03

1 2	3	4	5	6
10. लैंसडाउन	92	92	07	—
11. ऐकेश्वर	103	100	73	—
12. पोखड़ा	89	87	79	—
13. रिखणीखाल	55	55	32	01
14. वीरौंखाल	159	157	91	02
15. नैनीडांडा	107	107	75	01
योग	1734	1705	1072	19

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में अभी भी लगभग 1503 ग्रामों में विद्युतीकरण नहीं हो पाया। जो कि सम्पूर्ण जनपद का लगभग 48 प्रतिशत है। अब तक कुल 1734 ग्रामों को विद्युतीकरण किया गया। विद्युतीकरण का कार्य काफी तीव्र गति से चल रहा है आने वाले पंचवर्षीय योजना में यह कार्य काफी पूर्ण हो जायेगा। अधिकांश गाँव का विद्युतीकरण हो जावेगा।

विद्युत उपभोग :

जनपद में ओद्योगिक क्षेत्र की कमी होने के कारण विद्युत उपभोग कम ही है। 48 प्रतिशत गाँवों में ही विद्युतीकरण होने के कारण भी विद्युत उपभोग में कमी का कारण है। निम्नलिखित तालिका से जनपद का विद्युत उपभोग स्पष्ट किया जा सकता है।

विद्युत उपभोग

जनपद में विभिन्न कार्यों में विद्युत उपभोग हजार किलो० घण्टा :

क्र. सं. मद	1987–88	1988–89	1989–90
1. घरेलू प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति	10987	8097	22087
2. वाणिज्य प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति	462	1124	1500
3. ओद्योगिक विद्युत शक्ति	2698	4433	6373
4. सार्वेजनिक प्रकाश व्यवस्था	2955	2177	1857
5. कृषि विद्युत शक्ति	2589	1808	542
6. सार्वजनिक जल कर एवं मल प्रवाह उत्सर्जन व्यवस्था	3823	3266	4296
योग जनपद	23514	20905	36658

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में 22087 हजार किलो० मी० घण्टा घरेलू प्रकाश व्यवस्था में 1500 हजार किलो० वाट घण्टा वाणिज्य प्रकाश 6373 हजार किलो० वाट घण्टा औद्योगिक शक्ति 1857 हजार किलो० वाट घण्टा सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था 542 हजार किलोवाट घण्टा कृषि विद्युत शक्ति 4299 हजार किलोवाट घण्टा सार्वजनिक जलकर में उपभोग किया जाता है सम्पूर्ण जनपद में 36658 हजार किलोवाट घण्टा विद्युत का उपभोग होता है जो कि बहुत ही कम है। अभी तक अधिक-यातायात सुलभ स्थानों पर ही बिजली की सुविधा उपलब्ध है।

जनपद में कई स्थानों पर छोटे-छोटे जल विद्युत परियोजनाओं को क्रियान्वित करके इस क्षेत्र का विकास सम्भव है। जिससे इस क्षेत्र को ईधन रोशनी, तथा छोटी-छोटी औद्योगिक इकाइयों को विकसित करने की समस्या का समाधान हो सकता है। कृषि एवं सिंचाई क्षेत्र में विद्युत का अभी तक बहुत कम उपभोग है। अब तक 7 राजकीय नलकूप हैतु ही विद्युत उपलब्ध है। तथा निजी क्षेत्र में 19 नलकूप पम्प सैट ऊर्जा कृत किये गये हैं।

परिवहन एवं जन संचार

पर्वतीय क्षेत्र में यातायात एवं संचार सुविधाओं का महत्व आर्थिक जीवन पर प्रत्यक्ष रूप में पड़ता है। अधिकतर जीवन यापन दूरस्थ तथा मैदानी क्षेत्रों में दोनों ही सड़क परिवहन द्वारा सम्भव है, जनपद में पक्की सड़कों की लम्बाई निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

जनपद में पक्की सडकों की लम्बाई (किमी० में)

क्र० सं०	मद	1986-87	1987-88	1989-90
1	2	3	4	5
1.	**सार्वजनिक निर्माण विभाग के अर्न्तगत—**			
(अ)	राष्ट्रीय राज मार्ग	—	—	—
(ब)	प्रादेशिक राजमार्ग	245	245	310
(स)	मुख्य जिला सड़कें	259	259	117
(द)	अन्य जिला एवं ग्रामीण सड़कें	1293	1359	1463
	योग	1797	1863	1890
2.	**स्थानीय निकायों के अर्न्तगत—**			
(अ)	जिला परिषद	01	01	01
(ब)	महापालिका/नगर पालिका	27	32	32
(स)	नगर क्षेत्र समिति	28	33	33
	योग	56	66	66

1	2	3	4	5
3. अन्य विभागों के अर्न्तगत —				
	वन	323	323	323
	वन	54	54	54
	डी० जी० बी० आर०	377	377	377
		योग 2202	2273	2300

उपरोक्त तालिका में जनपद में निर्मित पक्की सड़कों का विवरण दिखाया गया है कि सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित सड़क, स्थानीय निकायों के अर्न्तगत निर्मित पक्की सड़कें तथा अन्य विभागों के द्वारा निर्मित सड़कों का विवरण है सार्वजनिक विभाग तथा अब तक 1890 किमी० सड़क का विर्माण किया गया। स्थानीय निकाय द्वारा निर्माण 66 किमी० तथा अन्य विभागों (वन विभाग तथा डी० जी० बी० आर०) तथा 2300 किमी० मार्गों का निर्माण किया गया।

जनपद में विकास खण्डवार पक्की सड़की की लम्बाई को भी निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है कि किसी विकास खण्ड में कितना मार्ग निर्माण हुआ क्योंकि वर्तमान समय में सड़क परिवहन विकास की गति को भी इंगित करता है इस सड़क निर्माण सें ग्रामीण क्षेत्र के मार्ग आते हैं।

जनपद में विकास खण्डवार पक्की सड़कों की लम्बाई किमी०

वर्ष/विकास	सड़कों की कुल लम्बा.	सा. नि. वि. द्वारा निर्मित सड़कें	सब मद 1000 से कम जन सं. ग्राम	योग सड़कों से जुड़े 1000 से 1499 तक जनसंख्या	ग्रामीण की 1500 से अधिक जन संख्या का
1 2	3	4	5	6	7
1987-88	2202	1797	616	03	02
1988-89	2273	1863	1692	04	04
1989-90	2300	1890	1732	04	04
विकास खण्डवार सड़कों की लम्बाई 89-90 :					
(1) पौड़ी	71	69	82	01	—

1 2	3	4	5	6	7
(2) कोट	86	78	156	—	—
(3) खिर्सू	183	114	212	—	01
(4) पावौ	131	111	79	—	—
(5) कन्जीखाल	98	98	120	—	—
(6) थलीसैंण	183	183	100	—	—
(7) दुगड्डा	323	232	112	02	01
(8) यमकेश्वर	113	113	103	—	01
(9) द्वारीखाल	149	149	138	—	—
(10) लैंसडाउन	214	118	77	01	—
(11) ऐकेश्वर	113	113	88	—	—
(12) पोखड़ा	85	85	57	—	01
(13) रिखणी-खाल	173	131	72	—	—
(14) वीरौंखाल	133	133	77	—	—
(15) नैनीडांडा	179	129	259	—	—
ग्रामीण	2234	1856	1732	04	04
नगरीय	66	34	—	—	—
योग जनपदीय	2300	1890	1732	04	04

उपरोक्त तालिका में जनपद में विकास खण्डवार पक्की सड़कों का विवरण दिखाया गया है। जनपद में सभी विकास खण्डों में सड़क परिवहन विकसित हुआ है। जनपद का कोटद्वार ही एक मात्र रेलवे स्टेशन है। कोटद्वार में दिल्ली एवं लखनऊ सीधी रेल सेवा है। यहां पर सड़क प्रमुख आवश्यकता हो गयी है 1989 तक 2300 किमी ही सड़कों का निर्माण हो पाया है। जनपद में विस्तृत भू-भाग की दृष्टि से अभी सड़कों की लम्बाई का अनुपात बहुत ही कम है जो सड़कें बन चुकी हैं उन सब पर बस सेवायें उपलब्ध हैं। जो जनपद का मात्र 19 प्रतिशत है।

जनपद में मार्च 89 तक कुल वाहनों की संख्या 2670 है, 497 ट्रक, 528 बसें, 260 कारें, 372 टैक्सियां व जीप, 886 मोटर साइकिल स्कूटर, 347 थ्रीव्हीलर तथा अन्य वाहन हैं जिनसे जनपद में यातायात तथा माल ढोने का कार्य किया जाता रहा है।

संचार सेवायें

वर्तमान समय में संचार सेवायें मनुष्य के जीवन में प्रभाव डालती हैं तथा यह मनुष्य के जीवन का महत्व ूर्ण अंग बनती है। जनपद का अधिकांश भाग पर्वतीय एवं पहाड़ी होने के कारण एक भाग से दूसरे भाग में आना जाना बड़ा ही कठिन है। इस समस्या के समाधान में जनपद की संचार सेवायँ महत्वपूर्ण योगदान देती है। निम्नलिखित तालिका से जनपद की संचार व्ययसाय को दिखाया जा सकता है :—

जनपद में विकास खण्डवार संचार सेवायें

वर्ष/विकास खण्ड	डाकघर	तारघर	टेलिफोन	पब्लिक	रेलवे स्टेशन	बस स्टेशन स्टॉप।
1	2	3	4	5	6	7
1. 1987-88	416	59	1169	70	01	228
2. 1988-89	421	১9	1186	70	01	331
3. 1989-90	422	59	1201	70	01	331
विकास खण्डवार संचार सेवायें 1989-90						
1. पौड़ी	21	06	06	06	—	15
2. कोट	21	03	03	03	—	18
3. खिर्सू	30	07	09	08	—	28
4. पावौ	24	02	15	03	—	10
5. कल्जीखाल	23	05	04	05	—	15
6. थलीसैंण	32	01	01	01	—	17
7. दुगड्डा	26	05	104	05	—	54
8. यमकेश्वर	32	03	05	05	—	23
9. द्वारीखाल	40	02	18	04	—	17
10. लैंसडाउन	22	03	04	03	—	21
11. ऐकेश्वर	27	03	12	05	—	16
12. पोखड़ा	14	01	01	01	—	20
13. रिखणीखाल	20	02	02	02	—	21

1	2	3	4	5	6	7
14. वीरौंखाल	38	03	04	03	—	27
15. नैनीडांडा	35	02	04	02	—	21
योग ग्रामीण	405	48	192	56	—	323
योग नगरीय	17	11	1009	14	01	8
जनपदीय योग	422	59	1201	70	01	331

उपरोक्त तालिका में वर्ष 1989-90 के अन्त तक जनपद में 422 पो० औ० जिसमें से 405 ग्रामीण क्षेत्र में 17 नगरीय क्षेत्र में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त 59 तार घर जिसमें 48 ग्रामीण क्षेत्र में तथा 11 नगरीय क्षेत्र में इसके अतिरिक्त 1201 टेलीफोन जिसमें 192 मात्र ही ग्रामीण क्षेत्र में शेष नगरीय में। ये टेलीफोन नगरीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग भी है इसके अतिरिक्त 331 बस स्टेशन, एक रेलवे स्टेशन, जनपद पौड़ी गढ़वाल में स्थित हैं। जनपद मुख्यालय पौड़ी, एस०टी०डी० सेवा से देश तथा विदेश से जुड़ा हुआ है। यहां से कहीं भी देश तथा विदेश में सीधी बातचीत की जा सकती है।

———

सामाजिक कल्याण कार्यक्रम

आदर्श जलागम प्रबन्ध परियोजना :

जनपद का अधिकांश भाग पर्वतीय होने के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन भूक्षरण बाढ़ पर्यावरण तथा परिस्थिति की असन्तुलन को ध्यान में रखते हुये जनपद में जलागम प्रबन्ध परियोजना वर्ष 1983–84 से आरम्भ की गयी, यह योजना विश्व बैंक द्वारा पोषित है इस योजना के द्वारा जनपद का 2656 वर्ग किमी० क्षेत्र आता हैं, परि-योजना की अवधि 1992–93 तक है। परियोजना अवधि तक इस योजना के द्वारा लगभग 71.51 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है, जलागम प्रबन्ध परियोजना के अन्तर्गत मुख्यतः वानिकी, कृषि, भूमि संरक्षण, पशुपालन, उद्योग लघु सिंचाई एवं ऊर्जा संरक्षण का कार्य किया जाता है।

परियोजना क्षेत्र को 8 उप जलागम में बांटा गया है जैसे—1. मछलाड़, 2. श्रीनगर, 3. रान्दीगाड, 4. नयार राइट, 5. रुद्रप्रयाग, 6. पश्चिमी नयार, 7. पूर्वी नयार, 8. नयार लेप्ट

परियोजना क्षेत्र के उपरोक्त उप जलागमों का कुल क्षेत्र तथा स्थापना वर्ष निम्न प्रकार है :—

क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करने का वर्ष	उप जलागम क्षेत्र का नाम	उप जलागमों में सूक्ष्म जलागमों की सं०	कुल क्षेत्रफल हे०
1983–84	1. मछलाड	04	16800
1984–85	2. श्रीनगर	11	36600
1985–86	3. रान्दीगाड	04	16100
1986–87	4. नयार दांया	02	10100
1987–88	5. रुद्रप्रयाग	04	15200
1988–89	6. प० नयार	22	76000
1989–90	7. पूर्वी तयार	19	69000
1990–91	8. नयार बांया	08	25300
योग	8	74	2656000

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उप जलागम में कितने सूक्ष्म जलागम हैं तथा उप जलागम के अन्तर्गत क्षेत्र कितना है। उप जलागमों का कार्य तथा उपलब्धि क्या है। इसको निम्न विवरण से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. वन एवं भूमि संरक्षण :

जनपद में जलागम प्रबन्ध परियोजना द्वारा अब तक वन एवं भूमि संरक्षण कार्यक्रम के तहत 5324 हैक्टिर क्षेत्र में आरक्षित वन 4316 हैक्टियर सिविल वनों को लगाया गया है साथ ही चारा प्रजातियों का विनाश इन जंगलों से किया गया। सिविल सोयम वनों में 2452 हैक्टियर क्षेत्र निजी भूमि व लगभग 1172 हैक्टियर क्षेत्र में चारा प्रजातियों का विकास किया गया। 16131 हैक्टियर भूमि पर उद्यान वृक्षारोपण किया गया। 463 हैक्टियर खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपण 1425 है० भूमि पर गाँव के समीप वृक्षारोपण किया गया।

2. भूमि संरक्षण :

उप जलागमों द्वारा भूमि संरक्षण कार्यक्रम के तहत 10983 स्टोन चैक डैम 1993 क्रेट वायर डैम, 102 ड्रोप स्ट्रकअवर डैम बनाये गये। तथा धारदार खेतों को समतल किया गया।

3. उद्यान :

जलागम प्रबन्ध परियोजना के द्वारा 503 है० भूमि पर टाप वार्किंग 617 है० भूमि पर व्यक्तिगत उद्यानों की स्थापना 300 है० भूमि पर पुराने उद्यानों का पुर्नद्वार किया गया। साथ ही 127.97 हजार रुपये के घरवाड़ी दार, फल पौधों का रोपण किया गया।

4. लघु सिंचाई :

जलागम परियोजना के द्वारा लघु सिंचाई योजनान्तर्गत जनपद में 37.90 किमी० सिंचाई गूलों का निर्माण तथा 278 हौजों का निर्माण किया गया।

5. कृषि :

जलागम परियोजना की कृषि इकाई में जनपद की कृषि में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के लिये जनपद में 15266 फील्ड ट्रायल 13601/बीच/मिनीकिट वितरित किये गये, 18948 उन्नतशील कृषि यन्त्रों का वितरण किया गया साथ ही जनपद के विभिन्न स्थानों पर 34 स्टोर गोदामों का भी निर्माण किया गया।

6. पशुपालन :

जलागम प्रबन्ध परियोजना ने जनपद में पशुपालन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य

किये इस इकाई ने जनपद में 250 पशु वितरित किये, 20 पशु चिकित्सालय का सुदृढीकरण, 46 हे० क्षेत्र में चारागाह विकास, 4225 चारा मिनीकिट वितरित किये साथ ही जनपद में 2 तरल नाइट्रोजन प्लांटों की स्थापना की गयी ।

7. सौर उर्जा :

जलागम प्रबन्ध परियोजना में सौर ऊर्जा के विकास का कार्य भी किया गया क्योंकि वन विभाग द्वारा वनों की कटाई पर रोक लगी हुई है जिससे ईधन की परेशानियों से बचने के लिये सौर ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया है । इस परियोजना द्वारा जनाद में 5639 धूम्र रहित चूल्हे का वितरण किया गया, 10676 प्रिमगिनी अंगीठी का वितरण किया गया । बायोगैस प्लान्ट स्थापित किये गये साथ ही जनपद में विभिन्न विकाम खन्डों के अन्तर्गत 300 सोलर कुकर भी वितरित किये गये ।

जलागम परियोजना द्वारा जनपद में स्थापना व्यय तथा सभी योजनाओं के विकास पर वर्ष 1888-89 तक 65606 हजार रुपये व्यय किये जा चुके है । इस योजना का जनहित में अधिक विकास सीमान्त कृषक स्तर तक हुआ है ।

सहकारिता

जनपद में वर्ष 1988-89 तक 137 प्रारम्भिक कृषि सहकारी समिति कार्यरत थीं । इन सभी समितियों में 90860 सदस्यत थे तथा 10165 हजार रुपये अंश पूंजी सदस्यों द्वारा समितियों में लगायी गयी थी । 1988-89 में इन समितियों द्वारा 1772 हजार रुपये के अल्पकालीन व 26603 हजार रुपये मध्यकालीन ऋण वितरित किया गया । जनपद में 3 क्रय विक्रय सहकारी समितियाँ भी कार्यरत हैं, जिनमें उक्त अवधि में 1716 सदस्य संख्या थी तथा 3282 हजार रुपये की वस्तुओं का लेन-देन हुआ है, इसके अतिरिक्त 3 संयुक्त कृषि समितियां भी कार्यरत हैं, जिनकी सदस्य संख्या-93 है तथा इन समितियों के अन्तर्गत कुल क्षेत्र 220 हे० हैं ।

जनपद जिला सहकारी बैंक की 17 शाखायें कार्यरत हैं जिनकी सदस्य संख्या--1000 है,इन बैंकों द्वारा 88-89 में 19260 हजार रुपये अल्पकालीन तथा 84559 हजार रुपये के मध्य कालीन ऋण वितरित किये गये ।

जनपद में राज्य सहकारी भूमि विकाम बैंक की दो शाखायें कार्यरत हैं । वर्ष 1987-88 के अन्तर्गत इन शाखाओं द्वारा 1096 हजार रुपये के दीर्घकालीन ऋण वितरित किये गये ।

जल सम्पूर्ति

जनपद में स्वच्छ जल सम्पूर्ति की पूर्ण व्यवस्था की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की निकटतम दूरी से जल सम्पूर्ति की गई जिनमें से वर्ष के अन्त तक कुल 430595

जनसंख्या पेयजल सुविधा से लाभान्वित की गयी है, जो कुल जनसंख्या का 62 प्रतिशत है तथा 340 ग्रामों में डिग्गियों का निर्माण तथा 112 गांवों में अन्य साधनों से ग्रामों को पेयजल सुविधा से लाभान्वित किया गया।

उपभोक्ता कल्याण

जनपद में 1988-89 के अन्त तक 846 सस्ते गल्ले की दुकानें कार्यरत थीं। प्रति दुकान 880 जनसंख्या का घनत्व है। सूदूरवर्ती ग्रामों में जनसंख्या का घनत्व तो कम है परन्तु उपभोक्ताओं को 3 किमी० से अधिक दूर उपभोक्ता की सामग्री क्रय करने हेतु जाना नहीं पड़ता है।वर्ष 1986-87 में जिला केन्द्र पर राजकीय कर्मचारियों हेतु सस्ते वस्तुओं को उपलब्ध कराने हेतु कर्मचारियों के लिए कल्याण निगम की जनपद में तीन दुकानें भी खोली गयी हैं।

गृह निर्माण

जनपद में आवास एवं विकास परिषद की कोई योजना नहीं है। वर्ष 1988-89 में निर्बल वर्ग आवास योजना में 2581 भवनों को कार्य पूर्ण कराया गया। 36 इन्दिरा आवास गृह भी निर्मित किये गये। ये सभी कार्य नियोजन विभाग ने अपने विकास खन्ड अधिकारियों के माध्यम से कराये। ये सभी भवन निर्बल वर्ग अनुसूचित जाति के परिवारों के लिए बनाये गये।

पुलिस एवं अपराध

पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर अपराधियों की संख्या नगण्य ही है। यह जनपद अपराध ग्रस्त जिले की श्रेणी में नहीं आता है। जनपद मुख्यालय में पुलिस अधीक्षक कार्य करते हैं। जनपद में मात्र 8 पुलिस थाना श्रीनगर, पौड़ी, लैन्सडाउन, कोटद्वार, स्वर्गाश्रम, सतपुली, देवप्रयाग, रूद्रप्रयाग में स्थित हैं। जनपद में सभी वर्ग के पुलिस अधिकारियों, कर्मचारियों की संख्या-509 है जिनमें 6 निरीक्षक, 27 उपनिरीक्षक, 35 कांस्टेबिल 401 पुलिसकर्मी व दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में राजस्व पुलिस के रूप में पटवारी कार्यरत हैं। सामान्यतः यह जनपद शान्ति का प्रतीक है। वर्ष 1988-81 में कुल अपराधों की संख्या-419 थी जिनमें 6 अपराध हत्या के थे।

अग्नि शमन सेवा

जनपद के मुख्यालय पौड़ी में अग्निशमन सेवा केन्द्र कार्यरत है। वर्ष 1988-89 में अग्निकांड की 10 घटनायें हुई थीं। जिनमें 16,540080/की सम्पत्ति क्षतिग्रस्त हुई तथा 29.72920 की सम्पति बचायी गयी।

मनोरंजन

वर्ष 1988-89 तक जनपद में कुल 6 सिनेमागृह जनता के मनोरंजन के साधन

के रूप में थे, इन सिनेमागृहों में 2228 सीटें उपलब्ध हैं। सभी सिनेमागृह नगरीय क्षेत्रों में हैं।

स्टेडियम

जनपद मुख्यालय पौड़ी में रांसी स्टेडियम का निर्माण कार्य चल रहा है यह स्टेडिमम भारत का सबसे ऊँचाई पर निर्मित होने वाला पहला स्टेडियम है इसके अतिरिक्त कोटद्वार में भी स्टेडियम का निर्माण कार्य चल रहा है। जनपद के सभी स्कूलों में खेल-कूद की व्यवस्था है। श्रीनगर पौड़ी (कन्डोलिया) एवं कोटद्वार में कई क्षेत्रीय खेल कूद प्रतियोगितायें करवायी जाती हैं इसके अतिरिक्त रांसी स्टेडियम में अखिल भारतीय चन्द्रसिंह गढ़वाली फुटबाल प्रतियोगिता करवायी जाती है।

दार्शनिक एवं पर्यटन स्थल

जनपद में पर्यटन की दृष्टि से कई सुरभ स्थल ऊँची-नीची घाटियाँ, सुन्दर जल प्रपात हैं। यहाँ एक ओर जहाँ सुन्दर हिम पर्वतमाला दिखाई देती है वहीं निचली धारियों में मैदानी भाग के दृश्य भी नजर आते हैं। पौड़ी जनपद में मुख्यालय से चौखम्बा (हिमालय की पर्वतीय श्रँखला) के दायें-बायें ओर पर्वत माला का दृश्य बड़ा मनोरंजन एवं दिल को छू लेने वाला लगता है। पौड़ी मुख्यालय में क्यूंकालेश्वर मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, धार्मिक स्थल हैं। पौड़ी मुख्यालय से सूर्य का उगना तथा शान्ति होना दोनों ही मनोहर लगते है। श्रीनगर के कमलेश्वर मन्दिर तथा धार्मिक रूप से जाने वाली नदी अलकनन्दा है जिसमें धार्मिक त्योहारों पर लाखों-लाखो उस पवित्र जल में स्नान करते हैं। ऋषिकेश, बद्रीनाथ, आदि आवागमन का केन्द्र है। यह खिर्सू विकास खण्ड का मुख्यालय खिर्सू एक सुन्दर दर्शनीय स्थान है। यहाँ के मनोरंजक दृश्य एवं फलोत्पादन स्वास्थ्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं।

वित्तीय संस्थान

किसी भी देश एवं राज्य जनपद तथा गावों के विकास की गति में तेजी एडं बृद्धि करने के लिये बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी कार्यक्रम को चलाने के लिए वित्तीय आवश्यकता परम आवश्यक है बिना धन के कोई भी कार्य आज के युग में असम्भव सा है। पौड़ी जनपद में भी बैंकों, सहकारी समितियों, राज्य सरकारी वित्तीय संस्थान, ग्रामीण बैंकों की पौड़ी जनपद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। जनपद में संस्थागत वित्त से सम्बन्धित शाखाओं को निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

जनपद में विकास खण्डवार बैंक तथा ग्रामीण बैंक संस्था

वर्ष	विकासखण्ड	राष्ट्रीयकृत बैंक	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखा	अन्य गैर
1	2	3	4	5
1987-88		56	19	
1988-89		56	19	
1989-90		57	55	
विकास खण्डवार 1989-90 :				
	1. पौड़ी	01	01	
	2. कोट	02	02	
	3. खिर्सू	04	02	
	4. पावौ	03	02	
	5. कल्जीखल	01	04	
	6. थलीसैंण	03	04	
	7. दुगड्डा	03	02	

1	2	3	4	5
8. यमकेश्वर		02	04	
9. द्वारीखाल		04	02	
10. लैंसडाउन		01	01	
11. ऐकेश्वर		04	01	
12. पोखड़ा		03	01	
13. रिखणीखाल		01	05	
14. बीरौंखाल		04	02	
15. नैनीडांडा		07	04	
योग ग्रामीण		43	34	
समस्त नगरीय		14	03	
योग जनपदीय		57	37	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि जनपद में 57 व्यवसायिक बैंक कार्यरत हैं, 19 ग्रामीण बैंक कार्यरत हैं। 25.45 प्रतिशत नगरीय क्षेत्रों तथा 74.55 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में ये बैंक स्थित हैं। भारतीय स्टेट बैंक की 36 शाखाऐं, पंजाब नेशनल बैंक की 7, कैनरा बैंक की एक, बैंक ऑफ इण्डिया की एक, भू बैंक ऑफ इण्डिया कीएक, 19 अलकनन्दा ग्रामीण बैंक, की एक पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक, की एक सेन्ट्रल बैंक, कार्यरत हैं इसके अतिरिक्त 17 सहकारी बैंक ब एक भूमि विकास बैंक की शाखाएँ जनपद में कार्यत हैं इसके अतिरिक्त जीवन बीमा निगम सम्बन्धी कम्पनियाँ भी जनपद में स्थित है।

उपरोक्त सभी बैंकों में जमा धनराशि एवं ऋण वितरण सम्बन्धी सूचना को निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :—

जनपद में व्यवसायिक बैंकों में जमा धनराशि एवं ऋण वितरण

क्र०सं०	मद	1987	1988	1989
1	2	3	4	5
1. जमा धनराशि		880792	1075000	1302600
2. कुल ऋण वितरण		254772	269600	309700
3. जमा धनराशि पर ऋण वितरण का प्रतिफल		27.9	25.9	23.8

प्राथमिक क्षेत्र में ऋण वितरण :

1	2	3	4	5
1.	कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित	74214	89000	999000
2.	लघु उद्योग			
3.	अन्य प्राथमिक	2858	11703	104000
4.	कुल ऋण बितरक में प्राथमिक क्षेत्र के ऋण वितरण का प्रतिशत	65.5	71.5	78.0
5.	प्रति व्यक्ति जमा धनराशि	1381	1685	2042
6.	प्रति व्यक्ति ऋण वितरण	385	422	485
7.	प्रति व्यक्ति प्राथमिक क्षेत्र में ऋण वितरण	25.2	302	377

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि व्यवसायिक बैंकों में जमा धनराशि 1989 तक 1302600 रुपये तथा लगभग 89 को 309700 रुपये ऋण वितरित किए गये। बैंकों के द्वारा जनपद में छोटी-छोटी औद्योगिक इकाइयों के लिए भी ऋण वितरित किए जाते हैं।

रोजगार तथा श्रम

बेरोजगारी एक राष्ट्रीय समस्या है। खेती पर निर्भरता कम होने के कारण इस जिले के लिए यह ससस्या और भी महत्व की है। यहाँ पर उद्योग धन्धों का भी अधिक विकास न होने के कारण बेरोजगारी की समस्या काफी बढ़ी है। जनपद में सेवा योजन कार्यालयों द्वारा किये गये कार्य को निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है—

जनपद में सेवायोजना कार्यालयों द्वारा किया गया कार्य

क्र० सं० पद	1987--88	1988--89	1989--90
1. सेवायोजन कार्यालयों की संख्या	03	03	03
2. जीवित योजना पर अभ्यर्थियों की सं०	24153	25846	28099
3: वर्ष में पंजीकृत अभ्यर्थियों की सं०	6591	7435	8142
4. सूचित रिक्तियों की संख्या	492	464	641
5. वर्ष में कार्य पर लगाये गये व्यक्ति	327	348	536

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद में (तीन) 3 सेवायोजन कार्यालय हैं जहाँ पर लोगों को रोजगार के लिए अपना नामांकन करवाना है। ये तीनों केन्द्र नगरीय क्षेत्र में स्थित हैं। ये केन्द्र हैं—1. सेवायोजन कार्यालय लैंसडाउन गढ़वाल, 2. सेवायोजन कार्यालय पौड़ी नगर, 3. सेवायोजन कार्यालय श्रीनगर गढ़वाल। उपरोक्त तीनों सेवायोजन कार्यालयों में 89-90 तक लगभग 28099 अभ्यर्थी जीवित पंजिका में पंजीकृत हैं और साथ ही सेवायोजन कार्यालय में वर्ष 1989-90 में 8142 व्यक्तियों का पंजीकरण किया गया और वर्ष 1989-90 तक सेवायोजन कार्यालय द्वारा 536 लोगों की रोजगार में लगाया गया।

इसके साथ ही जनपद में जो प्राविधिक शिक्षण संस्थान हैं उनमें तथा सात औद्योगिक शिक्षण संस्थान एक महिला औद्योगिक शिक्षण संस्थान तथा 4 शिक्षण संस्थान के केन्द्र हैं जहाँ पर अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार तथा अपने उद्योग को खोलने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

उद्योगों की कमी के कारण अधिकांश बेरोजगारों को सरकारी नौकरियों पर ही आश्रित रहना पड़ता है। यह जनपद मण्डलीय मुख्यालय होने के कारण यहाँ के अधिकांश बेरोजगार युवक युवतियों को सरकारी नौकरियों में ही रोजगार प्राप्त करना पड़ता है।

जनपद में पौड़ी नगर के सेवायोजन कार्यालय में पंजीकृत अभ्यर्थियों की संख्या निम्न तालिका से स्पष्ट की जा सकती है—

जनपद में बेरोजगारी झुकाव

क्र० सं० श्रेणी	1985	1986	86-87	1988	1989	1990
1. निरक्षर	170	46	153	42	137	54
2. साक्षर	2363	2658	2436	2493	3504	3653
3. दसवींपास	2381	2817	2905	1802	3268	5097
4. प्रमाण पत्र धारक	—	—	707	751	782	677
5. डिप्लोमा धारक	55	70	81	63	78	130
6. डिग्रीधारक	421	464	550	417	649	1166
7. कला	388	560	547	613	799	867
8 विज्ञान	64	93	97	35	74	120
9. वाणिज्य	41	63	60	63	102	110
10 कृषि	—	—	—	—	—	08
11. शिक्षा शा०	85	88	115	123	130	163

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जनपद मे दसवीं पास तथा साक्षर श्रेणी में सबसे अधिक बेरोजगार हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर सभी श्रेणी में बेरोजगारी की स्थिति बढ़ती ही जा रही है। शिक्षा का विकास धीरे-धीरे काफी बढ़ गया है। स्कूलों की संख्या इसके प्रमाण है। जनपद मुख्यालय में ही अधिक बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त होता है। जनपद के मुख्यालय के लोग ही अधिक रोजगार प्राप्त करते हैं।

यहाँ पर व्यावसायिक शिक्षा का अत्यधिक प्रचार एवं प्रसार होना आवश्यक है जिससे छात्र शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात स्वयं का व्यवसाय कर सकता है। अपना व्यवसाय होने पर अपने व्यवसाय में एक दो लोगों को भी काम पर लगा सकता है। इससे बेरोजगारो की समस्या खुद व खुद कम होती जायेगी और अध्ययन के साथ-साथ अपने पांवों पर खड़ा हो सकता है क्योंकि यहाँ पर कच्चे माल की काफी प्रचुर मात्रा विद्यमान हैं। यहाँ पर व्यावसायिक शिक्षा के वर्तमान समय में 10 केन्द्र चल रहे हैं इन व्यवसाय किन भिन्ना केन्द्रों में अभी तक न उत्तम प्रशिक्षित अध्यापक और न उपकरण इत्यादि ही में।

सार्वजनिक क्षेत्र में सामान्य सेवायोजन

सार्वजनिक क्षेत्र के सामान्य सेवायोजन को पिछले 85 वर्ष का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है—

सार्वजनिक क्षेत्र में सामान्य सेवायोजन

क्र० सं०	क्षेत्र उद्योग मण्डल	दिसम्बर 85	दिस. 86	दिस. 87	दिस. 88	दिस. 89	दिस. 90
1.	कृषि एवं पशुधन	966	921	947	971	1036	1081
2.	विद्युत व जल	623	647	725	805	515	590
3.	निर्माण	429	453	791	682	746	764
4.	यातायात	886	956	985	985	985	841
5.	बैंकिंग	101	113	141	159	182	173
6.	अन्य सेवायें	7794	7840	7979	8006	9157	9113
	योग					12611	12562

उपरोक्त तालिका से जनपद पौड़ी गढ़वाल में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग मण्डल में कुल 12562 व्यक्ति रोजगार में लगे हुए हैं जो उद्योग केन्द्र कृषि, पशुधन, विद्युत जल निर्माण यातायात, बैंकिंग तथा अन्य सेवाओं में कार्यरत हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण

जनपद का क्षेत्र विस्तृत एवं पर्वतीय होने के कारण जनपद में उद्योग धन्धों का विकास बहुत ही कम है। किसी भी जनपद के विकास में सड़कों एवं यातायात का बहुत ही अधिक महत्व है। जनपद में सड़कों एवं यातायात का विकास बहुत कम है जिसके कारण यहाँ पर उद्योग विकसित नहीं हो पाये हैं। जनपद का बहुत ही कम भाग मैदानी है यह भाग जनपद के खिर्सू विकास खण्ड में श्रीनगर गढ़वाल तथा दुगड्डा विकास खण्ड में कोटद्वार नामक स्थान है इनमें से कोटद्वार दिल्ली लखनऊ रेल मार्ग से जुड़ा होने के कारण यातायात सुलभ एवं सरल है के कारण यहाँ पर थोड़ी बहुत मात्रा में उद्योग स्थापित हुये हैं। अब श्रीनगर गढ़वाल में भी उद्योग स्थापित हुये हैं। अब श्रीनगर गढ़वाल में भी उद्योग धन्धे विकसित किये जा रहे हैं।

जनपद के अधिकांश औद्योगिक क्षेत्र कोटद्वार में ही हैं जहाँ पर उद्योग धन्धों का विकास हुआ है वहीं पर जनपद का जिला उद्योग अधिकारी कार्यरत है जहाँ से उद्योगों के लिए मार्ग दर्शन इत्यादि की सुविधा प्राप्त होती है।

जनपद में 1227 लघु औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत हैं जिनमें 5276 व्यक्ति रोजगार में लगे हैं।

जनपद में जितने भी बड़े उद्योग खोले गये हैं उनमें उत्पादित वस्तु का अधिकांश भाग अन्य जनपदों, राज्यों को जाता है कि क्योंकि उनकी उत्पादित वस्तु की माँग जनपद में बहुत ही कम है। बृहत एवं मध्य स्तरीय ईकाइयों में उत्पादित वस्तु की माँग जनपद में ही अधिकांश खपत हो जाती है जनपद में ही बड़ी इकाइयाँ हैं जिनमें से 8 से ही उत्पादन होता है। उनकी उत्पादित सामग्री बाहर ही भेजी जाती है। जनपद का विस्तार बहुत ही अधिक है। यातायात के साधनों की कमी होने के कारण इन इकाइयों की उत्पादित सामग्री कुछ मँहगी होती है, यातायात की सुलभता भी उद्योग धन्धे बढ़ाते है। मांग अधिक होने के कारण उद्योग धन्धे भी अधिक विकसित होते हैं। माँग कम होने के कारण उद्योग धन्धों का विकसित होना भी प्रभावित होता है।

जनपद में उद्योग धन्धों की कमी का मुख्य कारण उपयुक्त व्यक्तियों की कमी का होना भी है क्योंकि जनपद में प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी है यदि कहीं किसी व्यक्ति ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया और प्रशिक्षित हो गया तो वह अन्य स्थान पर चला जाता है वहाँ पर उसे अपने कार्य के मुताबिक कार्य मिल जाता है और पर्याप्त धन भी मिल जाता

है। अगर यहाँ पर कार्य करता है तो उसकी योग्यता के अनुसार उसे कार्य नहीं मिल पाता है और वह जिस कार्य में दक्ष होता है वह कार्य न करके अन्य कार्य करता है जिससे उसकी कार्य क्षमता भी प्रभावित होती हैं और कार्य क्षमता प्रभावित होने के साथ-साथ उसकी कार्य का मूल्य भी नहीं मिल पाता है जिसके कारण वह अन्यत्र जाने के लिये मजबूर हो जाता है।

जनपद में प्रशिक्षित बेरोजगारों, युवकों को स्वतः रोजगार के अर्न्तगत 25000.00, 15000.00, 35000.00 रुपये तक का ऋण उपलब्ध करवाया जाता है। स्वतः रोजगार के अर्न्तगत हाई स्कूल पास बेरोजगार युवकों को उद्योग विभाग द्वारा ऋण दिया जाता है। वर्ष 1988-89 में 173 व्यक्तियों को यह ऋण वितरित किये गये इस पूँजी पर 25 प्रतिशत सरकार अनुदान देती है। तथा दस प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से शेष पूंजी वापिस की जाती है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष काफी बेरोजगार युवक लाभान्वित होते हैं। उद्योग विभाग इस ऋण वितरण में कुछ आसान शर्तें भी रखती है यहां पर मांग होने के कारण यहाँ का बेरोजगार युवक इस पूँजी से कोई लघु इकाइयां ही लगा पाता है। वह क्षेत्रीय आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही कोई छोटा मोटा ब्यापार या उत्पादित वस्तु को इस पूँजी के द्वारा क्रय कर, अन्यत्र स्थान पर अधिकांश विक्रय करता है। कहा जा सकता है कि जनपद में स्वतः रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं।

जनपद में प्रखण्ड स्तर पर रोजगार की काफी सम्भावनाएं हैं, अगर जनपद स्तर पर उद्योग धन्धों का विकास किया जाये जैसा कि सरकार और उद्योग विभाग की योजना है कि प्रत्येक विकास खण्ड में औद्योगिक आस्थान खोले जायेंगे। अगर भविष्य में उद्योग विभाग द्वारा औद्योगिक आस्थान खोले जाते है तो विकास खण्ड स्तर पर रोजगार की काफी सम्भावनायें बढ़ जायेंगी। जनपद में जो भी औद्योगिक इकाई कार्यरत हैं खपतउनमें बहुत ही कम है। सबसे बड़ी इकाई भारत इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड बलभद्रपुर कोटद्वार गढ़वाल में हैं उसमें लगभग वर्तमान समय में 482 व्यक्ति रोजगार में लगे हुए हैं और इकाई का अधिकांश रोजगार प्रशिक्षित हैं थोड़ी बहुत मात्रा में कोटद्वार के स्थानीय बेरोजगार युवकों को कम्पनी द्वारा प्रशिक्षित करके रोजगार पर लगाया गया है। अन्य औद्योगिक इकाइयों की यही दशा है, प्रशिक्षित न होने के कारण उद्योगों को चलाने के लिए इकाइयां अन्यत्र से प्रशिक्षित एवं अनुभवी युवकों को रोजगार में लगाती हैं। यहां के बेरोजगारों को पूर्व से उद्योगों का विकास न होने के कारण अनुभव की बहुत ही कमी है। जिससे जनपद में स्थापित इकाइयों को बाहर से ही रोजगार की व्यवस्था करनी पड़ती हैं।

जनपद में व्यवसाय तो नगण्य ही हैं। जनपद में कुटीर उद्योगों में लघु उद्योग अधिक होने के कारण व्यवसाय में लगी जन शक्ति कम ही है या तो उन व्यवसायों में स्वयं ही कार्य कर रहे हैं अथवा एक दो लोग कार्य में लगाये गये हैं। सबसे अधिक खाद्य पर आधारित उद्योग हैं। जो लगभग 236 इकाइयों में है जिनमें आटा चक्की, तथा कन्फैक्शनरी विकास खण्ड स्तर पर हैं शेष सभी नगरीय क्षेत्र की इकाइयां हैं। इन उद्योगों

में व्यवसाय के साथ-साथ रोजगार की अधिकता नहीं होती। शेष पापड़, बड़ी, डबलरोटी लेमन, मिर्च, मसाला, आचार, मुरब्बा, इत्यादि की नगरीय इकाइयां हैं। ये सभी इकाइयां सीमित रोजगार वाली इकाइयां हैं। जितने भी व्यवसाय जनपद में कार्यरत हैं उनमें व्यक्तियों की कमी नहीं है क्योंकि सभी व्यवसाय उतने ही फैले हुए हैं जितना कि उनमें आवश्यकता है। भविष्य में विकास खण्ड स्तर पर उद्योग धन्धे स्थापित होते हैं तो व्यक्तियों की अवश्य ही कमी होगी। जनपद में उद्योग विभाग के अनुसार विकास खण्ड वार औद्योगिक सम्भावनायें दिखायी गयी हैं।

औद्योगिक सम्भाव्यता विकास खण्डवार

क्र.सं.	नाम विकास	संसाधन पर आधारित उद्योग	मांग पर आधारित उद्योग	कुशजता पर अन्य आधारित उद्योग
1	2	3	4	5
1.	दुगड्डा	राइस मिल आयल मिल सोयाबीन का तेल आदि	स्टील फर्नीचर इमारती सामान	प्रेसर कुकर आदि की रिपेयरिंग
2.	यमकेश्वर	बांस बेत दोना पत्ता टोकरी स्टोन क्रेसर	पैकिंग बाक्स मरम्मत आदि	पावरलूम टी.वी हौजरी आदि
3.	जयहरीखाल	वन पर आधारित जड़ी, बूटी पर आधारित	लेदर सोड़ा चमड़े का सामान	इकाइयों का उत्पादन
4.	द्वारीखाल	फूड ब्रिजेखेटस जड़ी बूटी पर आधा.	खिलौने रेडियो टी.वी. सामान	इंक, टूथ पेस्ट मंजन सम्बन्धी
5.	रिखणीखाल	वन की लकड़ी एवं जड़ी बूटी पर आधारित	स्टील फैब्रिकेट्स रेडियो टी.वी.	कीरिपेरिंग
6.	नैनीडांडा	दोनापत्ता, स्टोन क्रेयर, आदि	लेदरसूज स्टील फैब्रिकेशन आदि	वासन बाक्स
7.	वीरौंखाल	कार्डबोर्ड, स्टोनक्रेशर बूटी पर आधारित	रेडिमेड गारमेन्ट	रेडिमेट गारमेन्ट हौजरी
8.	पोखड़ा	सीमेन्ट ब्रिक्स/वन आधा.	पावरलूम कृषि यंत्र	हाजरी उद्योग
9.	कल्जीखाल	जड़ी बूटी पर आधारित	पावरलूम कृषि यंत्र, संयत्र	रेडिमेड

1	2	3	4	5
10.	ऐकेश्वर	जड़ी बूटी पर आधारित	हीटर पिनकुश, टी.वी. सैटस मरम्मत	कृषियंत्र, रेडिमेन्ट
11.	पौड़ी	होजरी रेडिमेडगार्वमेन्ट	पत्तल, रेडिमेड गावमेन्टेस आदि	कृषि, टी.वी. रेडियो रिपेरिंग
12.	पावौ	वनस्पति जड़ी बूटी पर आधारित	कृषियंत्र, पिनकुशन आदि	स्टेपलाइजर, डि. पाउडर
13.	थालीसैंण	फड़प्रिजखौश, वनस्पती एवं जड़ी-बूटी पर आधारित	कृषि यंत्र, रेडियो, रेडिमेड गार्मेन्ट्स	टी.वी. रिपेरिंग आदि
14.	खिर्सू	स्टोन क्रेशर, वनस्पति जड़ी बूटियों पर आधारित	नट बोल्ट स्टील फर्नीचर आदि	लकड़ी के सामान व दोनापत्ता बन.
15.	कोट	स्टोन क्रेशर/वनस्पति जड़ी बूटियों पर आधारित	वालन हीटर पौलीथीन	चमड़े का सामान पैकिंग बाक्सेज

जनपद में उपरोक्त विकास खण्डवार स्थापित हो जाते हैं तो प्रशिक्षित मानव शक्ति की मांग अधिक होगी किसी भी उपयोग इकाई को चलाने के लिए उस उपयोग के बारे में उद्योग खोलने वाले व्यक्ति की पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए नहीं तो वह उद्योग विकसित नहीं हो पायेगा। वर्तमान समय में जनपद में बहुत ही कम प्रशिक्षित व्यक्तियों की मांग है। जनपद में संसाधन पर आधारित उद्योग, मांग पर आधारित उद्योग, कुशलता पर आधारित उद्योगों के लिए प्रशिक्षित जन शक्ति का होना अनिवार्य है।

जनपद में इण्टरमीडिएट कालेज में व्यवसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम (ट्रेड्स) आरम्भ किये जाने चाहिए। जिससे दो वर्ष में विद्यार्थी अपने ट्रेडस के प्रति पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर ट्रेड्स की बारीकियों को जान सके साथ ही जनपद में सभी वर्गों (साहित्यिक, वैज्ञानिक, वाणिज्य, रचनात्मक एवं कृषि) में इण्टरमीडिएट स्तर में शिक्षा की व्यवस्था हो क्योंकि वर्तमान समय में जनपद में साहित्यिक एवं वैज्ञानिक वर्ग के ही अधिकांश विद्यालय हैं कुछ ही विद्यालयों में वाणिज्य वर्ग में भी शिक्षा दी जाती है। इससे सरकार द्वारा चलाये जा रहे सम्पूर्ण 31 ट्रेड्स की व्यवस्था नही हो सकती। अगर सम्पूर्ण ट्रेड्सों की

व्यवस्था हो जाती है तो विद्यार्थी सभी ट्रेड्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है और अपने व्यवसाय के प्रति जागरूक हो सकता है।

कृषि वर्ग से सम्बन्धित सभी ट्रेड जनपद के पर्वतीय भाग होने के कारण कुटीर उद्योग धन्धों के रूप में विकसित हो सकते हैं जिनमें मछली पालन, डेरी प्रौद्योगिकी, रेशम कीट पालन, फल संरक्षण, बीज उत्पादन, फल सुरक्षा, पौधशाला, एवं भूमि संरक्षण में सभी ट्रेडस जनपद के अधिकतर ग्रामीण विद्यालयों में शुरू किये जा सकते हैं परन्तु जनपद में कहीं भी कृषि वर्ग में शिक्षा आरम्भ नहीं है। जनपद में ग्रामीण विद्यालयों की संख्या अधिक है। नगरीय क्षेत्र में बहुत ही कम विद्यालय स्थित हैं। विद्यालयों की स्थिति दूर-दूर है। आवागमन के साधन सुलभ नहीं हैं। छात्र एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता छात्र के अभिभावक की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वह अपने पाल्य को किसी अन्यत्र विद्यालय में पढ़ा सके। इस स्थिति में वह अपने पाल्य को समीप के ही स्थित विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करवाता है। यहां पर व्यावसायिक शिक्षा के ट्रेडस न होने के कारण वह अपनी रूचि के अनुसार अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकता। इसलिये जनपद के सभी माध्यमिक इण्टरमीडिएट कालेजों में व्यवसायिक शिक्षा के ट्रेडस आरम्भ होने चाहिए जिससे कि वह अपनी क्षेत्र की मांग, संसाधन तथा कुशलता के आधार पर अपना उद्योग स्थापित कर सकता है और अपने व्यवसाय के प्रति स्वयं ही उत्तरदायित्व हो जाता है।

जनपद में वर्तमान समय में 10 विद्यालयों में (राजकीय कन्या इण्टर कालेज पौड़ी, रा० इण्टर कालेज श्रीनगर, रा० इण्टर कालेज देव प्रयाग, रा० कालेज लैंसडाउन, रा० इ० कालेज कोटद्वार, रा० इ० कालेज वेदीखाल, रा० इ० कण्डवा घाटी, रा० इ० का० रिखणी खाल, रा० कन्या इ० कालेज श्रीनगर, रा० कन्या इण्टर कालेज कोटद्वार ही व्यावसायिक शिक्षा दी जाती है। यहां पर विभिन्न ट्रेडों को पढ़ाने के लिए नियमित शिक्षक नहीं हैं। अंशकालिक रूप से शिक्षकों की नियुक्ति की गयी है जो कि इन ट्रेडों को पढ़ाते हैं। ये शिक्षक जब तक नियमित नहीं हो जाते हैं तब तक इतना ध्यान नहीं देते जितना की इन्हें देना चाहिए। सरकार को चाहिए कि व्यावसायिक शिक्षा को सही रूप में स्थापित करने के लिए इनके लिए नियमित शिक्षक की व्यवस्था करें जो अपने कार्य के प्रति जागरूक हों, तथा पूर्ण रूप से अपने ट्रेड के प्रति प्रशिक्षित हों जिससे वह विद्यार्थियों की अधिक से अधिक ज्ञान देकर शिक्षित बना सके।

जनपद में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति छात्र अभी पूर्ण रूप से जागरूक नहीं हो पाया हैं क्योंकि इसकी शिक्षा अभी भी सीमित विद्यालयों में दी जा रही है। जिन विद्यालयों में ये ट्रेड्स चल रहे हैं या तो उन ट्रेडों के प्रति छात्र जागरूक नहीं है या उन विद्यालय में वह सभी ट्रेडस नहीं हैं जिनमें कि छात्र रूचि रखता हैं क्योंकि हर मनुष्य की रूचि-भिन्न-भिन्न होती है। अगर विद्यालय में ट्रेड कोई चल रहा है तो छात्र अनिच्छा से उस ट्रेडस को लेता है जो कि उस विद्यालय में चल रहा हैं। जिन विद्यालयों में इस समय

व्यावसायिक शिक्षा के ट्रेड्स चल रहे हैं वहां अध्ययन कर रहे छात्र व्यावसायिक शिक्षा से बड़े प्रसन्न हैं क्योंकि उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ व्यवसायिक शिक्षा का भी अध्ययन करना पड़ रहा है। उससे एक नये विषय का ज्ञान प्राप्त होता है जो कि भविष्य में उनके पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वयं के व्यवसाय करने तथा स्वयं के पैरों पर खड़ा होने का अवसर प्रदान करती है। यह शिक्षा पढ़ाई के बाद स्वयं को तो रोजगार देती हैं वरन् अन्य को भी रोजगार देने में सक्षम हैं। इसके द्वारा स्वयं को एक उद्योग लगाने के लिए प्रोत्सहित करती है जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वह उस व्यवसाय को वृहत रूप में स्थापित कर सकता है नहीं तो कम से कम किसी के भी व्यवसाय में कार्य करने का अवसर प्रदान करती है।

जनपद में अधिकांश विद्यालय ग्रामीण अंचल में होने के कारण अधिकांश अभिभावक अपने पाल्यों को इण्टर कक्षा तक पढ़ाने के बाद उन्हें किसी नौकरी अथवा व्यवसाय में लगाने हेतु वाध्य देखे गये है ग्रामीण क्षेत्र में डिग्री कक्षाओं तथा उच्च शिक्षा का न होना इसका प्रमुख कारण है। सभी अभिभावक अपने पाल्यों को दूसरे नगर के विद्यालय में उच्च शिक्षा ग्रहण करने नहीं भेज पाता और कम ही छात्र उच्च शिक्षा के लिए नगरीय विद्यालय में जा पाते हैं। अगर जाते भी हैं तो वह शिक्षा के साथ-साथ कोई रोजगार की तलाश में भी रहते है।

अतः हम कह सकते हैं कि अधिकांश समुदाय के लोग चाहते हैं कि सरकार द्वारा चलायी गयी व्यावसायिक शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है क्योंकि इसकी सार्थकता एवं लाभ इसके अध्ययन से स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

———

व्यवसायिक शिक्षा सर्वेक्षण का निष्कर्ष

सम्पूर्ण सर्वेक्षण के आधार पर हम कह सकते हैं कि सरकार द्वारा चलायी गयी व्यावसायिक शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों के लिए वरदान सिद्ध होगी तथा इसकी सार्थकता एवं लाभ स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है।

जनपद में ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों की संख्या बहुत अधिक नगरीय विद्यालयों की संख्या बहुत ही कम है जैसा कि जनपद के मानचित्र में शिक्षण संस्थाओं के बारे में लिखा हुआ है, नगरीय विद्यालयों को विकास खण्डवार गिनाया जा सकता हैं।

क्र० सं० विकासखण्डवार	विद्यालयों की संख्या
1. पौड़ी	08
2. कोट	10
3. खिर्सू	16
4. पावौ	11
5. कल्जीखाल	11
6. थलीसैंण	14
7. दुगड्डा	11
8. यमकेश्वर	11
1. द्वारीखाल (ढांगू)	13
10. लैंसडाउन	12
11. ऐकेश्वर	14
12. पोखड़ा	10
13. रिखणीखाल	10
14. वीरौंखाल	22
15. नैनीडांडा	12
योग ग्रामीण	18
योग नगरीय	
कुल योग	203

जनपद में विकास खण्डवार माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या–203 है। जनपदीय सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात होता है कि जनपद में वर्तमान समय में रा. इ. का. की संख्या–68 रा० कन्या इण्टर कालेज 06 जनता इ० कालेज 47 एवं जनता कन्या इ० कालेज की संख्या–01 है। कन्या विद्यालय की संख्या बहुत ही कम है उनमें कन्याओं से सम्बन्धित ट्रेड खाद्य संरक्षण पाकशास्त्र, परिधान रचना एवं सज्जा धुलाई, रंगाई, नर्सरी शिक्षक प्रशिक्षण एवं शिशु प्रबन्ध, पुस्तकालय विज्ञान, फल संरक्षण आदि ट्रेडों की व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए साथ ही विज्ञान वर्ग छात्राओं को फोटोग्राफी, तथा रेडियों टेलीविजन तकनीकी आदि का भी व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इन विद्यालयों को पर्याप्त उपकरण आदि भीं दिया जाना चाहिए तथा साथ ही इन ट्रेडों को प्रारम्भ करने से पहले भवन इत्यादि की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त सभी बालक विद्यालयों में भी सभी ट्रेडजनपद की पर्वतीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए खोले जाय इसमें मधुमक्खी, पालन, डेरी प्रौद्योगिकी, फसल सुरक्षा प्रौद्योगिकी, पौधशाला, बीजोउत्पादन प्रौद्योगिकी, रेशमकीट पालन, फल संरक्षण प्रौद्योगिकी एवं भूमि संरक्षण, बुनाई तकनीकी इत्यादि प्रमुख हैं ये सभी ट्रेड ग्रामीण विद्यालयों में खोले जाय क्योंकि जनपद का अधिकांश भाग पर्वतीय है और कृषि को भी बढ़ाया जा सकता है। ये सभी ट्रेड संसाधन पर आधारित हैं इन सभी के प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग हुआ है साथ ही नगरीय विद्यालयों में फोटोग्राफी, रेडियों एवं टेलीविजन, तकनीकी आटोमोबाइल, एकाउटेन्सी एवं अंकेक्षण, बैंकिग, आशुलिपि टंकण, सहकारिता, टंकण, पुस्तकालय विज्ञान, टैक्सटाइल डिजाइन, बुनियादी स्वास्थ्य कार्मिक (पुरुष) इत्यादि ट्रेडों के पाठ्यक्रम प्रारम्भ होने चाहिए।

जनपद में सभी विद्यालयों में व्यावसायिक पाठयक्रम एक साथ प्रारम्भ नहीं हो सकते हैं क्योंकि पाठ्यक्रम को प्रारम्भ करने के लिए धन का अत्यधिक महत्वपूर्ण हाथ है। फिर प्रत्येक विकास खण्ड के दो-तीन विद्यालयों में अनिवार्य रूप से व्यावसायिक शिक्षा के पाठयक्रम प्रारम्भ किये जाने चाहिए क्योकि यह जनपद अत्यधिक फैला हुआ है और अभी ग्रामीण तथा शहर से अत्यधिक दूर के विद्यालयों के छात्रों को यह मालूम भी नहीं है कि व्यावसायिक शिक्षा भी कोई शिक्षा है। मात्र शहरी क्षेत्र में अभिभावक तथा व्यावसायिक शिक्षा का अर्थ समझ पाये हैं, उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावक में थोड़ी बहुत रूचि दिखती हैं। सर्वेक्षण के आधार पर यह भी कहना अनिवार्य है कि नगर के बीच स्थित विद्यालयों में बहुत कम छात्र अथवा उनके अभिभावक इस शिक्षा में रूचि रखते देखे गये और वे यह भी समझते है कि इन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अपने व्यवसाय के लिए गांव में नहीं जायेंगे और शहरी क्षेत्र में स्थित व्यवसायों के साथ प्रतिस्पर्धा में वे टिक नहीं पायेंगे। अतः सरकार का दायित्व बन जाता है कि वे नगर में स्थित विद्यालयों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों को इस व्यावसायिक शिक्षा हेतु प्राथमिकता देने का प्रयास करें।

अत: इस सर्वेक्षण के आधार के अनुसार कहा जा सकताहै कि इस जनपद में व्यावसायिक शिक्षा हेतु चुने गये माध्यमिक विद्यालयों से प्रशिक्षित छात्रों के लिए रोजगार का सुनहरा भविष्य इस जनपद में स्पष्ट है।

वर्तमान समय में विद्यालयों के प्रधानाचार्यो के द्वारा चुने गये ट्रेड्स इस बात की पुष्टि करते हैं कि उस क्षेत्र विशेष में विद्यार्थियों की रूचि के साथ-साथ उन्हें स्वरोजगार के सुअवसर भी प्राप्त होने सुनिश्चित है। जिनमें प्रमुख ट्रेड हैं एकाउन्टेसी, फोटोग्राफी, रेडियों, टी० वी०, बुनाई तकनीकी, आटोमोबाइल, नर्सरी शिक्षक प्रशिक्षक एवं शिशु प्रबन्ध बुनियादी, स्वास्थ्य क्रमी, टंकण, आशुलिपिक, टंकण, बैंकिग, परिधानरचना एवं सज्जा, पुस्तकालय विज्ञान इत्यादि जो कि जनपद के लिये अति महत्वपूर्ण ट्रेड हैं।

जनपद में व्यवसायिक शिक्षा की सफलता के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता है क्योंकि इसे चलाने के लिए जनपद में पर्याप्त धन तथा उपकरण की आवश्यकता है साथ ही सर्वप्रथम भवन की समस्या है क्योंकि यहाँ पर औपचारिक शिक्षा के संचालन के लिए भी विद्यालयों में पर्याप्त भवन नहीं है जिनमें की नियमित शिक्षा दी जा सके साथ ही व्यावसायिक शिक्षा की सफलता के लिए प्रशिक्षित स्टाफ की भी अति आवश्यकता है, जो कि अपनी योग्यता तथा अनुभव के आधार पर कालेज के छात्रों की उस ट्रेड व्यवसाय के प्रति उत्तरदायित्व समझकर अध्यापन करेगा, साथ ही पर्याप्त मात्रा में धन की आवश्यकता होती जिसका भवन उपकरण साज सज्जा-इत्यादि की व्यवस्था की जा सके।

सर्वेक्षण आख्या का सार

जनपदीय सर्वेक्षण आख्या से जनपद के सभी विभागों की प्रगति एवं क्रियाकलापों का उल्लेख सम्भव हो पाया है जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँच पाते हैं कि जनपद में किस विकास खण्ड में कौन-सा व्यवसाय किया जा सकता है तथा छात्रों को उस व्यवसाय के प्रति जागरुक बनाया जाय जिससे वह अपने स्वयं के पावों पर खड़ा हो सके तथा स्वयं रोजगार करके स्वावलम्बी हो सके तथा पढ़ाई के साथ-साथ व्यवसाय के प्रति उसमें जागरूकता उत्पन्न हो सके।

अन्वेषकों ने जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के भ्रमण के मध्य उस क्षेत्र के प्रगतिशील कृषकों, उद्यानपतियों, व्यावसायियों तथा विशेषज्ञों से व्यावसायिक शिक्षा की उपादेयता एवं जनपद के विकास में उसकी भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त की, जनपद के उद्योगों एवं व्यवसायों का कार्य देखने वाले महाप्रबन्धक औद्योगिक संस्थान कोटद्वार श्री गर्ग का विचार है कि जनपद की भौगोलिक पृष्ठ भूमि में यहाँ वायरिंग, स्टील फर्नीचर, दियासलाई निर्माण, प्लम्बरिंग एवं कम्पनी सेक्रेटिरियल प्रैक्टिस ट्रेडों को भी खोला जाना चाहिए। उ० प्र० सड़क परिवहन निगम कार्यशाला कोटद्वार के फोरमैन श्री सूर्य नारायण चतुर्वेदी ने अपने विचार अत्यन्त स्पष्ट रूप से देते हुए कहा कि जो भी व्यावसायिक शिक्षा जिस भी संस्थान से दी जाय वह स्वागत योग्य हो अधकचरा ज्ञान देकर छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं होनी चाहिए। अमर ज्योति पेन्सिल फैक्ट्री के व्यवस्थापक की मजबूरी यह है कि वन निगम से उनके प्रतिष्ठान को पर्याप्त मात्रा में लकड़ी उपलब्ध नहीं होती है जिससे उनका प्रतिष्ठान ह्रासोन्मुखी है। किसानों की आम धारणा है कि हर वर्ष सैकड़ों परिवार उत्पादन की कमी के कारण गांव के गांव बंजर हो रहे हैं, उद्योगपति गमनागमन की कठिनाई की मार से पीड़ित पाये गये, पशुपालकों को चारागाह की कमी खटकती दिखाई दी, उद्योग, बिजली की निरन्तर आपूर्ति के अभाव के चपेट से परेशान बताये गये।

NIEPA DC
D07828

LIBRARY & DOCUMENTATION CEN
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-78
DOC, No ....
Date ....27-12-...